प्रलयक परात

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

प्रलयक परात

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5526-191-5

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2021

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

प्रलयक परात

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

विश्वभरिमे पसरल असंख्य
कोरोना पीड़ित लोकनिकेँ



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६९ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध),
३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह)
५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध)
७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)
११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

In English:-
1.The Lost House (Collection of short stories)
2.Life is an art

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ किनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

आभार

पूर्वमे प्रकाशित हमर पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि । एहि प्रसंगमे प्रोफेसर(डाक्टर) श्री भीमनाथ झा, प्रोफेसर(डाक्टर) इन्द्रकांत झा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगामे मैथिली विभागमे प्राध्यापक प्रोफेसर(डाक्टर) रमण झा, आ डाक्टर कीर्तिनाथ झा विशेष रूपसँ उल्लेखनीय छथि। आओर अनेको विद्वान पाठक लोकनि समय-समयपर हमर पुस्तकसभ पढ़ि कए अपन मंतव्य दए हमरा उत्साहित करैत रहलाह अछि । हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

15.08.2021

प्रलयक परात

1

गोपीकेँ कौटिल्यनगरसँ बिदा होइत कालक घटनाक्रम एकाएक ओकर आँखिक सामने नाचि गेलैक । ओहि राति गोपी आ मोहित रातुक भोजनक बाद सड़कपर टहलि रहल छल। कनीके आगू बढ़ल छल कि लटगेनाक दोकानपर चुट्टी जकाँ लोक देखेलैक। सभक हाथमे झोरा । सभ बेसी सँ बेसी सामान किनबाक हेतु व्यग्र । दोकानदार घर वापस जेबाक तैयारीमे छल । एकाएक एतेक ग्राहककेँ जमा देखि ओकरा किछु फुरेबे नहि करैक। ओ सोचि रहल छल- "आखिर एना किएक भेलैक? कनीके काल पहिने धरि एतए केओ नहि छल। तेँ आन दिनक अपेक्षा आइ कनी पहिने दोकान बंद करबाक चेष्टामे छलहुँ।" आखिर ओ सामने ठाढ़ युवककेँ पुछलकैक-

"की भेलैक? एतेक लोक एकाएक किएक आबि गेलैक?"

"सएह कहू। अहाँकेँ किछु पता नहि अछि?"

"हमरा के कहत? हम तँ दोकान बंद करए जा रहल छलहुँ कि एकाएक लोकसभ जमा होइत गेल ।"

“कहाँदनि बहुत खतरनाक विमारी फैल रहल छैक । काल्हिसँ सभकिछु बंद भए जेतैक। तेँ लोकसभ दोकानपर जरूरी समान किनबाक हेतु दौड़ल अछि ।”

“मुदा एतेक गोटेकेँ असगरे हम कोना सम्हारि सकैत छी?”

“कोनो बात नहि। हमसभ अहाँकेँ मदति करब ।”

पाछूसँ लोकसभ बाजल । दोकानदार अपन टीभी खोललक। ओहिमे ओएह समाचारसभ आबि रहल छल । आब ओ आश्वस्त छल जे जरूर कोनो बिमारी तेजीसँ पसरि रहल अछि।

“तखन की कएल जाए? जान कोना बँचाओल जाए?”-से सभ सोचैत दोकानदार चिंतामे पड़ि गेल । ओकरा थकमकाएल देखि ग्राहकसभ हल्ला करए लगलैक ।

“बात की छैक । अहाँ एना सुन्न भेल ठाढ़ किएक छी?”

“किछु नहि फुरा रहल अछि? "

“बात नहि बनाउ ।जल्दी, जल्दी समान दैत चलू । हमहुसभ मदति करब ।”

“एहनो भेलैक अछि? जे-से कोना दोकानमे आओत? जखन बिमारी फैलि गेल छैक,तखन बँचाओ करब तँ जरूरी अछि । अहाँसभ अखन जाउ,काल्हि भोरे पता करब। जे सरकार कहतैक,से कएल जेतैक ।”

“बेसी कबाइत नहि पढ़ू । काल्हिसँ सभटा दोकान बंद रहतैक । केओ कतहु नहि जा सकत। बस, ट्रेन, टैक्सी, रिक्सा सभ बंद ।”

"एतेक सामान तँ दोकानमे नहि अछि जे सभकेँ सभकिछु भेटि जेतनि।"

"जतबा सामान अछि से देने जाउ । तकरबाद देखल जेतैक।"

दोकानदारकेँ ओकरसभक बात मानि लेबाक अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि रहैक । आखिर देखिते-देखिते दोकानक एक-एकटा सामान बिका गेलैक ।

दोकानपर भीड़केँ देखि हमरो कान ठाढ़ भेल । घरसँ बाहर निकललहुँ । सामनेबला पड़ोसी देखेलाह । हुनका पुछलिअनि-

"केमहर जा रहल छी? "

"दोकान दिस"

थोड़बे कालमे किछु आओरगोटे देखाएल । ओकरोसभकेँ पुछलिऐक-"केमहर जा रहल छी? "

सभ एतबे कहए-"दोकान दिस ।" आखिर हमहु ओमहरे बिदा भेलहुँ । भेल जे स्वयं जा कए देखिऐक जे बात की छैक? जखन हम दोकानपर पहुँचलहुँ तँ लोकसभ वापस भए रहल छल। दोकान खाली भए चुकल छल । ओतए पहुँचतहि हम देखैत छी जे दोकानदार अपन कुर्सीपर अकड़ल छल। किछु बाजि नहि रहल छल । जोर-जोरसँ साँस लए रहल छल । हमरा भेल जे बहुत थाकि गेल अछि । तेँ सुस्ता रहल अछि । मुदा जखन ओही रूपमे पाँच मिनट धरि रहि गेल, तखन हमरा चिंता भेल । हम ओकर देहकेँ हिलओलिऐक। तथापि ओ किछु प्रतिक्रिया नहि केलक । हमरा

बूझा गेल जे ई होसमे नहि अछि । हम जोरसँ चिकरलहुँ –"दौड़ैत जाउ!दौड़ैत जाउ!" लगमे दबाइक दोकान रहैक । संयोगसँ दबाइ दोकानबला ओतहि छल । ओ दौड़ल । ओकर पाछा लागल सड़कपरसँ कैकगोटे दौड़ल ।

"ई तँ बेहोस अछि ।"-दबाइ दोकानबला बाजल ।

"किछु करहक ने ।"

"एकर हालत ठीक नहि बुझाइत अछि ।"

एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ लोक बजैत रहल । दबाइ दोकानबला अपन दोकानसँ दबाइ आनि ओकरा देलकैक । दबाइ खाइते ओकर हालतमे सुधार होबए लगलैक। ओ आँखि खोललक। किछु-किछु बजबो कएल। मुदा रहए परेसान । केओ ओकरा पानि आनि कए देलकैक । केओ माथपरहक पसीना पोछि देलकैक। दोकानदारकैं जेना भक टुटलैक । ओ पुछैत अछि -

"एतेकगोटे फेर किएक आबि गेल?"

"तोहर मोन खराब भए गेल छलह । हमही आबाज देलिऐक। जे जतए छल, ओतहिसँ दौड़ि गेल ।"

दोकानदार हमर बात सुनि कए आश्चर्यचकित रहए । जेना-तेना ओ दोकान बंद केलक । मुदा ओ असगर जेबाक स्थितिमे अखनो नहि बुझाइत छल । लोकसभ ओकरा कारसँ घर पहुँचा देलकैक ।

तकर बाद हमहु घर वापस बिदा भेलहुँ । रस्तेपर गोपी आ मोहित देखाएल । ओ सभ हमरे कारखानामे काज करैत छल।

ओसभ बहुत चिंतित बुझाइत छल । ओहोसभ अपन-अपन डेरा खाली कए परिवारक संगे गाम दिस बिदा भए गेल छल ।

2

दोसर दिन हम भोरे उठि गेल रही । उठितहि रातिक दोकान लगक दृश्य मोन पड़ि गेल । चिंता होबए लागल जे आखिर ई महामारी आगू कोन रस्ता धरत? एहन हालतमे हमसभ कतेक काल धरि सुरक्षित छी?फेर मोनमे भेल जे किछु तँ करबाक चाही जाहिसँ सुरक्षित रहि सकी । जान बँचबए लेल लोक की नहि करैत अछि? मुदा अपना बसमे छैहे की?जखन सौंसे दुनिआ उलटन भए जेतैक तखन हमही असगर जीबिए कए की करब? ई कोनो अपने देशक बात नहि छलैक । अमेरिका,युरोपक हालत तँ आओर खराब चलि रहल छलैक । कहाँदनि अपन देशक हालत ओकरासभसँ बेहतर छैक। अपना देशमे अखनहुँ देहातक लोकसभ बाँचल अछि ।

इएहसभ बात सोचैत भोरुका हवा लेबाक हेतु हम मकानक छतपर चलि गेलहुँ । हमरा घरक छतसँ जीटी रोड ओहिना देखाइत छैक । छतपर चढ़िते सामने सड़कपर लोकक हुजुमकेँ देखैत छी । केओ चारिगोटे,केओ पाँच गोटे,केओ असगरे आगू बढ़ल जा रहल अछि । किछुगोटे लोहछि कए सड़कक कातमे बैसि जाइत अछि। संगमे चलि रहल छोट नेनासभ सुखा-सुखा कए काँट भए गेल

अछि । ताबतेमे किछु समाजसेवीसभ पानिक टंकी लए कए सड़कपर टाहि मारैत छथि-

"जकरा पानि पिबाक होअए से एमहर चलि आउ ।"

किछु समाजसेवीसभ पाछू-पाछू भोजन सामग्री लेने घुमि रहल छथि । मुदा लोकक अपेक्षा भोजन सामग्री कम पड़ि जाइत अछि । लोकसभ भोजन सामग्री लुटि लैत अछि। ककरो एकटा टुकरी तँ ककरो किछु नहि भेटैत छैक। समाजसेवीसभ भोजन सामग्री सड़कपर फेकि कारमे भागि जाइत छथि । लगैत अछि जेना मनुक्ख साक्षात राक्षस भए गेल अछि। जे ने कराबए भूख । किछुगोटेकेँ भोजनक कनिकोटा टुकरी नहि भेटि सकलनि । ओ सभ पानिक टंकी लग चलि जाइत छथि। जेना-तेना कए थोड़-बहुत पानिक जोगार करैत छथि। फेर कातमे जा कए चुरुकसँ पानि पिबैत छथि ।

ताबतेमे एकटा बुढ़िआ एकटा नान्हिटा नेनोक संगे सड़कपर कलपैत घुमि रहल देखाइत अछि। ओ ज्वरसँ पीड़ित अछि । तथापि अपन नेनाक भोजनक ओरिआन करबाक हेतु परेसान अछि। कैकबेर सड़कपर बँटि रहल भोजन सामग्रीसँ लादल ट्रकक लगपास पहुँचैत अछि कि पाछूसँ लोकक हुजुम आबि जाइत छैक,धक्का मारैत छैक आ ओ पाछू भए जाइत अछि । एहने प्रयास करैत एक बेर ओ सड़कपर खसि पड़ैत अछि । पाछूसँ आबि रहल भीड़ ओकरा पिसैत आगू बढ़ि जाइत अछि। थोड़बे कालमे ओ निष्प्राण भए सड़कपर पड़ल अछि । ओकरा बगलमे ओकर कोरासँ खसल नेना बैसल छैक।

लोकक हुजुम आब नहि देखाइत अछि । माहौल खराब होइत देखि लोकसभ यत्र-तत्र खसकल । सड़क खाली भए गेल छल । भोजन सामग्री बाँटि रहल समाजसेवीसभ कात भए गेलाह। ताबतेमे केओ पुलिसकेँ फोन कए दैत अछि । थोड़े कालक बाद पुलिसक सायरन सुनाइत छैक । दनादन कैकटा पुलिसक जीप घटनास्थलक लगपासमे ठाढ़ देखाइत अछि ।

“ई के अछि? ई के अछि?”

सभ एक-दोसरसँ इएह प्रश्न करैत सुनाइत अछि । मुदा केओ ओहि बृद्धाक परिचय नहि दए पबैत अछि । पुलिससभ आपसमे किछु चर्च करैत रहैत अछि । मुदा केओ ओहि लहासकेँ नहि उठबैत अछि । थोड़बे कालक बाद किछु आओर पुलिसक जीप ओतए पहुँचैत अछि । पुलिससभ दनादन ओहि जीपसभसँ उतरैत अछि । ई पुलिससभ लगीचक दोसर थानाक छल । दुनू थानाक पुलिसमे ओहि घटनाक अधिकार क्षेत्र लए कए विवाद होइत अछि। अंततः मामिला उच्च अधिकारी लग जाइत छनि । ओसभ पहिल पुलिस दलकेँ बहुत फज्झति करैत छथि । तकरबाद ओ सभ लहासकेँ उठा कए रोगीवाहनमे रखैत अछि । ओकर बगलमे बैसल,निरंतर कानि रहल नेनाकेँ सेहो सड़कपर सँ उठा लैत अछि। दोसर थानाक पुलिससभ बहुत खुस अछि जे ओकरासभक जान बाँचि गेलैक ।

थोड़े कालक बाद ओहिठाम किछु नहि रहि जाइत अछि। घटनास्थलपर बनाओल गेल निसानटा रहि जाइत अछि । हम अपन मकानक छतसँ एहि हृदय विदारक घटनासभकेँ देखैत रहि

जाइत छी । सोचने रही जे कनी-मनी ओतहि टहलिओ लेब । मुदा जे देखलहुँ तकरबाद तँ पैर आगू बढ़िए नहि रहल अछि । नीचाँसँ ओ आबाज दैत छथि-

"चाह बनि गेल ।"

हम छतसँ नीचाँ दिस उतरैत छी । लागल जेना माथ घुमि रहल अछि । तथापि रेलिंग पकड़ि कए जेना-तेना उतरि जाइत छी।

हम सोफापर बैसि जाइत छी । ओहो हमरा बगलमे बैसि जाइत छथि । दुनूगोटे चाहक घोंट अंदर करैत छी । हमरा उदास देखि ओ टोकैत छथि-

"की बात? भोरे-भोर एतेक उदास किएक छी?"

ओ अपन प्रश्न लए फेर ठाढ़ि बुझाइत छथि । हुनकर जिज्ञासा देखि हम किछु बजबाक प्रयास करैत छी । मुदा बाजल नहि होइत अछि । श्रीमतीजी हमर मनोदशा देखि बहुत चिंतित भए जाइत छथि ।

"बात की छैक? एतेक भोरे की भेल? "

"किछु नहि । जीटी रोडपर बहुत दर्दनाक दृश्य देखबामे आएल ।"

"से की?"

"की कहू? लगैत अछि तालाबंदीसँ परेसान प्रवासी मजदूरसभ गाम वापस भागि रहल अछि ।"

"मुदा एहन हालतमे ओ सभ जाएत कोना?"

"सएह तँ बात छैक। सौंसे सड़कपर लोकक मेला लागल अछि । भुखल-पिआसल, नेना, युवक, बृद्धसभ अपन-अपन डेरा छोड़ि सड़कपर आबि गेल अछि । बहुत हृदय विदारक दृश्य देखाएल । तेँ गुम्म पड़ि गेल छी ।"

हमर चिंताकेँ अखबारक समाचार आओर बढ़ा देलक । ओकर प्रथमे पृष्ठपर छपल समाचार पढ़ैत छी । लिखैत अछि- "सभटा कल-कारखाना बंद भए गेल छलैक । प्रवासी मजदूरसभ लगमे किछु नहि रहि गेल रहैक । जे किछु रहैक से दू-चारिदिनमे खर्चभए गेलैक । आब की खाएत,कतए रहत? धिआ-पुताक जान कोना बाँचत? मकान मालिकसभ मासिक किराया नहि देबाक कारण किरायेदारसभसँ मकान खाली करबा रहल छल । सौंसे सहर जेना महाकालक नग्ननृत्य भए रहल छल । ओना सरकार वारंबार बुझेबाक प्रयास करैक,ध्वनिप्रसारकसँ मजदूरसभक बस्तीमे घोषणा कएल जाइक –

"सरकार सभटा ओरिआन करत । थोड़बे दिनक बात छैक। ककरो सहर छोड़बाक काज नहि छैक । जँ ककरो कोनो परेसानी होइक तँ फलना-फलना दूरभाषपर संपर्क करए। तुरंत समाधान होएत ।"

मुदा ई सभ बात हवेमे रहैक । लोकसभ ओहि नंबरपर फोन करैत-करैत ताकि गेल । ककरो ओ नंबर नहि लगैक । भुखल,पिआसल कतेक दिन रहितए ?जखन मजदूरसभक बस्तीमे कोरोनाक प्रकोप बढ़ए लागल तँ लोकसभ धैर्य टुटि गेलैक ।

नित्य हजारोंक संख्यामे लोकसभ गाम वापस बिदा भेल। जकरा जे सबारी भेटलैक,सएह पकड़ि लेलक । जकरा किछु नहि भेटलैक,से पएरे बिदा भेल। रेल,बस,सभ बंद रहैक। लोकक एकठामसँ दोसर ठाम जाएब वर्जित भए गेल रहैक । जकरा जएह भेटलैक,जेना भेलैक,जे संग भेलैक,सभ सहर छोड़ि देलक ।

प्रवासीसभक हुजुम सहरसँ घरमुँहा भेल तँ ई करवनहुँ नहि सोचाएल रहैक जे गाम वापस गेनाइ एतेक कठिन हेतैक। ककरो किछु नहि बूझल रहैक जे ओकर एहि यात्राक अंत कतए होएत?गाम पहुँचि सकत वा रस्तेमे रहि जाएत?"

3

सड़कपर फेर बहुत हल्ला सुनाइत अछि । जल्दी- जल्दी चाह खतम कए दुनूगोटे फेर छतपर आबि जाइत छी। सामनेमे जीटी रोडपर लोकक अथाह समुद्र देखा रहल अछि। आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ। थोड़बेकाल पहिने सड़क खाली भए गेल छल । पुलिससभ बुढ़िआक लहासकेँ मोसकिलसँ उठओने छल । तकरबाद हम नीँचा गेलहुँ,चाह पिलहुँ आ वापस छतपर आबि गेल छी । एतबे कालमे की भेलैक जे सड़कपर एहन दृश्य उत्पन्न भए गेल अछि?

सड़कपर जमा भेल अथाह मानव समुद्रमे कोरोना नियमक के परबाह करत? ने ककरो मास्क छैक ,ने कोनो आपसी दूरीक हिसाब छैक । सभहक नाक-कान एक-दोसरसँ सटि रहल छैक । ओहीमे केओ उकासी कए रहल अछि,केओ खखार फेकि रहल अछि,तँ ककरो बोखार लागल छैक । के कहत जे ककरा कोरोना

छैक आ कें बाँचल अछि? जँ केओ बाँचलो अछि तँ से कतेक काल धरि बाँचल रहत? एहनमे तँ जकरा नहिओ हेतैक तकरो कोरोना भए जेतैक । के ककरा सम्हारत? के रोकि सकत कोरोनाक प्रसार? एहिठाम तँ सभटा कानून निरर्थक अछि। पुलिससभ डंडा हाथमे धेने कात भए गेल अछि । कतेक के मारतैक? ककरा-ककरा रोकतैक? केओ ककरो सुनबाक हेतु तैयार नहि अछि। इएहसभ सोचि रहल छलहुँ कि एतबेमे मोहितक फोन आएल।

“किछु पता लागल?”

“की?”

“हमर पड़ोसीक माएकें जीटी रोडपर लोकसभ पिचि देलकैक। ओकर नेना असगर थानामे पड़ल छैक।”

“से किएक?”

“की जाने गेलिऐक? केओ हल्ला कए देलकैक जे गाम दिस मङनीमे बस जा रहल छैक । रातिएमे पूरा मोहल्लाक लोकसभ अंतरराज्यीय बस टर्मिनल पहुँचि गेल । हमहुसभ ओही लालचमे पड़ि गेलहुँ । भेल जे एहन हालतमे सहरमे कोना रहि सकब? गामे चली । भने बसक जोगारो भए रहल छैक । ओतए पहुँचि तँ गेलहुँ,मुदा आगूक रस्ता पुलिस बंद कए देने रहैक । अंतरराज्यीय बस टर्मिनलकें चारूकातसँ घेरि लेने रहैक । मुदा लोकसभ मानबाक हेतु तैयार नहि रहैक । पुलिसकें धकिअबैत अंतरराज्यीय बस टर्मिनल दिस बढ़ए लगलैक । लोकसभ नियंत्रणसँ बाहर भए गेल रहैक। पुलिस लाठी चलबए लागल । सड़कपर जमा भेल

लोकसभ जान बँचा कए जहाँ-तहाँ भागल । एहन हालतमे के कतए गेल तकर कोनो ठेकान नहि रहल ।”

“तू कतएसँ बाजि रहल छह? ”

“हम तँ सीमापारक अस्पतालमे छी ।”

“आ तोहर परिवार?”

“कोनो पता नहि चलि रहल अछि?”

“से कहि ओ ठोह पारि कए कानए लागल?”

“हे भगवान्! ई की सुनि रहल छी? अपना भरि ओकरा बौसबाक प्रयास करैत छी । सहानुभूतिक स्वर सुनि ओ आओर जोर-जोरसँ कानए लगैत अछि । ताबे अस्पतालक प्रहरीक आबाज सुनाइत अछि ।”

“अस्पतालमे एना हल्ला नहि करू । दोसर रोगीसभकेँ दिक्कत होइत छैक ।”

मोहित चुप भए गेल । कनी कालक बाद फेर हलो! हलो! सुनलिऐक । मोहितेक फोन छल ।

“गोपी... ”-एतबे बाजल ।

“गोपीकेँ की भेलैक?”

“दुनू बेकती एही अस्पतालमे बेहोस पड़ल अछि । केओ देखनाहर नहि छैक ।”

“से की?”

“सड़कपर पुलिसक लाठीसँ हमसभ घायल भए गेल रही । ओहने हालतमे हमरासभकेँ सीमासँ बाहर फेकि देल गेल । हमसभ

जेना-तेना सीमा पारक अस्पताल पहुँचलहुँ । ओतहि गोपी आ ओकर पत्नी सेहो ओहने हालतमे भेटल । तखन तँ होसमे रहैक । मुदा थोड़बे कालक बाद ओकर हालत गड़बड़ा गेलैक ।”

फोन कटि जाइत अछि । हम दुनूगोटे आपसमे बतिआइत छी । हुनका मोहित आ गोपीक समाचार विस्तारसँ कहैत छिअनि। सामनेक रस्तापर हल्ला बढ़िते जा रहल अछि। लगैत अछि जेना सभटा आफत आइए आबि जाएत। सड़क परहक दृश्य आओर नहि देखल जाइत अछि । दुनूगोटे नीचाँ आबि जाइत छी । मुदा मोन नहि लगैत अछि । समय बितेबाक हेतु अखबारक पन्ना उलटबैत छी ।

एक दिस कोरोनाक आक्रमण लोककेँ भयाक्रांत केने अछि। दोसर दिस लोकसभ सेहो कम समस्या नहि बनि गेल अछि । असलमे सभकेँ अपन जान-मालक चिंता परेसान केने छैक । जे संपन्न छथि,जिनका अपन घर छनि,आर्थिक संपन्नता छनि ओ तँ एहि तालाबंदीमे निचेन रहि सकैत छथि। ओना सत्य पुछी तँ हालत एहन अछि जे निचेन केओ साइते होअए । एकाएक सौंसे देश जेना जहल बनि गेल अछि। केओ कतहु ने जा सकैत अछि,ने केओ आबि सकैत अछि । चारूकात भयक वातावरण अछि । कतेकगोटे तँ घरमे बंद छलाह तथापि एहि बिमारीसँ बँचि नहि सकलाह । अस्पताल गेलाह से गेले रहि गेलाह । लहासो घर वापस नहि आएल । परिवारोक लोक अंतिम बेर मुँह नहि देखि सकलाह। लहास सोझे अंतिम निवासपर पहुँचाओल गेल । कैकबेर तँ ककरो

लहास कतहु पहुँचि गेल । एहि तरहक समाचारसँ अखबार भरल छल । समाचार पत्र आगू पढ़बाक साहस नहि होइत अछि ।

दुनू बेकती छतपर सँ नीँचा आबि जाइत छी । टेलीवीजनमे सीसीटीभी जोड़ल अछि । छतपर लागल कैमरासँ अखनहुँ सड़क परहक दृश्य देखाइत अछि ।

4

अस्पतालसँ दुपहिरआमे मोहित फेर फोन केलक । ओकर आबाज भारी लागि रहल छलैक । पुछबो केलिऐक-“एना किएक भए रहल छह?” ओ किछु स्पष्ट उत्तर नहि दए सकल । देबो की करितए? कौटिल्यनगरसँ बिना कोनो साधनकेँ गाम दिस भागएबला ओ कोनो असगर नहि छल । जखन कौटिल्यनगरमे काजक जोगार नहि रहलैक,मकान मालिककेँ किराया देबाक सामर्थ्य नहि रहलैक,भोजनक जोगारो मोसकिल भए गेलैक ,तखन की करितय? जखन जान जेबेक छलैक तँ किएक ने गामक रस्तेमे जाए? गाम वापस चलि गेल तँ किछु-ने-किछु जोगार हेबे करतैक। आखिर गाम-गामे थिक । ओतए कैक पुस्तसँ ओकर पुरखाक गुजर भेल छैक । ओ सभ कोन मुम्बई,दिल्ली गेलैक?

आब तँ मोहितोकेँ अफसोच होइत छलैक जे अनेरे कौटिल्यनगर आएल । ओ कौटिल्यनगर आबए चाहए नहि । मुदा गोपी ओकरा अपना संगे लए अनने रहैक। जखन कखनो गोपी गाम जाइत छल तँ ओकर हुलिए बदलल रहैत छलैक । एकदम नव-नव सर्ट-पैंट,हाथमे घड़ी,नया-नया जूता,आँखिमे करीकबा चश्मा । गाम भरिमे ओ चर्चाक विषय रहैत छल । ऊपरसँ एकबेर

तँ विदेशी मोबाइल फोन लए गेल छल । रंगीन टीभी घरक देबालमे सेहो लटका देने रहैक । ओहिमे तरह-तरहक कार्यक्रमसभ होइत रहैत छल । गाना-बजाना होइत रहैत छल । से सभ देखबाक हेतु गामभरिक लोक जमा भए जाइत छल । रहि-रहि कए आङनसँ चाहो बनि कए अबैत रहैत छलैक। ओकर ई रुतबा देखि कए मोहितो प्रभावित भेल छल आ एकबेर ओकरे संगे कौटिल्यनगर चलि गेल छल।

मोहितक देखादेखी लगपासक गामक कतेकोगोटे कौटिल्यनगर चलि गेलैक । सभकेँ कोनो-ने-कोनो काज भेटि गेलैक । केओ मकानक मिस्त्रीक काज करए लागल,केओ लोहार,केओ पेंटर ,कहक माने जे जकरामे हुनर रहैक से तेहने काज करए लागल। गोपी अपना भरि सभकेँ मदति करैक । बादमे तँ मोहितो कतेकोगोटेकेँ गामसँ अनलक आ कौटिल्यनगरमे कोनो-ने-कोनो काज धरा देलक । सभ एकठाम रहैत छल,बेर-कुबेर भेंट-घाँट होइत रहैत छलैक। मौका-कुमौका एक-दोसरकेँ मदति करैत छल । मुदा ई के जानैत छलैक जे कोरोनाक आक्रमण ओकरासभकेँ एना बरबाद कए देतैक?

मोहितक फोन अएलापर हमर जिज्ञासा बढ़ि गेल । कारण लगपासक भयावह दृश्य देखि रहल छलिऐक । टेलीवीजनसँ सेहो निरंतर तरह-तरहक समाचार अबिते रहैत छल । यद्यपि हमसभ अपन घरमे रही ,मुदा चारूकातक माहौल देखि विचलित भए जाएब स्वभाविक छल । हमर श्रीमतीजी सेहो लगेमे बैसि गेलथि।

फोनकेँ स्पीकर मोडमे राखि देलिऐक जाहिसँ हुनको सभकिछु सुनाइन ।

"हमसभ तँ रातिमे अपन-अपन घरमे सुतल रहिऐक । दूपहर रातिमे किछु युवकसभ घरे-घर गुमि रहल छलैक । सभकेँ सुतलसँ उठा-उठा कए कहि रहल छलैक-

भोरे बस अंतरराज्यीय बस टर्मिनल धरि जेतैक । ओहिठामसँ सीतापुरक बसक जोगार छैक । सरकार दिससँ एकदिनक हेतु ढील देल गेलैक अछि। कानो-कान ई समाचार चारूकात पसरि गेल । सभ अपन-अपन मोटा-चोटा बन्हलक। बच्चासभकेँ संग केलक आ भोरे-भोर सड़कपर लागल सरकारी बसमे बैसि गेल । जखन ओ सभ सड़कपर सरकारी बस लागल देखलकैक तँ बहुत आश्वस्त भेल । मोने-मोन ओहि युवकसभकेँ धन्यवाद देलक । बस सचमुचकेँ ओकरासभकेँ अंतरराज्यीय बस टर्मिनल लग पहुँचा देलकैक। सूर्योदय होइत-होइत सकड़ो बससँ लोकसभ ओतए पहुँचि गेल छल । पहुँचि तँ गेल मुदा आगूक कोनो ओरिआन नहि छलैक । लोकसभक भीड़ बढ़िते गेल । मुदा आगूक यात्राक जोगार नहि बुझाइक । सभ घंटो ओहिना सड़कपर प्रतीक्षा करैत रहि गेल । कोनो समाधान नहि भेटि रहल छलैक ।"

5

जखन दिनभरि कोनो ओरिआन नहि भेल,कोनो बस,रेल नहि चलल तँ बहुत रास यात्रीसभक धैर्य टुटि गेलैक। ओ सभ गुट बना-बना कए पैरे गाम दिस बिदा भेल । मुख्य सड़कपर तँ जहाँ-

तहाँ पुलिस तैनात छल । तैं ओ सभ रेलवे लाइनक काते-कात चलए लागल । एहि तरहें सेकड़ों यात्रीसभ रेलवे लाइनपर चलि रहल छल । कतेकोठाम रेलक ट्रैकक दुनूकात बहुत कम जगह खाली रहैत छलैक । तखन ओ सभ रेलक पटरीक बीचोबीच चलैत रहैत छल । मोहित,गोपी आ ओकर पत्नीक चोट बेसी नहि रहेक । प्रात भेने ओकरासभकेँ अस्पतालसँ छोड़ि देल गेलैक । ओहोसभ रेलक पटरीपर चलैत लोकसभक संग धए लेलक । लोकसभ आपसमे गप्प-सप्प करैत आगू बढ़ि रहल छल । किछु युवकसभ कानमे इअरफोन लगा मोबाइलसँ गाना सुनैत रहैत छल जाहिसँ ओकरा मोनो लगैक आ रस्तो कटि जाइक ।

कौटिल्यनगर मधुपुरक बीचमे गुमती लग आचानक एकटा मालगाड़ी आबि रहल छल । चारूकात अन्हार गुज्ज छल। ऊपर आकाशमे मेघ लागल छल । अन्हर से उठि गेल छल । एहनो हालतमे रेल लाइनपर चलि रहल यात्रीसभ जेना-तेना आगू बढ़ि रहल छल । जाबे-जाबे ओकरासभकेँ मालगाड़ी देखेलैक ताबे तँ बहुत देरी भए गेल छल । यात्रीसभ गुमतीक फाटककेँ टपबाक प्रयास केलक आ बगलमे खत्तामे जा कए खसि पड़ल । किछु यात्रीकेँ मालगाड़ी पिचैत आगू बढ़ि गेल । ओहिमे अधिकांश युवकसभ छल जे कानमे इअरफोन लगओने रेलवे लाइनपर चलि रहल छल । मालगाड़ी सीटीपर-सीटी दैत रहल,मुदा ओकरासभकेँ किछु नहि सुनेलैक । जकरासभकेँ सुनेबो केलकैक,तकरो बहुत किछु करबा जोकर स्थिति नहि रहि गेल रहैक । किछुगोटे गुमती लगक एकपेरिआ सड़कपर आँखि मुनि कए भागल। देखिते-देखिते

ओहिठामक परिदृश्य बदलि गेल रहैक । चारूकात हाहाकार मचि गेल छल। कतेको गोटेक क्षत-विक्षत देह रेलवे लाइनक कातमे पड़ल छल । करीब एकमाइल आगू जा कए मालगाड़ी ठाढ़ भए सकलैक । यद्यपि ओकर चालक तुरंते सावधान भए गेल रहए मुदा ओतेक वेगसँ चलि रहल मालगाड़ीकेँ एकाएक रोकलो तँ नहि जा सकैत छल । जे-से। एहि दुर्घटनामे जान बँचेबाक हेतु कौटिल्यनगरसँ भागि रहल कतेको लोकसभ रेलवे लाइनपर अपन जान गमा चुकल छलाह ।

संयोग एहन भेलैक जे मोहित गुमतीसँ दस हाथ फटकी रेलवे लाइनसँ कुदि गेल आ जेना-तेना नीँचा खधिआमे खसल। मुदा ओकर संगे चलि रहल ओकर पत्नीक कोनो पता नहि चललैक। जीबितो छलैक कि नहि सेहो केओ नहि जनैत छल। एहि दुर्घटनाक समाचार थोड़बे कालमे टेलीविजनपर प्रसारित होबए लगलैक । पुलिस,सरकारी अधिकारी,रेलवेक बचाओ दलक संगे घटना स्थलपर पहुँचए लगलाह । दुर्घटनाग्रस्त लोकसभकेँ अस्पताल पहुँचाओल गेल । मोहित आ ओकरा संगे आओर कैकगोटेकेँ खधिआसँ निकालल गेल। गुमती लगकक खत्तासँ कैकटा लहास निकलल । किछु जीवितो लोक भेटलथि । हुनकोसभकेँ अस्पताल पहुँचाओल गेल । परिस्थिति एतेक तेजीसँ खराब भए जाएत तकर केओ कल्पनो नहि केने होएत । मुदा से भेल ।

एहि दुर्घटनाक बाद मोहितक पत्नीक किछु पता नहि चललैक । संयोग एहन भेल रहैक जे मोहितकेँ मामुली चोट लागल रहैक । मुदा एहि दुर्घटनाक ओकरापर जबरदस्त मनोवैज्ञानिक

असर भेल रहैक । किछु बजले नहि होइक। जेना बौक भए गेलैक। ने अपन नाम कहैक,ने पता । अस्पतालक अधिकारीसभ परेसान भए गेलथि जे एहि व्यक्तिकेँ कतए पहुँचाएल जाए? संयोग एहन भेलैक जे घटनास्थलसँ कनीक फटकी ओकर मोबाइल एकटा चरबाहकेँ भेटलैक । ओ मोबाइल लए जहाँ गुमती दिस बढ़ल कि सरकारी गाड़ीमे जाइत अधिकारी ओकरा देखि लेलकैक। गाड़ीमे बैसल पुलिस दौड़ल आ ओकरासँ मोबाइल छिनि लेलकैक । ऊपरसँ चरबाहाकेँ दू-चारि चमेटा सेहो धए देलकैक । गाड़ीसभ आगा बढ़ि गेल । सरकारी गाड़ीमे सबार छलाह दरोगा साहेब । हुनके हाथमे मोबाइल आएल रहनि । ओ मोबाइलकेँ चलेबाक प्रयास केलनि । मोबाइलमे तुरंत घंटी होबए लागल ।मोबाइलमे घंटी गोपी केने छल । ओ कैकदिनसँ मोहितक जानकारी लेबाक प्रयास कए रहल छल। मुदा फोन लगबे नहि करैक ।आइ एहन संयोग भेलैक जे फोनक घंटी बाजि गेलैक ।

"अहाँ के बाजि रहल छी?"

"हम छी एहिठामक दरोगा?"

"मुदा ई फोन अहाँकेँ कोना भेटल?"

थोड़बे काल पहिने एकटा चरबाह हमरा देलक । ओकरा ई फोन दुर्घटना स्थलसँ कनीक फटकी भेटल रहैक ।"

"मुदा अहाँ के छी आ ई फोन किनकर छनि?"

"हम छी गोपी। ई फोन हमर संगी मोहितक छनि । हमसभ पैरे कौटिल्यनगरसँ रेलवे लाइन पकड़ि कए गाम बिदा भेल रही ।

रस्तामे हमसभ दुर्घटनाक सिकार भए गेलहुँ । तकरबाद की-केना भेल से किछु नहि कहि सकैत छी ।"

6

हम सोफापर भोरुका चाह पिबाक तैयारीमे रही । एतबेमे अखबार आबि गेल । अखबारक मुख्यपृष्ठेपर ओहि दुर्घटनाक वर्णन देल गेल छल । लोकसभ कौटिल्यनगरसँ जान बँचेबाक हेतु गाम दिस भागल छल । रस्तामे रेलक पटरीपर चलैत काल अचानक दुर्घटनाक सिकार भए गेल । कतेकोगोटेक जान चलि गेलैक। कतेकोगोटे घायल भए गेल। कैकटा परिवार एक-दोसरसँ फराक भए गेल । जे केओ बाँचलो अछि सेहो दुरुस्त नहि अछि । केओ शारीरिक रूपे परेसान छल तँ ककरो मनोवैज्ञानिक समस्या भए गेलैक । समाचार पत्र एहि तरहक समाचारसभसँ भरल छल।

रस्तामे कतहु कोनो दोकान,कोनो भोजनालय,कोनो मंदिर धरि नहि खुजल छल । सौंसे भम्ह पड़ि रहल छल । सड़कसभ पर हिंसक जानवरसभ निश्चिंत घुमि रहल छल । एहि समयमे एकटा फएदा जरूर देखा रहल छलैक । आसमान एकदम साफ भए गेल छलैक । रातिमे तारासभ चमकैत रहैत छल । हवामे एकटा अभूतपूर्व सुगंध लागि रहल छल । लगबे नहि करैत जे हमसभ ओही कौटिल्यनगरमे छी जतए रातिमे तारा नहि देखाइत छल,आकाश साँझेसँ धुँआ-धुँआ भए जाइत छल । सामान्य समयमे कौटिल्यनगरमे जामक ई हाल रहैत छल जे घरसँ निकलि गेलाक बाद गंतव्य धरि करवन पहुँचब तकर केओ अनुमान नहि

लगा सकैत छल । मुदा अखुनका समयमे स्वभाविकता नहि रहैक। ई तँ आपत्तिकालीन व्यवस्था छल जे कानून द्वारा जबरन लागू कएल जा रहल छल । काल्हि भेने जखने प्रतिवंध हटत,लोक ओहिना उच्छृंखल भए जाएत । सड़कपर ओहिना हुरदुंग होबए लागत । आकाशक निर्मलता पुनः बिला जाएत । मुदा उपाय की? ई तँ मानव निर्मित समस्यासभ थिक जाहिसँ सौंसे दुनिआ परेसान अछि । मुदा के ककरा बुझाओत?

कोरोनाक प्रहारसँ समस्त विश्व काँपि गेल अछि । सभ अपन-अपन प्राण बँचेबाक हेतु व्याकुल अछि । समाधान किछु फुरा नहि रहल छैक । संपन्न देश सभक हालत तँ आओर खराब भए गेल छैक । बुझितहुँ जे अपन देशमे ओतेक सुविधा नहि छैक मुदा अमेरिका,इंगलैंड,इटली,जर्मनी.फ्रांस -ओकरासभकेँ की नहि छैक? तथापि ओकरसभक अस्पतालक आगूमे लहास पटोटनि देने रहैत छैक । अस्पतालमे इलाजक व्यवस्था नहि रहि गेल छैक। एहन हालतमे अपना देशक तँ भगवाने मालिक ।

गोपीसँ फोनपर गप्प केलासँ ओतेक बात नहि फरिछाएल छल । कारण ओ बेसी नहि बाजि सकल छल । मुदा अखबार पढ़लासँ घटनाक विभीषिका बुझबामे आएल । होअए जे तुरंत घटनास्थल दिस बिदा भए जाइ । देखिऐक जे वस्तुतः की हाल छैक?हमर कारखानामे काज केनिहार बहुतरास कर्मचारीसभ ओहि दुर्घटनामे फँसि गेल छल । अखन धरि मात्र मोहित आ गोपीक समाचार पता लागल छल। मुदा समाचार जँ भेटिए जाएत तँ हम की कए लेबैक? हम तँ अपने घरमे बंद भेल छी । ने केओ आबि

सकैत अछि,ने केओ जा सकैत अछि । ककरो फोन आबि गेल तँ मोन लागि जाइत छल । मुदा फोनोमे लोक खाली कोरोना,कोरोना बतिआइत रहि जाइत अछि । लगैत अछि जेना लोकक अंतर्मनमे कोरोना बैसि गेल छैक । ककरोसँ गप्प करू,कोरोनाक चर्च होबए लगैत अछि । आइ ओकरा कोरोना भए गेलैक,काल्हि फलनाक जान चलि गेलैक । सभसँ जुलुम तँ नेनासभ कैं भेल छैक । नान्हि-नान्हिटा बच्चासभ घरमे बंद भेल अछि । ओ सभ पार्क नहि जा पबैत अछि,दोसर बच्चासभसँ भेंट दुर्लभ भए गेल छैक । पहिने नेनासभ कतेक प्रसन्न भए लगपासक नेनासभक संगे खेलाइत रहैत छल । केना दोस्तकैं देखिते उत्साहसँ भरि जाइत छल । मुदा आब? आब तँ घरे जहल बनि गेल अछि । की बच्चा,की जबान,की बूढ़ सभ डराएल अछि,अपन -अपन कोठरीमे बंद अछि ।

सरकार द्वारा तालाबंदीक घोषणा होइते देखिते-देखिते हमर कारखानामे उजाड़ भए गेल अछि । बाहरसँ एकटा पाँच कीलोक ताला लटकल अछि । लगपासक कारखानासभ सेहो बंद भए गेल अछि । एहनमे कर्मचारीसभ की करैत? सरकारी सहायताक आश्वासन जरूर देल जा रहल छलैक मुदा कागजेपर । कतहु किछु देखा नहि रहल छल । सरकारक दिससँ मुफ्त भोजनालय खोलल गेल छल । मुदा ओहिठामक भोजन मालो-जाल जोकर नहि छल । बाल्टीक-बाल्टी पानिमे जँ हाथ देबैक तँ दू-चारिटा दालि भेटि जाएत । तकरकारीक तँ बाते छोड़ू । थाकक-थाक सुखाएल-टटाएल सोहारी चौकीसभपर राखल छल । जे लूटि लिअए तकरे छल । नित्यप्रति इएह दृश्य देखाइत छल । एहनमे मजदूरसभ कौटिल्यनगरमे ककरा भरोसे रहैत? नेतासभ ओकरसभक कान फुकि देलकैक। सुरक्षित गाम पहुँचा देबाक आश्वासन देलकैक ।

मजदूरसभ नेतासभक चक्रव्यूहमे फँसि गेल। सभ इएह ले,ओएह ले गाम दिस भागल । गाममे कम सँ कम अपन घर छैक । किछु परिचित लोक छैक ।कोनो-ने-कोनो उपाय हेबे करतैक ।लोकसभ से सोचि-सोचि सहर छोड़ि देलक । कौटिल्यनगरसन सहर भम्ह पड़ए लागल ।

7

दुर्घटनाक तीन-चारि दिनक बादो मोहितकेँ पत्नीक कोनो समाचार नहि भेटबाक कारणसँ बहुत परेसान रहए । केओ किछु,केओ किछु कहि जाइक । सरकारी महकमाकेँ एते फुरसति कहाँ रहैक जे एहि मामिलाकेँ देखत । आखिर ओ हमरा फोन केलक ।फोनक घंटी बजिते हम चाह छोड़ि कए फोन सुनैत छी । ओमहरसँ मोहित बजैत अछि-

“हम फेर गामे दिस बिदा छी ।”

“आ संगे के सभ छह?”

“कैकटा अनठिआसभ छैक । सभ अपन-अपन गाम जा रहल अछि।”

“पत्नीक किछु पता चललह कि नहि?”

“अखन धरि किछु पता नहि अछि।”

“तँ ओकरा एहिना अधरमे छोड़ि कए चलि जेबहक?”

"किछु नहि बुझा रहल अछि । अपना भरि बहुत प्रयास केलिऐक । ककरा-ककरा ने नेहोरा केलिऐक । मुदा कोनो फएदा नहि भेल । आब की करी से अहीं कहू?"

"बात तँ सही कहि रहल छह? समय-साल एहन भए गेल छैक जे अपनो लोक काज नहि दए रहल छैक ।"

"बहुत बेकाल आबि गेल छैक । असगर एहिठाम कतेक दिन आ कतए रहि सकैत छी? तेँ आगू बढ़ैत छी । जँ किछु पता लागत तँ अवश्य सूचित करब।"

"ठीक छैक । संपर्कमे रहिअह ।"

आगू बढ़बासँ पहिने मोहित गोपीसँ संपर्क करबाक प्रयास केलक मुदा ओकर फोन नहि लगलैक । अंततः बहुत दुखी मोनसँ मोहित किछु अपरिचित यात्रीसभक संगे रेलवे लाइन पकड़ि कए आगू बढ़ि गेल ।

8

ओहि दिनका बाद हम कैक दिन धरि छतपर नहि गेलहुँ। सड़कपर जीवन रक्षा हेतु आतुर असंख्य मानव समुदायक ओहि दृश्यकेँ फेरसँ मोनमे उभरैत देखि सकबाक सामर्थ्य आब हमरामे नहि रहि गेल छल । समय एहनो निष्ठुर भए जाएत तकर केओ कल्पनो नहि केने छल? ककरा कहिऐक,की कहिऐक,की करी किछु फुरा नहि रहल छल । बाहरक दुनिआ बंद भए गेल छल। मोबाइल,टीभी, आ

समाचार पत्रेटा दुनिआसँ संपर्कक साधन रहि गेल छल । कतहु-कतहु तँ अखबारो बंद कए देल गल छल । यद्यपि सरकार वारंबार कहि रहल छल जे अखबारमे भाइरसक खतरा नहि छैक,मुदा डराएल लोकसभ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छल । जँ कोनो मोहल्लामे एकहुटा कोरोनाक रोगी भेटल तँ माइलक-माइल तालाबंदी भए जाइत छल। आनलाइन सामानक सुविधा सेहो समाप्त कए देल गेल छल। लटगेना,तरकारी,फल,दबाइक दोकान खुजल रहैत छल मुदा ओतए जेबामे सेहो डर लगैत छल । जँ केओ उकासी कए देलक तँ बुझु जे बम फाटि गेल।

ओहिदिन हमर पड़ोसी दाँतक डाक्टर लग गेल रहथि। डाक्टरकेँ बहुत मोसकिलसँ एकटा रोगी भेटल रहैक । ओ चाहए जे इलाज शुरु करी जाहिसँ किछु आमदनी होअए । मुदा जखन ओ गप्प-सप्पक क्रममे अपन पुत्रकेँ विदेशसँ लौटबाक बात कहलखिन की ओ डाक्टर तीन डेग पाछा खसकि गेल आ आग्रह केलकनि जे पनरह दिनक बादे आएब। अखन अहाँसभकेँ एकांतवासक प्रयोजन अछि ।

मुदा ई मदर डेयरीक दोकानबला हद अछि । केहनो समय आएल ,ओ ने मास्क लगओलक ने कहिओ दोकान बंद केलक । मदर डेयरीक बूथपर ओहिना लोकक भीड़ देखबामे अबैत । दुध,दही,मक्खन,पनीर,ब्रेड,अंडा,बिस्कुट सभ

एकहिठाम भेटि जाइत छैक । भोरसँ रातुक दस बजे धरि दोकान खुजल रहैत छल । बीचमे किछुकाल भोजनावकास रहैत छल । कहि नहि कोरोनाकेँ मदर डेयरीबलासँ कथीक डर होइक ?

नित्य सुनिऐक जे फलना आदमी तरकारी किनबाक हेतु बाहर गेल आ कोरोना लेने आएल,केओ हजामक ओहिठाम गेल आ दू दिनक बाद दुखित भए गेल । केओ बैंकक एटीएमसँ टाका निकालबाक हेतु गेलाह आ वापसमे कोरोना संगे लेने अएलाह । ई समाचारसभ सुनि-सुनि हम ततेक भयाक्रांत भए गेलहुँ जे घरसँ निकलब निठ्ठाह छोड़ि देल । सोची जे जान बाँचि जाएत तँ कोनो आओर बात सोचल जाएत । तैँ घरमे अपना-आपकेँ बंद कए लेलहुँ । मुदा सुनलिऐक जे किछुगोटे कौटिल्यनगरक संभ्रांत इलाकामे रहि अपन घरमे बंद छलाह तथापि नहि बँचि सकलाह । कोरोना हुनको गछारलक । कैकगोटेकेँ तँ ऊपर पठाइएक मानलक । तखन की कएल जाए? बाहर नहि जाएब से तँ बुझलहुँ ,मुदा घरमे तँ रहबे करब । ओतहु जँ सुरक्षित नहि छी तखन कोन उपाय?

लोकसभ कहए लगलैक जे काजबालीसभकेँ हटाउ। नौकर-चाकरकेँ हटाउ । आनलाइन सामान किनि कए द्वारिएपर रखबा लिअ । ततबे नहि ओकरासभकेँ कैकदिन भरि जस-के-तस छोड़ि दिऔक । ऊपरसँ भाइरस मारबाक

हेतु छिड़काव करू । रहि-रहि कए हाथ धोइत रहू। हालत एहन भए गेल अछि जे अपने हाथकेँ अपने मुँहपर लए जेबासँ बँचेबाक अछि । हाथ धोइ-धोइत चमरीसभ ओदरि रहल अछि। ओहिमे भेसलिन लगबैत रहू । माने दिन-राति अपना-आपकेँ बँचेबाक फिराकमे रहू । कहि नहि कखन केमहरसँ कोरोनाक भाइरस टपकि जाए ।

क्रमशः काजबालीसभ अएनाइ बंद भए गेलैक । आब घरमे पोछा लगेबाक काज हमरा जिम्मा आबि गेल। बाढ़नि चलाएब, पोछा करब हमरा नहि अबैत छल । कहिओ एकर प्रयोजने नहि भेलैक । आब से करए पड़त। तकर प्रशिक्षण हमर श्रीमतीजी देलथि । पोछा लगेबासँ पहिने बाढ़नि लगबैत छी । बाढ़नि लगबैत काल आगू बढ़ैत चलि जाइत छी । मुदा पोछा लगेबाक काल पाछा होइत छी जाहिसँ साफ भेल फर्श पर पैरक निसान नहि बनैक । घरक किछु आओर काजसभ करबाक प्रयास कए रहल छी । किछुदिनसँ भनसिआ सेहो नहि आबि रहल अछि। लगैत अछि भानसो अपने बनबए पड़त । मुदा तकर लुरि नहि अछि । तखन कम सँ कम जलखै बनाएब सिखि रहल छी । एहि तरहें नित्य नव अनुभव भए रहल अछि । जे ने कराबए कोरोना आ तकर भय ।

9

तालाबंदीक महिना दिन भए गेल । मुदा महामारी बढ़िते जा रहल अछि । सरकारक तरफसँ नित्य दुखित पड़निहार आ बिमारीसँ मरि रहल लोकसभक संख्या बताओल जाइत अछि । से सभ सुनि मोनमे चिंता आ दुख दुनू होइत अछि । केहन निर्ममतासँ कहि देल जाइत अछि जे अपना देशमे विदेशक तुलनामे बहुत कम लोक मरि रहल छथि । अफसोचक बात अछि जे मनुक्खक जिनगी मात्र गिनतीक बस्तु रहि गेल अछि । कहिओ कखनहु ओहि गिनतीमे हमहु समा सकैत छी । बस खेल खतम । के श्रद्धांजलि देत,के शोक मनाओत? सौंसे सहर सुन्न भए गेल अछि । एहि तरहें भोरसँ साँझ भए जाइत अछि । समय बितल जा रहल अछि । मुदा परिस्थितिमे कोनो परिवर्तनक संकेत नहि देखाइत अछि।

एमहर सुनबामे आबि रहल अछि जे आब कतहु-कतहु ढील देल जा रहल अछि । लोकसभ अपना -अपना घरसँ बहरा सकत। मुदा समूहमे नहि,असगरे । आइ कैक मासपर घरसँ बाहर निकलि सोसाइटीक मुख्यद्वारि धरि निकलल रही। लगबे ने करए जे ई ओएह रस्ता थिक जाहिपर हम सालक-साल चलि चुकल छी । मुख्यद्वार सेहो अनचिन्हार लागि रहल छल । तालाबंदीमे दोकानबलासभकेँ फोन कए सामानसभ मगबैत छलहुँ । क्रमशः

बुझाए लागल जेना ओ सभ कतेक फटकी रहि रहल अछि । आइ कैक मासपर ओहि द्वारि लग पहुँचल छी । मोनमे एकटा विचित्र भाव आबि रहल अछि । ई स्थानसभ तँ जस-के-तस छल तखन मोनमे एतेक फटकी किएक लगैत छल?

मुख्यद्वारि धरि पहुँचि गेल रही । मुदा रस्तामे एकटा लोक नहि देखाएल । मुख्यद्वारिपर प्रहरीसभ मास्ककेँ दाढ़ीक नीचाँ लटकओने ठाढ़ छल,जेना दाढ़ी बाटे भाइरस देहमे पैसि जेतैक । मुँह,नाक ओहिना उघार । हम द्वारिपर ठाढ़े छलहुँ कि एकटा प्रहरी जोरसँ छिकलक । लागल जेना बम फुटि गेल । हम सोसाइटीक देबार पानि कए बाहर सड़कपर कुदि जाइत छी । प्रहरीसभ जोरसँ हँसि रहल अछि । अपनो पर आ हमरो पर ।

मुख्यद्वारिसँ आगू बढ़बाक साहस नहि भेल । किछुकाल धरि सामने सड़कपर देखैत रहि जाइत छी । कतहु केओ नहि देखाइत अछि । मदर डेयरी बूथबला ओहिनाक ओहिना अछि । फटकिएसँ ओकर नमस्कारक उत्तर दैत छी। की पता? कहीं बजलासँ भाइरस मुँहमे ने पैसि जाए। “आब बस करी । बेसी खतरा मोल लेब उचित नहि ।” अपना-आपकेँ बुझबैत छी । घर दिस वापस अबैत काल किछु महिलासभ टहलैत देखाइत छथि । कथी लेल केओ कोनो परहेज करति? सभ ओहिना हँसी ठट्ठा करैत आगू बढ़ि जाइत छथि। सोसाइटीक एक चक्कर लगाकए हम घर वापस आबि जाइत छी । लगैत अछि जेना दोसर दुनिआसँ घुमि कए आबि रहल छी। मासक-मास घरमे मुनल-मुनल माथो जेना बंद भए गेल अछि । की एहने जीवन जेबाक हेतु हमसभ एहि दुनिआमे आएल छी? मुदा

एहि प्रश्नक उत्तर ककरा लग छैक? ककरो लग नहि । सभ तँ अपने परेसान अछि । परेसानीक कारण ई महामरी तँ अछिए मुदा एकरासँ उत्पन्न समस्यासभ बेसी तंग कए देने छैक ।

घर वापस आबि कए सभटा वस्त्रकेँ गरमपानिमे डुबा दैत छी । फेर ओकरासभकेँ बेरा-बेरी साबुनसँ खिचैत छी । तकरबाद नहाइत छी । गत्र-गत्र साबुन लगबैत छी । तकरबाद निचेन भए नववस्त्र पहिरि बाहर अबैत छी । गरम-गरम चाह बनि गेल छल । चाह पिनाइ शुरु करैत छी कि मोहितक फोन अबैत अछि । आइ ओकर स्वरमे प्रसन्नता बुझा रहल अछि।

"की बात छैक मोहित?"

"एकटा नीक समाचार भेटल । सोचलहुँ सभसँ पहिने अहाँकेँ कही।"

"की बात?"

"हमर घरनी भेटि गेलि।"

"कतए?"

"मधुपुर अस्पतालमे ।"

"से केना?"

"दुर्घटनाक बाद ओकरा उठा-पुठा कए पुलिस मधुपुरक अस्पतालमे भर्ती करबा देलकैक । ओकर हालत बहुत खराब रहैक। किछु बाजल नहि होइक । जखन होस भेलैक तँ ओ अपन परिचय देलकैक । पुलिस जेना-तेना पता लगा कए हमरा फोन केलक ।"

"ई तँ बहुत नीक बात भेल । मुदा अखन तूँ छह कतए?"

“हम तँ मधुपुर लग छी। सुनलिऐक जे एहिठामसँ आगू लए जेबाक हेतु सरकार बस पठओतैक । तकरे बाट ताकि रहल छलहुँ की ई समाचार भेटल ।”

10

मोहित जेना-तेना मधुपुर सरकारी अस्पताल पहुँचल । सौंसे अस्पताल घुमि गेल मुदा ओकर पत्नीक किछु पता नहि चललैक । अंतमे एकटा सिपाही ओकरा अस्पताल अधीक्षकक पीए बाबू लग पठा देलकैक । ओ कतहु फोन केलक। ओकरा सभबात पता चलि गेलैक ।

“ओ तँ कोरोनासँ संक्रमित भए गेल छथि । तेँ हुनका विश्वविद्यालयक अतिथिगृहमे बनल एकान्त रोगीकक्षमे पठा देल गेलनि । अहाँकेँ तँ ओहिठाम भीतर नहि जाए देत, ने जेबाक चाही।”

“मुदा हुनकर हाल-चाल कोना भेटत?”

“हाल-चाल बुझिए कए की करबैक? राम-राम करैत रहू। जँ अरुदा हेतनि तँ जीबि जेतीह ।”

“ओकर बात सुनि कए मोहितक छाती फाटि जाइत छैक । ओ भोकासी पारि कए कानए लगैत अछि ।

“अहाँ धीआ-पुता जकाँ नहि करू । समय केहन बिति रहल छैक से जनिते छी । सभ अपन-अपन जान बँचा रहल अछि । अखन केओ ककरो नहि । राजा,रंक,फकीरसभ संकटग्रस्त अछि । के रहत,के जाएत तकर कोनो ठेकान नहि अछि ।”

“मुदा अस्पतालमे हुनकर शुश्रुखा के करतनि? ओ ठीक भेलीह कि नहि से हमरा केना पता चलत? ”

“एतेक बात कहि गेलहुं तैओ ओएह बात । अहाँ एहिठाम रहिओ कए किछु नहि कए सकैत छी । सभटा काज अस्पतालक कर्मचारी अपने करैत अछि । कोरोना विभागमे दिन-राति डाक्टर,नर्स,आओर कर्मचारी रहैत अछि । तथापि हमर मोबाइल संख्या लिखि लिअ । जखन मोन औनाए तँ फोन कए लेब । अपनो मोबाइल संख्या लिखा दिअ। जँ कोनो विशेष बात हेतैक तँ हम अहाँकेँ सूचना दए देब ।”

“से तँ बुझलहुं । मुदा हमरा तँ कोनो अपन ठेकान नहि अछि जतए हिनकर प्रतीक्षा करबनि । कौटिल्यनगरमे कारखाना बंद भए गेल,मकान मालिक मकान खाली करबा लेलक । तकरबाद कोनो आओर उपाय नहि छल । कौटिल्यनगरमे कतए रहितहुँ? की खइतहुँ? दोस्तक संगे सपरिवार गाम बिदा भए गेलहुँ । अखन हम गामक रस्तामे छी ।”

“बात सही छैक । ओना अहाँ कतेक दिन धरि हुनकर बाट तकैत रहबनि । ठीक भए गेलाक बादो चौदह दिन संगरोधमे रहए पड़तनि । तकर बादे ओ कतहु जा सकैत छथि ।”

हुनकर बात सुनि कए ओ दुविधामे पड़ि जाइत अछि । पीएकेँ मोहितक मनोदशा देखि दया आबि जाइत छैक । बजैत अछि-

“अहाँ निचेन भए गाम दिस जाउ । हमसभ एहिठाम छी ने। एहन-एहन बहुत रास मामिला छैक । कोनो ओ असगरे नहि छथि। सरकार दिससँ सभटा ओरिआन कएल गेल छैक ।”

पीए साहेबक बात सुनि ओकर असमंजस कम नहि भेलैक।

“हमरा तँ एहिठामसँ डेग आगूससरिए नहि रहल अछि।”

“मुदा ऐहिठाम कतेक काल ठाढ़ रहब । ई कार्यालय छैक । हमरा आओर काजसभ अछि । फेर साँझ होइते ई बंद भए जाइत छैक । तखन?”

“कम सँ कम हुनकर समाचार आसानीसँ भेटि सकए से उपाय करू ।”

“से तँ कहबे केलहुँ ।”

“ओ तँ आपत्तिकालमे ने । मुदा नित्यप्रति अहाँकेँ कतेक तंग करैत रहब । कोनो जोगार होइतैक जाहिसँ हुनकासँ स्वतः संपर्क भए जाइत । दिनमे एकहु बेर समाचार बूझि जेबनि तँ मोनमे चेन होएत।”

“ठीक छैक । अहाँ ई पासवर्ड लिखि लिअ । एकरा मोबाइल ऐपमे देबैक तँ सोझे एकान्त रोगीकक्षमे पहुँचि जाएब। तकरबाद शायिका संख्या लिखि देबैक तँ हुनकर शायिका लगक सिस्टरसँ

संपर्क भए जाएत । ओ अहाँकेँ सभटा समाचार कहि सकति आ जँ परिस्थिति अनुकूल रहल तँ हुनकोसँ गप्प करा देति ।”

“ई तँ नीक समाधान केलहुँ ।”

मोहित पासवर्ड लिखलक ,पीए साहेबकेँ प्रणाम केलक आ ओहिठामसँ आगू बढ़ि गेल ।

11

बहुत अछता-पछता कए ओ अस्पतालसँ बिदा भेल । कोनो आओर उपायो नहि बुझेलैक। कनीके आगू गेल तँ बहुत रास लोकसभ सरकारी बसक प्रतीक्षा कए रहल छल । थोड़बे कालमे बस अएलैक । जेना-तेना ओहो ओहि बसमे चढ़ि गेल। ओ बस सोझे सीतापुर जाइत रहैक । बेसीसँ बेसी पचास आदमी ओहिमे जा सकैत छल । मुदा सएसँ बेसी आदमी ओहिमे सबार भए चुकल छल । अखनहुँ किछुगोटे ओहिमे प्रवेश करबाक फिराकमे छल । बसचालक वारंबार लोकसभकेँ मना करैत रहि गेलैक । मुदा केओ पाछा हटबाक हेतु तैयार नहि भेल । आखिर पुलिस आएल आ जकरा-तकरा पिटए लागल । रच्छ भेलैक जे ओ पुलिसक डंटासँ बँचि गेल। पुलिसक लाठीक डरसँ बसपर सबार फाजिल यात्रीसभ हहरि गेल । मौका पाबि कए बसचालक बस हाँकि देलक ।

जखन बस घंटा भरि चलि गेल तँ लोककेँ जानमे जान आएल । किछु यात्रीसभ गलतीसँ एहि बसमे चढ़ि गेल रहथि। हुनकासभकेँ जेबाक रहनि आन-आन ठाम । बस देखि कए

उत्साहमे पैसि गेलाह । जखन पता लगलनि जे बस तँ सीतापुर जा रहल अछि तखन हल्ला करए लगलाह ।

“बस रोकह,बस रोकह ।”

मुदा बसचालक अड़ल रहि गेल । घंटाभरि बाद जखन बस बृंदावनक लगपास पहुँचल तँ बसचालक बसकेँ रोकि देलक । असलमे ओ कृष्णभक्त छल । भगवानक दर्शन केने बिना ओहिठामसँ आगू कोना बढ़ैत? तेँ ठाढ़ भेल । यात्रीसभकेँ सेहो कृष्ण भगवानक दर्शन करबाक मौका देलकैक । एहने समयमे आन-आन ठामक यात्रीसभ बससँ उतरि गेल । बसमे किछु जगह भेलैक । मोहित मौका पाबि कातक सीटपर बैसि गेल । बसेमेसँ भगवानकेँ प्रणाम केलक। बस खाली भए गेल छल । ओ अपन मोबाइल खोललक आ अस्पतालक एपमे पासवर्ड भरि देलक । तकरबाद शायिका संख्या सेहो भरि देलक । बस देखिते-देखिते ओ अस्पतालक एकान्त रोगीकक्षमे पहुँचि गेल ।

एकटा बड़ीटा हाल,ओहिमे फटकी-फटकी रोगीसभक शायिका,डाक्टर,नर्स,कर्मचारीसभ भूतसन बनल-ठनल रोगीसभसँ फटकिए घुमि रहल अछि । रोगीसभकेँ जलखै,चाह चलि रहल छलैक । केओ फटकिएसँ लग्गीमे बान्हल झोराक मारफत सभसीटपर सामानसभ राखि रहल अछि । लगमे जेबाक तँ सबाले नहि । रोगीसभ भुखाएल अछि । जलखै देखितहि झपटि लैत अछि । तकरबाद एकटा मसीनसँ सभक सीटपर पानि आबि जाइत छैक । रोगीसभ अपन-अपन गिलासमे पानि भरि लैत अछि । तकरबाद डाक्टरसभ फटकिएसँ रोगीसभक हाल-चाल लैत अछि।

जकरा जे दबाइ देबाक छैक से नर्सकेँ बता दैत अछि आ जतेक जल्दी संभव छैक रोगीकक्षसँ बाहर भए जाइत अछि।

मोहित ई दृश्यसभ देखैत रहल । मुदा ओहिमे ओकरा अपन पत्नी कतहु नहि देखेलैक । अनिष्टक आशङ्कासँ मोन व्याकुल भए गेलैक ।ओकर मोन छटपटा गेलैक। आब एको सेकेंड रूकि जाएब ओकरा वशमे नहि रहैक । ओ पीए साहेबकेँ फोन लगओलक । पीए साहेबक मोबाइएक घंटी बाजि उठल आ बजिते रहि गेल । केओ फोन नहि उठओलक। मोहितक चिंता आओर बढ़ि गेलैक । मुदा करए की? ओही बीचमे बस सेहो खुजि गेलैक । बसचालक यात्रीसभकेँ भगवानक प्रसाद बाँटि रहल छल । प्रसाद लए कए ओ मोहितो लग अएलैक। मुदा मोहितक मोन तँ कतहु आओर टांगल रहैक ।

बसचालक कैक बेर आबाज देलक । जखन मोहित नहि सुनलक तँ ओ ओकर हाथमे प्रसाद रखबाक चेष्टा केलक ।एतबेमे मोहितक मोबाइल खिड़की बाटे नीचाँ खसि पड़लैक। मोहित बहुत जोरसँ चिचिआ उठल –“बस रोकू,बस रोकू ।हमर मोबाइल नीचाँ खसि पड़ल ।”

मुदा बाहन चालकक हेतु धनसन । ओ बस चलबिते रहि गेल । मोबाइल हाथसँ खसि जेबाक कारण मोहित बहुत परेसान भए गेल छल । मुदा कोनो उपाय नहि बुझाइक । संयोग एहन भेलैक जे ओही समयमे गोपी सहयात्रीसभक संगे पैर-पैरे जा रहल छल । केओ कहलकैक जे सीतापुर जाएबला बस बृंदावनमे ठाढ़ छैक । सएह सुनि ओ जेना-तेना ओतए पहुँचल। मुदा ताबे बस खुजि गेलैक ।बसकेँ खुजैत काल ओ मोबाइलकेँ बसक खिड़कीसँ

खसैत देखलकैक । ओ मोबाइल उठा लेलक । ओ बस चालककेँ बेरि-बेरि इसारा केलकैक । मुदा ओ नहि देखि सकलैक । बस आगू बढ़ि गेलैक । हारि कए गोपी मोबाइल हाथमे लेने लगीचेमे नीमक गाछ तरमे बैसि गेल ।

12

एकहि ठामसँ संगे गोपी आ मोहित बिदा भेल छल । रस्तामे तेहन ने दुर्घटना भेलैक जे ओ सभ जेमहर-तेमहर भए गेल । अखन मोहित सीतापुरक बसमे चढ़ल अछि । गोपी पैरे गाम जाए बला गुटक संगे चलि रहल अछि । ई दुनिआ गोल छैक । संयोग एहन भेलैक जे हम घरे बैसल ओकरासभक संपर्कमे बनल छी । ई कमाल छैक मोबाइल फोनक। काल्हि साँझमे तँ गोपी मोबाइलेसँ भिडिओ काल केलक । देह काँट-काँट भेल रहैक । ठोरपर फुफरी पड़ैत छलैक । ओकर संगीसभक सएह हाल बुझाइक । एहन हालतमे ओ नीमक गाछ तर सुस्ताइत छल । कनीके फटकी सड़क रहैक । ओकरासभक अनुमान छलैक जे कखनो-ने-कखनो ओकरो गाम दिसक बस भेटि जेतैक । ताबे रेल मार्ग छोड़ि सड़कक काते-काते चलि रहल छल । बीच-बीचमे सुस्ताइतो छल । एहनेमे ओकरा मोहितक मोबाइल हाथ लागि गेल रहैक ।

मोबाइल अखन खुजले रहैक । अस्पतालक दृश्य ओहिना देखाइत छल । ओ ध्यानसँ अबैत-जाइत महिलाकेँ देखलक । ई तँ

परिचित लागि रहल छथि। ओ सतर्क भए गेल। थोड़बे कालक बाद फेर ओएह महिला शायिकापर बैसल देखेलैक । ओतए कोनो तेसर आदमीक आबाज आबि रहल छलैक । बगएसँ डाक्टर लागि रहल छलैक । ओ ओकरा दबाइसभ बुझा रहल छलैक । ओकरा इहो सुनेलैक-

"अहाँक हालत सुधरि रहल अछि । जँ एहिना सुधार होइत रहल तँ एक सप्ताहमे अहाँकेँ हमसभ एहिठामसँ छुट्टी कए देब । अहाँ चाही तँ ई बात अपन आदमीकेँ सूचित कए सकैत छिअनि।"

"मुदा हुनकर तँ हमरा किछु अता-पता नहि अछि ।"

"से किएक?"

ओ महिला गुम्म पड़ि गेलि । डाक्टरक आबाज अएनाइ सेहो बंद भए गेलैक । मुदा गोपीकेँ ई बात अखरि गेलैक । "ई तँ मोहितक पत्नी छथि । मुदा ई छथि कतए? एना एहि मोबाइलमे भिडिओ किएक देखा रहल अछि ?" तरह-तरहक बातसभ ओकरा मोनमे आबए लगलैक ।

ओ फोनकेँ उल्टा-पुल्टा कए देखलक । फोनमे हमर मोवाइल फोन संख्यासँ मिसकाल देखेलैक । ओ चोट्टे हमरा फोन लगा देलक। हम सोफापरसँ तुरंते उठि कए नीचाँ फुलबारीमे जाइत रही । मोबाइलक घंटी बाजल । देखैत छी –"मोहित" लिखल आबि रहल अछि । हमरा तँ कैकदिनसँ अपने ओकरा बारेमे उत्सुकता छलहे । तुरंत फोन उठबैत छी। "ईकी ? आबाज तँ गोपीक बुझा रहल अछि।"

"के?"

"हम छी गोपी।"

"मुदा ई फोन तँ मोहितक छैक ।"

गोपी सभटा खेरहा सुनओलक जे केना-केना ओ फोन ओकरा हाथमे आबि गेल अछि आ ओ फोनमे भिडिओमे की की देखलक? हमरो छगुन्ता लागल जे एना आखिर भेलैक कोना? मुदा एहि सभसँ एतबा फएदा भेल जे गोपी आ मोहितक वर्तमान स्थितिसँ अवगत भेलहुँ ।

ओकरसभक हालतसँ हम बहुत चिंतित भए गेलहुँ । मुदा कइए की सकैत छलहुँ? एहि तरहक ओ सभ कोनो एसगर मामिला नहि छल । सौंसे देशमे एहन लाखो मजदूर एहि परिस्थितिसँ गुजरि रहल छल । मुदा कएल की जाए? सहरमे बिना कोनो काजकेँ ओ सभ कोना टिकैत? जेना-तेना अपन-अपन गाम वापस जएबाक प्रयासमे छल । ओहि प्रयासमे कतेकोगोटेक जानो चलि गेलैक । किछुगोटे जानपर खेलि कए गाम पहुँचिओ गेल तँ ओकर अपने गामक लोक गाममे पैसए नहि दैत छैक । किछु गोटे रस्तेमे बौआ रहल अछि । एनामे के बाँचत,के मरि जाएत तकर कोन हिसाब? करोनासँ मरए नहि मरए,मुदा भूखसँ जरूर मरि जाएत ।

गोपीसँ गप्प अखन समाप्त नहि भेल छल । मुदा ओकर फोन अपने कटि गेलैक । असलमे गोपीक मोन बहुत उचटि गेल रहैक । ओ मोबाइल फोन किएक भेटलैक ? ओना तँ निचेन छल। जेना-तेना उमीदपर गाम दिस बढ़ि रहल छल । मुदा ई मोबाइल ओकरा बहुत तनावमे आनि देलकैक । ओ फोनमेसँ कैकटा

परिचितकेँ फोन करैत अछि । मुदा केओ मोहितक बारेमे निजगुत बात नहि कहैत छैक । ओकरा जिज्ञासा जस-के-तस बनल रहि जाइत छैक । ओ अपन फोनसँ मोहितक दूरभाष संख्या निकालैत अछि। फेर मोहितेक फोनसँ ओकरा फोन करैत अछि । मुदा फोनक घंटी ओकर हाथेक फोनमे बजैत छैक । तखन ओकरा बुझेलैक जे ओ की गलती कए रहल छल। आब की करी? कोना मोहितसँ संपर्क करी? एहि चिंतामे गोपी भोरसँ साँझ कए लेलक । मुदा समाधान नहि भेटलैक।

साँझमे हमरा मोहितक फोन आएल । हम ओकरा गोपीसँ फोनपर भेल बातसभ कहलिऐक । मोहितकेँ ई जानि बहुत प्रसन्नता भेलैक जे ओकर फोन हरेलैक नहि,अपितु गोपीएक हाथ लगलैक। ओकरा अपन स्त्रीक समाचार सुनि सेहो मोन कनी हल्लुक भेलैक। गोपी अपन संगी सभक संगे पैरे आगू बढ़ि रहल छल कि ओकरा एकटा अज्ञात मोबाइल संख्यासँ फोन अएलैक । ओ तुरंत फोन उठओलक । फोनमे मोहितक आबाज सुनि ओकरा बहुत सुखद आश्चर्य भेलैक ।

गोपी आ मोहित बड़ी काल धरि बतिआइत रहि गेल । दुनूक हालत तेहने पातर छलैक । मोहित असगर भए गेल छल । गोपीक परिवार संगमे रहैक जरूर मुदा बहुत कष्टमे । कोनो उपाय नहि छलैक । कोनो सबारी भेटबे नहि करैक । जखन ओ एहिना चलैत रहि गेल तँ आखिर ओकर पत्नी हाथ बारि देलकैक । सड़कक कातमे गाछतर बैसि गेलैक । हारि कए गोपी सेहो बैसि गेल । संग चलि रहल यात्रीसभमेसँ किछुगोटे आगू बढ़ि गेल । किछुगोटे

ओकरे संगे बैसि गेल । सभक हालत तँ खरापे रहैक । के ककर मदति करैत?

13

मोहित आ गोपीक रस्ता फराक-फराक भए गेल छलैक मुदा दुनूगोटे छल एकहि समस्यासँ ग्रस्त । दुनूक गंतव्यो एकहि छलैक। दुनूगोटे एकहिठामसँ बिदा भेल छल । संयोग एहन रहैक जे दुनूगोटे हमरे कारखानामे काजो करैत छल आ दुनू हमर प्रियपात्र छल । मुदा हमही की करितहुँ? कोनो हमरे बात नहि रहैक । लगैक जेना उनचासो हवा बहि गेल छैक । जतहि जकरे देखू,ओ जान बँचेबाक जोगारमे लागल अछि । एहनो समय अएतैक से के सोचने छल? अखन तँ ई हाल भए गेल छैक जे सहरसँ गामक लोक बेसी सुखी लागि रहल अछि। सएह सोचि कए तँ लाखों जन-बोनिहारसभ सहर छोड़ि जानपर खेलि कए गाम दिस बिदा भए गेल ।

सहरसँ गामक ई यात्रा बहुत दुखद भए गेल अछि। नित्य तरह-तरहक दुर्घटनाक समाचारसभ आबि रहल अछि। जीवन बँचेबाक प्रयासमे कतेको गरीबसभ अपन जान गमा देलक । एहन लोकक के सुधि लैत? ओ ने कोरोनासँ मरल,ने महानगरीक चक्रव्युहमे । ओ सभ जान बँचेबाक हेतु भागि रहल छल आ ताहिमेसँ कतेकोगोटेकेँ राति-बिराति ट्रक पिचि देलकैक । कतेकोगोटे भुख ,पिआससँ मरि गेल । मरबाक तँ छलइहे । जँ

सहरेमे रहिए जाइत तँ कोन बँचि जाइत? सरकार दिससँ घोषणापर-घोषणा होइत रहल आ सहर-क-सहर खाली भए गेल। हमरासन-सन कतेको लोक सहरमे अपन-अपन घरमे बंद छथि । कैकगोटे तँ घरसँ कतहु नहि गेलाह तथापि कोरोना हुनकर घरमे पैसि कए डसि लेलकनि । ओ नहि बँचि सकलाह । तेँ सभठाम असमंजसक स्थिति अछि । ककरो दोष दए की भए सकैत अछि? ई समयक दोष थिक । सभ लाचार अछि । कहल जाइत अछि जे सए सालक बाद एहन त्रासदी मानव समाजपर आएल अछि ।

रहि-रहि कए हमर ध्यान गोपी आ मोहितपर चलि जाइत अछि । आइ भोरे गोपीक फोनसँ ओकर समाचार बुझबामे आएल। ओ पैरे-पैरे आगू बढ़ल जा रहल अछि । मुदा रस्ताक भयावह विवरण दए ओ बहुत दुखी भए जाइत अछि। ओ कहैत छल जे रस्तामे एकटा श्मशान घाटलग सँ ओ सभ जा रहल छल । ओहिठामक दृश्य देखि ओकरा जेना लकबा मारि देने रहैक । अनगिनित संख्यामे लहास श्मशानमे अंतिम यात्राक हेतु पंक्तिवद्ध भेल छल । ओहिमे ककरो कोराना भेल छलैक,ककरा नहि ,से कहब बहुत कठिन बात छल । गाम-घरमे ने कोनो डाक्टर छैक,ने कोनो अस्पताल । ने ककरो कोनो जाँच-पड़ताल होइत छल । के कथीसँ मरल तकर कोनो प्रमाण नहि छल । मुदा अंतिम यात्रापर निकलल लहाससभ अपन स्थानक हेतु तरपि रहल छल। केना लोकसभ अपन-अपन संबंधीक लहासकेँ आगू बढ़ेबाक हेतु खखनि रहल छल । एकटा लहास लग बहुत हल्ला सुनेलैक। ओ सभ कान देने रहल । आखिर बात की छैक? भेल ई रहैक जे ककरो लहास ककरो दए देल गेल रहैक । लहास डिब्बाबंद छलैक । ओकरा खोलबाक अनुमति नहि रहैक । तथापि ओकर निकट

संबंधी ओकरा आगि देबासँ पूर्व मुँह देखि लेबए चाहैत छल । मुदा से जे देखलक तँ चिचिआ उठल । पुरुखक बदलामे कोनो महिलाक लहास दए देने रहैक। जेना-तेनाक मामिला शांत कएल गेलैक। लहासक अदला-बदली कएल गेल । रच्छ रहैक जे दोसर लहास लगीचेमे रहैक आ ओकरो अंतिम संस्कार नहि भेल रहैक । श्मशानक ओहि दृश्य देखि गोपी आ ओकर संगे चलि रहल सभगोटेकेँ जेना मुर्छा मारि देलकैक । ओ सभ जेना-तेना आगू बढ़ैत गेल। बड़ीकाल धरि ओकरासभकेँ श्मशानक दुर्गंध लगैत रहलैक । ओ सभ क्रमशः ओहिठामसँ फटकी भेल मुदा मोनमे तँ सभ किछु ओहिना नाचि रहल छलैक ।

परिस्थितिक भयावहता कहबैक कि लापरबाही मुदा जे भेलैक से बहुत अन्याय भेलैक । मानवताक संगे एहन क्रूड़ मजाक साइते सोचल जा सकैत छल । मुदा से भेलैक । कतेकोगोटे अस्पताल परिसरमे अपन मृत परिजनक अंतिम दर्शनसँ बंचित रहि गेल । हम ई सोचि-सोचि परेसान भए गेल रही । कतेक दुखद दृश्य छल । गोपी कहि नहि पाबए आ हम सुनि नहि पाबी । तँ बृतांतके संक्षेप करैत ओ आगू बढ़ि गेल। तथापि हम ओकरा कहलिऐक जे समय-समयपर एहिना फोन करैत रहए । ताबते हमर पत्नी ओहिठाम आबि गेलीह । ओ हमर मनोदशा देखि चिंतामे पड़ि गेलथि । हुनका बुझबामे कनीको देरी नहि भेलनि । ओ हमरा झिकि कए बाहर लेने गेलीह ।

“एनामे तँ अहाँ अपने दुखित पड़ि जाएब ।”

14

गोपी आ ओकर संगीसभ आगू बढ़ि रहल छल । जाधरि सक लगैक चलैत रहए । जखने थाकि जाए कोनो सही स्थान देखि सुस्ता लिअए । नहि किछु भेटैक तँ गाछेक छाहरिमे बैसि जाए । लगपासमे चापाकलक पानिक जोगार करए । मोनभरि पानि पिबि लिअए । भूखक ओरिआन तँ भगवानक भरोसे छल । कतहु-कतहु समाजसेवीसभ मदति करैत छलाह । मुदा ओहोसभ कतेकगोटेकेँ देखितथि । एहिठाम तँ लोकक हुजुम छल । लगैत छल जेना सौंसे सहर भागि रहल अछि । कतहु किछु जोगार नहि। ओहि दिन गोपी बड़ीकाल धरि धारक काते-काते चलैत रहल । थोड़क आगू गेलका बाद एकदम सुन्न स्थान रहैक । किछु काल ओहिना चलैत रहल । धारक ऊपर पुल बनल रहैक। सामनेसँ कारसँ तीन-चारिगोटे एकटा नमगर बाकस लेने उतरलाह । धारक कात धरि ओहि बाकसकेँ घिचने गेलाह। तकरबाद कनीकाल धरि सभगोटे ओहि बाकस दिस तकैत रहलाह । रहि-रहि कैक बेर ओकरा प्रणाम केलाह आ तकरबाद सभगोटे मिलि कए ओकरा धारमे भसिआ देलाह । तकर बाद सभगोटे एकस्वरसँ बजलाह-

"राम नाम सत्य है । सबका यही गत्त है ।"

से कहैत ओ सभ वापस कारमे बैसि गेलाह । कार आगू बढ़ि गेल । धरपरीमे ओ बाकस धारमे नीकसँ नहि बहि सकलैक आ कनीके आगू जा कए पुलसँ अड़कि गेलैक । औ बाबू! तकरबाद जे तमासा भेल से की कहू?

पुलसँ कनीके हटि कए पैघ लोकसभक बस्ती रहैक । ओहिगामक किछुगोटे मेडिआमे सेहो काज करैत छलाह । संयोगसँ ओ सभ पुल पार करिते छलाह कि बाकससँ निकलि रहल ओहि लहासक मुड़ी देखा गेलनि । ओ सभ तुरंत ओकर भिडिओ बना कए टिलेभिजनसँ प्रसारित कए देलखिन । मिनटोमे ई समाचार सौंसे दुनिआमे पसरि गेल । थोड़बे कालमे ओहिठाम तरह-तरहक मेडिआक लोकसभ जमा होबए लगलाह । जकरा जे मोन होइक से बाजए । जकरा जे मोन होइ से कहए । देखिते-देखिते ओहिठाम मेला लागि गेल। गोपी आ हुनकर संगीसभ तँ थाकि गेले रहथि । ओ सभ सुस्तेबाक बढ़िआँ मौका देखि ठाढ़ भए गेलाह । किछु मेडिआक पत्रकारसभ गोपीकेँ तरह-तरहक प्रश्न पुछए लगलाह । हम ओहि समयमे टेलीभीजन खोलनहि रही कि ओहिमे गोपीकेँ देखैत छी । गोपीक हाथमे ओएह मोबाइल अछि । मोबाइलमे अस्पताल दृश्यसभ ओहिना देखा रहल छल । मिडिआबलासभकेँ उत्सुकता भेलैक । ओ गोपीसँ मोबाइल मांगि लेलक आ अस्पतालक सद्यः दृश्य टेलीभीजनपर प्रसारित होबए लागल ।

मेडिआबलासभ गोपीक साक्षात्कार लेबए लागल । तरह-तरहसँ ओकरा प्रश्नसभ पुछए लागल । एकटा प्रमुख मेडिआक पत्रकार ओकरा कोनमे लए गेलैक आ कानमे किछु फुसफुसा कए कहलकैक। गोपी की सुनलक,ओ की कहलक से तँ लोक नहि बूझि सकलैक मुदा एतबा सभ देखलक जे गोपी चिकरि-चिकरि कए कहि रहल छलैक-

"हमसभ तीन दिनसँ भुखल छी । केओ हमरासभक देखनाहर नहि । कौटिल्यनगरसँ बिदा होइत काल कैकगोटे कहने रहथि जे तोरासभक हेतु सभटा ओरिआन कौटिल्यनगरक सीमापर भेल अछि । बस पहुँचबाक देरी अछि । दूपहर रातिमे हमसभ धरफरा कए डेरा छोड़ि देने रही। मुदा जखन बाहर निकललहुँ तँ कतहु किछु नहि । तहिआसँ आइ धरि टपला खा रहल छी ।"

गोपी अपन बात खतम कइओ नहि सकल छल कि ओकर चारूकात भोजन सामग्रीक पथार लागि गेल । तरह-तरहक डिब्बासभमे भोजन सामग्री भरि-भरि कए ओहिठाम आबि रहल छल । गोपी आ ओकर संगीसभ भरि पेट भोजन केलक । पानि पिलक आ विश्राम करबाक हेतु धारक कातेमे पड़ि रहल । तकरबाद जे ओकरा निन्न भेल से की कहल जाए? मेडिआबलासभ ओकरसभक भिडिओ बना-बना कए टेलीभीजनपर प्रसारित करैत रहल । संगहि नून-मिरचाइ मिला-मिला कए टिप्पणी करैत रहल। थोड़े कालक बाद सरकारी गाड़ी सभमे ओहि बाकसकेँ लादल गेल। मिडिआक लोकसभ ओकरा पछोड़ करए लागल । देखिते-देखिते पुलपरसँ भीड़ हटि गेल ।

गोपी आ ओकर संगीसभ आगू बढ़ल । किछुए काल जतए भारी भीड़ जमा छल,आब ओकरसभक हालचाल लेनिहार केओ नहि छल । गोपी कनीके आगू बढ़ल तँ ओकरा फोन करबाक इच्छा भेलैक । मुदा ओकरा लग फोन रहबे नहि करैक । ओकर फोन तँ मेडिआबला लेने चलि गेलैक । आब तँ ओ ठोह पारि कए कानए लागल । गोपीकेँ परेसान देखि ओकर संगीसभ सेहो चिंतित भए गेल ।

“की भेलह,की भेलह?”

गोपी किछु बजबे नहि करए, ने ओ आगू बढ़ए । ओ आ ओकर सहयात्रीसभ वापस पुल लग लौटि गेल । ओतए ओ सभ पहुँचले छल कि एकटा कारकेँ पुलपर चढ़ैत देखलकैक । गोपीकेँ देखितहि कार रूकि गेल । कारमेसँ दूगोटे बहार भेल । एकगोटेक हाथमे गोपीक फोन छलैक आ दोसरक हाथमे आधुनिक कैमरा।

15

गोपीकेँ मोबाइल भेटि गेलैक । एहिबातसँ ओ बहुत प्रसन्न रहए । ओ सभसँ पहिने मोहितक समाचार बुझबाक हेतु ओकर संगीक फोन लगओलक । मोहितसँ आइ कैक दिनपर गप्प भए रहल छलैक । ओ अपन पत्नीक समाचार बुझबाक हेतु व्याकुल छल । मुदा गोपीक फोन आबिए नहि रहल छलैक। तखन करए की? औना कए रहि जाइत छल । आइ जखने गोपीक फोन अएलैक तँ सभसँ पहिने ओ अपन पत्नीक समाचार पुछलकैक । मुदा गोपी लग ओ समाचार छोड़ि आओर सभटा समाचार छलैक। एमहर दू-तीन दिनमे जे सभ भेल छल से ओ कहए लगलैक । मुदा मोहितकेँ ओहिसभमे कोनो रुचि नहि रहैक ।

“हमरा सभसँ पहिने हुनकर हाल-चाल कहह ।”

“तोहर बला फोन तँ एमहर-ओमहर घुमि रहल छल । तेँ हम अस्पतालक समाचार नहि लए सकलहुँ ।”

गोपीक मुँहे ई बात सुनि मोहित उदास भए गेल । फेर कहैत छैक-

“तूँ पीए साहेबसँ गप्प करह । ओकरा सभटा जानकारी हेतैक ।”

“मुदा ओकरासँ कोना गप्प करब? हमरा तँ किछु नहि बूझल अछि। ओकर मोबाइल संख्या सेहो नहि बूझल अछि । सभटा हमरबला फोनमे छैक । तोरा अपनासँ नहि होइत छह तँ कोनो बुझनुक आदमीसँ कहि कए ओकर मोबाइल संख्या निकालि लएह। ओकरा हमर नाम कहिअहक । ओ अपने सभटा बात कहतह ।”

“ठीक छैक ।”

मोहितसँ गप्प केलाक बाद ओ पी.ए.साहेबक मोबाइल संख्या ताकि लैत अछि । पीए साहेब केँ गोपी फोन करैत अछि। गोपीक मोबाइल संख्या देखितहि ओ फोन उठा लैत अछि । मुदा आबाज मोहितक नहि रहलापर ओ संशयमे पड़ि जाइत अछि।

“अहाँ के छी?”

“हम छी गोपी, मोहितक संगी । संयोगसँ ई फोन अखन हमरे लग आबि गेल अछि । तेँ मोहितक कहलापर हम अहाँकेँ फोन केलहुँ ।”

“अच्छा कहू । की बात छैक?”

“मोहितक पत्नीक की हाल छैक ।”

"ओकर हाल तँ बढ़िआँ छैक । असलमे ओ तँ कोरोना संक्रमणसँ मुक्त भए गेलि । तकर बाद ओकरा चौदह दिन संगरोधमे रहए पड़तैक । तैँ ओ काल्हि ओहिठाम पठा देल गेलि ।

"हुनकर जांघक हड्डीक की हाल छनि?"

"एकदम ठीक छनि । ई समस्या तँ आब खतम अछि । ओ आब नीकसँ चलैत -फिरैत छथि ।"

"तखन हुनका अस्पतालसँ छुटकारा कहिआ भेटतनि?"

"हमरा हिसाबसँ दस दिनमे ओ छुटि जेतीह ।"

"ठीक छैक । जे-जेना होइक से सुचित करैत रहब ।"

से कहि गोपी फोन राखि देलक । ओ चाहलक जे ई शुभ समाचार मोहितकेँ दए दिऐक । मुदा गलतीसँ हमर फोन लागि गेलैक । हमर आबाज सुनि ओ चौंकल ।

"हम तँ मोहितक संगीक मोबाइल लगओने रहिऐक जाहिसँ ओकरा शुभ समाचार दए सकिऐक ।"

"कोनो बात नहि । हमही ओकरा धरि समाचार पहुँचा देबैक। कहह की बात छैक?"

गोपी सभटा बात कहलक। से सभ जानि हम बहुत प्रसन्न रही । "

"मुदा अहाँक आबाज भारी लागि रहल अछि । ताबते हमरा बड़ी जोरसँ उकासी भए जाइत अछि ।"

“काल्हिसँ कनी-मनी मोन भारी लागि रहल अछि । उकासी सेहो होइत अछि । बोखारो बूझा रहल अछि ।”

“बँचि कए रहब। लक्षणसभ ठीक नहि अछि ।”

“आब की बँचि कए रहब । दिन-राति घरमे बंद रहैत छी । तथापि मोन खराब बुझा रहल अछि ।”

“जाँच करबा लिअ।”

“करेलिऐक अछि । साँझ धरि रिपोट देतैक । देखा चाही की अबैत छैक?”

“चिंता नहि करू । एहि हालतमे जे करबाक चाही से करू । नीक डाक्टरक संपर्कमे रहू।”

“चिंता कइए कए की होएत? लगैत अछि हमहु पकड़ा गेलहुँ। मुदा तूँ परेसान नहि रहह । हम अखने फोन कए मोहितकेँ ओकर पत्नीक समाचार पहुँचा दैत छिऐक ।”

“ठीक छैक ।”

हम मोहितसँ ओकर संगीक फोनपर गप्प करैत छी । ओकरा सभटा समाचार कहैत छिऐक । ओकरा पत्नीक समाचार सुनि बहुत उसास भेलैक । मुदा हमर स्वास्थ्य लए कए ओहो चिंतामे पड़ि गेल।

“अखन तू कतए पहुँचलह?”

“अखन तँ गाम पहुँचि गेल रहितहुँ । मुदा काल्हिएसँ सड़कक कातमे पड़ल छी ।”

“से की?”

बस खराब भए गेल छैक । अगिला चक्का एकाएक फाटि गेलैक । बस एकहाथ ऊपर उठि गेल रहैक । रच्छ भेल जे उलटल नहि ।"

"तखन की करबह?"

"की कए सकैत छी? अपना हाथमे अछिए की? ओना कहि रहल छैक जे आइ दुपहरिआ धरि बस ठीक हेतैक । देखा चाही ।

हमरा बहुत जोरसँ उकासी होबए लागल । हम फोन राखि दैत छी । पत्नी काढ़ा बना कए अनने छथि । दुनूगोटे काढ़ा पिबए लगैत छी ।

16

हम आइ तीन दिनसँ ओछाओन धेने छी । तेज बोखारक संगे उकासी होइत रहैत अछि । देहमे ततेक कमजोरी लागि रहल अछि जे एक डेग ससरब मोसकिल । भूख नदारद । किछु खेबाक मोन नहि होइत अछि । हम हुनका कैकबेर मना करैत छिअनि जे लगमे नहि आबथि,फटकिएसँ काज करथि । मुदा हुनकापर कोनो असर नहि होइत छनि । परिवारमे हुनका अतिरिक्त एकटा हमर पुत्र छथि । बस तीन गोटे । मुदा आइ ओ दुनूगोटे सेहो उकासी कए रहल छथि । केओ कोनो जाँच करेबाक हेतु तैयार नहि ।

"सर्दी बोखार तँ होइते रहैत छैक । एहि लेल की जाँच कराओल जेतैक? सुनैत छिएक जाँचमे गलत रिपोट देल जा रहल छैक । कैकबेर ठीको लोकक रिपोट कोरोनासँ संक्रमित कए देल

जा रहल छैक जाहिसँ लोकसभ अस्पताल भागए । भगवान जानथि की सही अछि?"

"समय-साल ठीक नहि छैक । बहुत लोक कोरोनासँ परेसान अछि । ई बिमारी जंगलक आगि जकाँ बहुत तेजीसँ पसरि जाइत छैक । तेँ कहैत रही जे हमरासँ फटकिए रहैत जाउ ।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि जे घरक लोक दुखित पड़तैक तँ परिवार ओकरासँ फराक भए जेतैक ।"

"एहि बिमारीमे से जरूरी छैक । जखनसँ दुखिते पड़ि जाएत तखन के ककरा देखत?"

"अहाँकेँ सदिखन उल्टे सोचाइत रहैत अछि । एतेक नहि सोचू । भगवान सभटा ठीके रखथिन ।"

हुनकर बातक काट नहि फुराइत अछि । हम चुप भए जाइत छी । मुदा आब तँ ओहोसभ एहि बिमारीक चपेटमे आबि गेल बुझाइत छथि । चारिमदिन जखन भोरे उठलहुँ तँ ओ दुनूगोटे बोखारसँ लस्त रहथि । हमर हालत तँ खराब रहबे करए । ओहोसभ ओछाओनसँ उठि नहि पाबथि । के चाह बनाओत,के हाल-चाल पुछत? जेमहरे देखैत छी लोक परेसान घुमि रहल अछि । अस्पतालसभ भरि चुकल अछि । किछुदिन पहिने धरि तँ अस्पतालमे जगह भेटि जाइत छलैक। मुदा आब हालत नियंत्रणमे नहि रहि गेल छैक । हम कैकटा अस्पतालमे संपर्क करबाक प्रयास करैत छी । मुदा केओ हमरासभकेँ भर्ती करबाक हेतु तैयार नहि अछि ।

"घरेपर रहू । अस्पतालक हालत बहुत खराब छैक । जाधरि साँस लेबामे दिक्कति नहि होअए,घरेमे इलाज कराउ।"- फोनपर

डाक्टर कहलाह । किछु-किछु दबाइ लिखा देलाह । ओहने हालतमे हमर पुत्र दबाइ आनए जाइत छथि। दबाइक कतेको दोकानसभ घुमि गेलाह । दबाइ नहि भेटि रहल छनि । संयोगसँ कारपर पार्टीक झंडा फहरबैत स्थानीय नेता देखेलनि । ओ दबाइक दोकानपर आएल । दोकानबलासँ दूटप्पी केलक । थोड़बे कालमे दोकानपरसँ बोराक-बोरा दबाइ लए चंपत भए गेल । ओकरा पाछा-पाछा एकटा कारी,भुट्ट आ घनगर कारी मोछबला ओकर कार्यकर्ता छलैक । ओ जोर-जोरसँ कहैत छल-“जकरा दबाइक काज होअए से नेताजीक कोठीपर पहुँच जाउ । ओहिठाम मङनीमे दबाइ भेटत । ओतहि डाक्टरो भेटि जेताह ।

देखिते-देखिते नेताजीक कोठीपर लोकक भीड़ जमा भए गेल । कहि नहि कहाँ-कहाँ सँ लोकसभ आबि गेल छल आ आबिए रहल छल । कैकटा आओर नेतासभ सेहो देखा-देखी एहिना दबाइ जमा कए लेने छल । परिणामतः ककरो कोनो दबाइक दोकानपर दबाइ भेटबे नहि करैक । लोकसभ कोनो-ने-कोनो नेताजीक ओहिठाम पहुँचए लागल । हाल ई भए गेल छल जे घंटा भरि ठाढ़ रहबाक बादो हमर नंबर नहि आएल । बीच-बीचमे “नेताजीक जय” क नारा सेहो लगैत रहैत छल । भीड़ बहुत बढ़ि जेबाक कारण करवनो-करवनो अव्यवस्था भए जाएब स्वभाविके छल । से होइत रहैत छल। कोठीक मुरव्यद्वारिपर आरक्षीसभ यदा-कदा लाठी चला दैत छलाह जाहिसँ लोक एमहर-ओमहर भए जाए । सभ परेसानीमे छल । ने डाक्टर भेटैक,ने दबाइ । नेताजीक कोठीपर डाक्टर आ दबाइ दुनू भेटबाक संभावना रहैक । तेँ लोक जान लगा देने छल।

भोरसँ पाँतिमे लागल-लागल साँझमे जा कए हमर नंबर आएल। डाक्टर फटकिएसँ पुछलक-

"की बात छैक?"

हम ओकरा सभटा बात कहए चाहलिऐक । अपन डाक्टरबला पुरजा सेहो देलिऐक । मुदा ओकरा समय कहाँ रहैक? ओ पुरजा देखि कए हँसि देलक।

"ई कोनो दबाइ छैक । सभ जाली कारोबार अछि । हम जे दबाइ देब सएह लेब ।"- से कहि ओ हमरबला पुरजाकेँ फारि देलक।

तकरबाद ओ एकदूटा बात सुनलक आ एकटा कागज पकड़ा देलक । कागजमे चारि-पाँचटा दबाइ लिखल रहैक । ओ डाक्टरक पर्ची लेने दबाइक पाँतिमे ठाढ़ भए गेलाह । मुदा घंटा भरि बिति गेलाक बादो लोक जस-के-तस छल। केओ आगू भइए नहि रहल छल ।

"बात की छैक?"-ओ मोने-मोन सोचलक ।

मुदा ककरो किछु जबाब बूझले नहि रहैक । सभ एक-दोसरकेँ देखि पाँतिमे ठाढ़ छल ।

जखन बड़ीकाल धरि हमर पुत्र घर वापस नहि अएलाह तँ हमरा नहि रहल गेल । जेना-तेना फोन लगेलहुँ । ओ कहैत छथि-

"दबाइक पाँतिमे छी । मुदा किछु भइए नहि रहल छैक।" ताबतेमे किछु प्रहरीसभ लाठी भाँजए लागल ।

"अहाँसभ एहिठामसँ जाउ । दबाइ खतम भए गेलैक । काल्हि पता करब ।"

ई बात सुनि लोकसभ बहुत तमसा गेल । चारूकात हल्ला होबए लागल । हम फोनपर सभटा सुनि रहल छलहुँ । हुनका कहलिअनि-

“घर वापस आबि जाह । ओहिठाम जान खतरामे देलासँ कोनो फएदा नहि ।”

घंटा भरिक बाद हमर पुत्र थाकल-ठेहिआएल दबाइक पुरजा लेने घर वापस आबि गेलाह ।

17

प्रात भेने हमसभ तीनूगोटे ओछाओनपर लस्त भेल पड़ल छलहुँ । सुनबामे आएल जे लगपासमे किछु आओर लोकसभ कोरोनासँ संक्रमित भए गेल छथि । हमरसभक कालोनीकेँ सील कए देल गेल । केओ ने आबि सकैत अछि,ने केओ जा सकैत अछि । जे किछु चाही से फोनपर मुख्यद्वारिपर ठाढ़ सोसाइटीक प्रहरीकेँ कहिऔक,जँ ओ कए सकल तँ बढ़िआँ नहि तँ आकाश दिस तकैत रहि जाउ । आनलाइन सामानसभक विक्रय सेहो बंद कए देल गेल छैक । एक हिसाबे लोकसभ अपने घरमे जहलमे अछि । दबाइक दोकानसभ खुजल छैक । मुदा दोकानपर दबाइए नहि छैक। ओहनो हालतमे काल्हि हमर पुत्र पुरजा लेने भरि दिन बौआइत रहलाह। मुदा दबाइ नहि भेटलनि । सुनबामे आएल जे आइ दस बजे मुख्यद्वारिपर नेताजी अपन समर्थकसभक संगे

समाजसेवा हेतु निकलताह । ओएहसभ दुखित लोकसभक हेतु निःशुल्क दबाइ वितरण सेहो करताह । हम प्रहरीकेँ फोन कए हालतक जानकारी दैत छिऐक । ओ आश्वासन देलक जे जँ तेहन किछु हेतैक तँ अवश्य सूचित करत । सहीमे थोड़बे कालक बाद ओकर फोन आएल-

"मुख्यद्वारिपर चल आउ । नेताजीक काफिला आबि गेल छनि ।"

आखिर जेना-तेना हम अपन पुत्रेकेँ ओतए पठबैत छिअनि। ओ जाबे ओतए पहुँचलाह ताबे तँ लोकक करमान लागि गेल छल। जेना-तेना हुनका तीनूगोटेक तीनटा दबाइक झोरा भेटलनि । तीनूमे एकहि रंगक दबाइ । ओहीमे दबाइ खेबाक तरीका सेहो बताओल गेल रहैक । हमसभ तीनूगोटे ओहि दबाइकेँ खेनाइ शुरु कए दैत छी। आओर कोनो विकल्पो नहि छल । ने डाक्टर भेटैत छल,ने दबाइ । अस्पताल गेनाइ माने इनारमे खसनाइ । अस्पतालसभक परिस्थिति बहुत दुखद भए गेल छल । एहि तरहक समाचार टीभीमे अबैत रहैत छल ।

पता ने ओहि दबाइमे की छल की नहि ? दबाइ खाइते तीनूगोटेक हालत आओर खरापे होइत गेल । ततेक कमजोरी भेल जा रहल छल जे अपना हाथे पानिओ पिनाइ मोसकिल छल । केओ बाहरी आदमीक आएबाक सबाले नहि छल । तखन तँ एकमात्र समाधान अस्पताल चलि जाएब बुझाइत छल । मुदा अस्पतालसभ तँ जेना सरकस भए गेल छल । अस्पतालक बाहर जतए धरि देखाइत छल,कार,आटो,रिक्साक पाँति लागल छल । टीभीमे सभटा समाचार सद्यः देखाइत छल ।

हमर पुत्रक हालत अचानक बहुत बिगड़ि रहल छलनि। दम फुलि रहल छलनि । आब की कएल जाए ? के मदति करत? कोनो अस्पतालमे जगह नहि छल । केओ लगपासकक लोक उपलव्ध नहि छल । सभ अपन घरे-घर बंद छल । हमर लगीचक पड़ोसी तँ अपन घरकेँ तेना कए मुनि लेने छल जेना ओतए केओ अछिए नहि। ककरा कहबैक? आखिर हम स्वयं कारकेँ चला कए अपन पुत्रक संगे अस्पताल बिदा होइत छी। कोनो अस्पतालमे जोगार नहि भेल। संयोगसँ एकटा अस्पताल लग टेंट लागल देखाएल । ओहिठाम ठाढ़ भेलहुँ । ओहिठाम किछु समाजसेवीसभ छलाह । ओहीमेसँ केओ कहलक- “अहाँ अपन पता लिखा दिअ । हमसभ सभटा सामानक जोगार केने अहींक ओहिठाम पहुँचि रहल छी । दू लाख टका अगाउ लागत । से तैयार राखब । तकरबाद जँ आओर किछु लगतैक तँ सेहो देबए पड़त । जँ जल्दीए ठीक भए जाएब तँ देल अगाउ कोनो हालतमे वापस नहि कएल जाएत । जँ अहाँकेँ ई सर्तसभ स्वीकार होअए तँ फार्मपर अपन नाम,पता ,दूरभाष संख्यासभ लिखि दिऔक । दस्तखत कए दिऔक । हमसभ घंटाभरिमे ओतए पहुँचि जाएब ।”

“मुदा हमरासभकेँ की सुविधासभ भेटत?”

“सभटा, जे जरूरी होएत। माने जे. डाक्टर,नर्स,दबाइ,आक्सीजन सभटा ।”

हमरा ओकरसभक बात मानि लेबाक अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि छल । हम फार्म भरि दस्तखत कए दए देलिऐक आ वापस अपन घरपर आबि गेलहुँ । जे बात छैक । ठीक एकघंटाक

बाद एकटा रोगीवाहन हमरा घरक आगू ठाढ़ छल । ओहिमेसँ दूटा डाक्टर,नर्स आ एकटा कर्मचारी आक्सीजनक सिलिंडर लेने उतरल। सिस्टरक हाथमे झोरा छलैक । ओहिमे कतेको तरहक डाक्टरी सामानसभ राखल छल । सभगोटे माथसँ पैर धरि अपनाकेँ झपने छल । आँखि लग देखबाक जोगार रहैक । नाकसँ हवा लेबाक जोगार रहैक । आओरक किछु देखार नहि । मनुक्ख नहि,अपितु ओ सभ कोनो भूत-बेताल लागि रहल छल । ओ सभ सभसँ पहिने दूलाखक चेक लेलक आ तकरबादे हमर घरमे पैसल। हमर पुत्र लस्त पड़ल छलाह । हुनका आक्सीजन लगओलक । दबाइ,सुइआसभ देलकनि । आक्सीजनक स्तर नपबाक हेतु आक्सीमीटर सेहो देलक ।

"एकर दाम फराकसँ देबए पड़त ।"-नर्स बाजल ।

ओ सभ समय-समयपर अबैत-जाइत रहल । हमर पुत्रकेँ घरेमे आक्सीजन लगेबाक जोगार कए देलकनि । चौबीसो घंटाक हेतु नर्स व्यवस्था सेहो भेलनि । पाइ तँ पानि जकाँ बहि रहल छल। मुदा एतबा भेल जे यथासाध्य हुनकर इलाज भए रहल छलनि । नीक-बेजाए तँ किछु बूझा नहि रहल छल ।

18

आइ पाँचम दिन छल । हमर बोखार उतरि रहल छल । मुदा उकासी भइए रहल छल । हमर श्रीमतीजीक हालत सेहो नीक बुझाइत छलनि । हम साहस कए पलंगपरसँ उठैत छी। चाह बनेबाक प्यास करैत छी । मुदा माथ घुमि जाइत अछि। हाथमेसँ

दुधक बासन खसि पड़ैत अछि । बहुत मोसकिलसँ अपनाकेँ सम्हारैत छी । जेना-तेना पलंगपर वापस आबि जाइत छी । हमर श्रीमतीजी भनसा घरमे आबाज सुनि कए चौंकि जाइत छथि । मुदा हुनको पलंगपरसँ उठबाक साहस नहि होइत छनि । एहन हालतमे के ककरा देखैत? हमसभ ओहिना पलंगेपर बैसल रहि जाइत छी । थोड़े कालक बाद हमर पुत्रक देख-रेख हेतु नियुक्त नर्स अबैत अछि। ओ हुनकर जाँच-पड़ताल करैत अछि । ओकरा चिंतित देखि हमहुसभ परेसान भए जाइत छी । कहि नहि की बात छैक? मुदा ओ हमरासभकेँ किछु नहि कहैत अछि । अपन डाक्टरकेँ फोन करैत अछि । दुनूगोटमे किछु गप्प भेलैक । थोड़बे कालक बाद डाक्टरकेँ धरफराएल अबैत देखैत छी । डाक्टर साहेब हमर पुत्रक जाँच करैत छथि । किछु दबाइ लिखि दैत छथिन। फेर हमरासभ लग सहटि कए अबैत छथि-

"हिनका अस्पतालमे भर्ती करबहि पड़त। हिनकर लंग्स गड़बड़ा रहल छनि । आक्सीजनक स्तर कम भेल जा रहल छनि ।"

"मुदा अस्पतालसभमे तँ कतहु जगह नहि छैक?"

"से बात तँ ठीके । मुदा हमसभ किछु जोगार कए सकैत छी। मुदा तकर फीस अलगसँ लागत ।"

"कतेक लागत?"

"से सभ सिस्टर कहि देत । जँ विचार होअए तँ टाका जमा करबा देबैक । आगू हमसभ देख लेबैक ।"

हमसभ अबाक छी । की कहितिऐक?दुनूगोटे आपसमे चर्चा करैत छी । हम अपन श्रीमतीजीक उदास,हतास देखि रहल छी । एकमात्र पुत्रक प्राण संकटमे पड़ल देखि केओ परेसान भए जाएत? हम दुनूगोटे सर्वस्व दावपर लगाबक हेतु प्रस्तुत छी । बस,कहुना हुनकर जान बँचि जानि । हम डाक्टरकेँ जबाब दैत छी-

"ठीक छैक डाक्टर साहेब । कहुना एहि बच्चाक जान बँचा दिऔक।"

"हमसभ तँ प्रयासे ने करबैक । आगू भगवानक इच्छा। अहाँसभ जल्दी निर्णय करू । समय बरबाद नहि करू ।"

आखिर डाक्टरक बात तँ मानबेक छलैक । मोनमे बहुत अफसोच आ कष्ट होइत छल जे हमरे कारण बच्चाकेँ बिमारी पटि गेल । ओना हम ओकरासभकेँ सावधान केने रहिऐक । मुदा केओ एकरा गंभीरतासँ नहि लेलक । परिणाम सामने अछि । एहिसँ बढ़िआँ तँ हमहीसभ दुखित रहितहुँ आ बच्चा ठीक भए जाइत । भगवानकेँ तरह-तरहसँ गोहरबैत छी । डाक्टरकेँ फीस अगाउ दैत छी । थोड़बे कालक बाद एकटा रोगीवाहन अबैत अछि आ हुनका लेने चलि जाइत अछि । हमसभ मूकदर्शक बनि रहि गेलहुँ । कारण ककरो संगे जेबाक अनुमति नहि रहैक । अस्पताल गेलाक बाद ओकर व्यवस्थाक सभटा भार अस्पतालक रहैत अछि । हमसभ चुपचाप ओसारापर राखल कुर्सीपर बैसि जाइत छी । हमरासभक सामनेसँ बच्चाकेँ लेने रोगी वाहन आगू बढ़ि जाइत अछि । हम दुनूगोटे भगवानकेँ प्रार्थना करैत रहि जाइत छी । आओर कोनो विकल्पो नहि रहि गेल छल । जे भावी ।

हम दुनूगोटे क्रमशः स्वस्थ भए रहल छी । कहब जे कोनो इलाज केलासँ किछु फएदा भेल होइ से बात नहि । एकटा संयोग कहल जा सकैत अछि । पाँचदिन बितलाक बाद निरंतर हमरा लोकनिक हालतमे सुधार देखा रहल छल । कनी-मनी तागति सेहो बुझाइत छल । मुदा बच्चा लए कए हमसभ बहुत परेसानीमे रही । दिन-राति मोन ओमहरे टांगल रहैत छल । की कएल जा सकैत छल? मात्र चिंताटा करैत छलहुँ । कखनो काल अस्पतालक डाक्टरसभसँ फोनपर गप्प भए जाइत छल,ओहो बहुत मोसकिलसँ। मुदा आइ जखन डाक्टरसँ गप्प भेल तँ ओ बहुत चिंतित बुझाएल। कहलक-

“की कहू? हुनकर हालत तँ जेना गड़बड़ाइते जा रहल अछि। भए सकैत अछि भेंटिलेटरपर राखए पड़नि । मुदा एहि अस्पतालमे एकोटा भेंटिलेटर खाली नहि छैक ।”

“कोनो उपाय करिऔक?”

“की करबैक? ककरो मुँहमे सँ तँ नोचि नहि लेबैक?”

“तखन हमर बच्चाक जान कोना बाँचत?”

“भगवानेक आशा ।”

डाक्टरक मुँहे ई बात सुनि हमर श्रीमतीजी ठोह पारि कए कानए लगलीह । चारूकात लोकसभ हुनकर कानब सुनि रहल छल । सभ अपन-अपन केबार धेने ठाढ़ छल । मुदा केओ ससरि कए हुनका लगमे नहि आबि सकल । करैत की? समय-साल तेहने भए गेल छैक । मनुक्खकेँ मनुक्खसँ डर लगैत छैक । आइ-काल्हि

कोनो जीव-जन्तु एतेक परेसान नहि अछि जतेक की मनुक्ख अछि। सौंसे दुनिआक मनुक्खकेँ जेना विपल्वकाल आबि गेल छैक। हमरा लोकनिकेँ परेसान देखि डाक्टर बाजल-“हमसभ प्रयासमे लागल छी । एहि हालतमे कोनो दोसर अस्पतालमे नहि लए जा सकैत छिअनि । तेँ दोसर अस्पतालसँ किरायापर बेंटिलेटरक जोगारमे छी । भए सकैत अछि जे काज बनि जाए । मुदा अहाँसभकेँ ओकर किराया अलगसँ देबए पड़त।”

“कतेक?”

“से तँ ओहि अस्पतालसँ गप्प केलाक बादे बुझाएत । ओना मोटा-मोटी पचास हजार प्रतिदिन मानि कए चलू । कमसँ कम दस दिनक किराया लागत, माने जे पाँच लाख अतिरिक्त । से जोगार जल्दीसँ कए हमरा पठा दिअ ।”

हमसभ कनी काल गुम पड़ि गेलहुँ । फेर साहस केलहुँ। डाक्टरकेँ अपन सहमति देलिऐक । ओ खुस बुझाएल । कहलक-“उमीद राखू जे काज भए जाएत ।”

19

आइ कैकदिनक बाद मोबाइल फोन खोलि कए देखैत छी । ओहिमे कम सँ कम दसटा मिसकाल देखाइत अछि । गोपी आ मोहित कैकबेर फोन केने छल । सभसँ पहिने गोपीकेँ फोन करैत छी । हमर फोन देखि ओ चेहा उठैत अछि।

"हम तँ अहाँकेँ फोन करैत-करैत थाकि गेलहुँ । अहाँक मोबाइल सदिखन बंदे रहैत छल। आइ कोना मोन पड़लहुँ?"

"हौ की कहिअह? हमसभ गोटे कोरोनाक चपेटमे आबि गेलहुँ । केना-ने-केना हम दुनू बेकती तँ पाँचम दिन बिज्वर भए गेलहुँ । मुदा हमर पुत्रक हालत अखनो बहुत खराब छैक।"

"से की?"

"की कहिअह? हमसभ तँ सभ तरहें लुटि गेलहुँ । ओ जहिआसँ अस्पतालमे भर्ती भेलाह,टाका पानि जेना बहि रहल अछि । तइओ जान बँचनाइ मोसकिल छनि । काल्हि डाक्टर फोनपर कहलक जे हुनका भेंटिलेटरपर राखए पड़तनि। ताहि लेल पाँच लाख टाका फराकसँ चाही । हाथपर टाका नहि छल। तथापि जमीन भरना धए टाकाक जोगार केलहुँ । जान बँचि जेतनि तँ सभचीज वापस भए जेतनि । सएह सोचि कए अपना जे पार लागि रहल अछि से कए रहल छी । अफसोचक बात ई थिक जे एतेककेँ बाबजूद हुनकामे अपेक्षित सुधार नहि छनि ।"

"ई बिमारी छैहे तेहने । किछु कहल नहि जा सकैत अछि जे ककरामे कोन रूप धए लेत? एकरा आगू सभ डाक्टर हारि गेल छथि । जकरा भगवानकेँ बँचेबाक होइत छनि सएहटा बँचैत अछि। अन्यथा तँ लोक वलिप्रदानक छागर जकाँ मेमिआइत रहि जाइत अछि। किछु सुनबाइ नहि छैक।"

हमर गोपीसँ फोनपर गप्प भइए रहल छल कि हमर श्रीमतीजीक छातीमे दर्द उठलनि । कनी-मनी दर्द कैकदिनसँ होइत

रहैत छलनि । मुदा बच्चाक हालत देखि हुनकापर ध्यान नहि देल जा सकलनि । हुनकर दर्द बढ़िते जा रहल छनि । तुरंत टैक्सी बजबैत छी । हुनका लगीचक अस्पतालमे लए जाइत छी । ओ सभ पहिने हुनकर बोखार देखैत अछि। जाँचक रिपोट कोरोनामुक्त देखैत अछि तखने अस्पतालमे पैसबाक अनुमति दैत अछि,नहि तँ द्वारिएपर सँ बाहर । की समय आबि गेल? हुनका अस्पतालमे भर्ती कएल जाइत छनि। आपत्तिकालीन विभागमे सभटा जाँच कएल जाइत अछि । किछु सुइआ आ दबाइ देल जाइत छनि । तकरबाद हुनकर हालत सुधरल बुझाइत छनि । एहि बातसँ डाक्टरसभ प्रसन्न बुझाइत छथि ।

"आब बाँचि गेलीह । कोनो चिंताक बात नहि । मुदा छलनि हृदयाघाते । तँ सभटा जरूरी जाँच करबा लिअ । "आइभरि अस्पतालमे रहए दिअनु । काल्हि सभटा रिपोट आबि जाएत । तकर बाद छुट्टी कए देल जेतनि ।"

डाक्टरक बात मानि हम हुनकर सभटा जाँचसभ करबा लैत छी । एहिक्रममे चारि बाजि जाइत अछि । किछु खेने नहि छी । ओहो उपासे छथि । तँ अस्पतालेक कैंटिनसँ किछु-किछु जलखैक जोगार करैत छी । हाँइ-हाँइ जलखै खतम कए हुनका लग वापस अबैत छी । हुनको लेल किछु लेने अबैत छी । वापस हुनका लग अएलहुँ तँ ओ शायिकापर बैसल लगमे ठाढ़ अस्पतालक कर्मचारीसँ हमरा दए पुछैत रहथि । हमरा देखि ओ प्रसन्न भए जाइत छथि । कहैत छथि-

"चलू घरे चलैत छी । हम आब ठीक छी ।"

“से तँ डाक्टरो कहैत छल । मुदा कहलक जे काल्हि सभटा जाँचक रिपोटसभ आबि जेतैक । से देखलाक बाद अहाँक छुट्टी कए देत ।”

ओ चुप्प भए गेलीह ।

हमसभ ओहि राति अस्पतालेमे बितओलहुँ । दुपहरिआमे कनीक चेन भेल तँ मोबाइल देखलहुँ । ओ केना-ने-केना साइलेंट मोडमे चलि गेल छल । हमर पुत्रक डाक्टर कैकबेर फोन केने छल। हम तुरंत ओकरा फोन करैत छी । ओ तमसाएल बुझाइत अछि ।

“केहन आदमी छी अहाँ? हम एतेक बेर फोन केलहुँ मुदा आब जा कए अहाँ कए होस भेलए?”

“माफ करू । मोबाइल बंद भए गेल रहैक ।”

“अहाँक पुत्रक हालतमे किछु सुधार बुझा रहल अछि । तेँ ओकरा फिलहाल भेंटिलेटरपर नहि राखल गेल । सएह कहबाक हेतु फोन केने रही ।”

“आगू केना-की हेतैक?”

“से की कहल जा सकैत अछि? अखन किछुदिन बहुत सतर्क रहबाक काज छैक ।”

डाक्टरसँ गप्प केलाक बाद हम हुनका लग वापस आबि गेल छी । डाक्टरक हुजुम हमर श्रीमतीजीक लग अबैत अछि। हुनकर रिपोटसभ देखैत अछि । तकरबाद हमरा कहैत अछि-

“कोनो चिंताक बात नहि । कोरोनाक कारण हृदयमे किछु समस्या उत्पन्न भए गेलनि अछि । हम दबाइ लिखि देलिअनि अछि। ओएह दबाइ अखन चलतनि । एकमासक बाद फेर लेने अएबनि । जेना जे हालत रहतनि ताहि हिसाबसँ अगिला इलाज कएल जाएत ।”

“ठीक छैक डाक्टर साहेब ।”

हम डाक्टरक परामर्शक अनुसार हुनका अस्पतालसँ अपन घर वापस आनि लैत छी । हुनका आओर जे समस्या रहल होने ,मुदा हृदयसंबंधी कोनो दिक्कत नहि रहनि । मुदा ई कोरोनासँ ठीक भेलाक बाद नव समस्या उतपन्न भए गेलनि।

20

जँ हमर वश चलए तँ एहि मोबाइल आ टीभीकेँ तुरंत चभच्चामे फेकि दी । कहाँ-कहाँसँ चिंता आनि कए नित्य भोरे मोनमे भरि दैत अछि । मोबाइल तँ हद कए देने अछि । कतहु किछु भेल नहि की दोसरे क्षण बात कतए सँ कतए पहुँचि जाइत अछि । पहिलुका जमानामे कोन मोबाइल रहैक?कोन टीभी रहैक?लोक जीबैक कि नहि? आब कएल जाएत किछु नहि,मुदा चिंतासभक कपारपर बजारि देत। मुदा कएल की जाए? पुरना जमाना चलि गेलैक । आब से सभ सोचि कए काज नहि चलत । मोबाइल चाहबे करी। टीभी चाहबे करी । कखनो-कखनो ओसभ बहुत उपयोगी लगैत अछि । मुदा बेसी काल दुखदायके साबित होइत अछि ।

आइ कैकदिनसँ टीभी बंद छल । मुदा मोनो नहि मानैत छैक। टीभी देखबाक हेतु लुसफुसाइत रहैत अछि । कनीकेकाल हेतु जहाँ खोललहुँ की फेर ओएह समाचारसभ । की गाम,की सहर सभठाम त्राहिमाम मचल अछि । व्यवस्था समाप्त भए गेल अछि। बिमारी से बढ़िते जा रहल अछि । सुनैत छी जे ई बिमारी बहुरुपिआ होइत अछि । रहि-रहि कए अपन रूप बदलि रहल अछि । जाबे डाक्टरसभ किछु निदान तकैत छथि ताबे एकर प्रभाव आ क्षमता बदलि जाइत अछि। टीभी देखि-देखि मोनमे आओर क्षोभ उतपन्न होइत अछि । तेँ तमसा कए रिमोटक बटन दबबैत छी आ ओ शांत भए जाइत अछि । मुदा मोबाइलक की करब? करवनहुँ अस्पतालसँ फोन आबि सकैत अछि। तेँ एकरा खुजल राखब तँ जरूरी अछि। करवनो काल बैट्री खतम भए जाइत अछि । फोन बंद भए जाइत अछि । ताहि अवधिमे कैकटा जरूरी फोन आबि कए घुरि जाइत अछि । फोनकेँ चार्ज होइते मिसकालक पथार लागल रहैत अछि। आइ भोरे सएह भेल । अस्पतालसँ डाक्टरक फोन ,तकरबाद गोपीक कहि नहि कैकटा मिसकाल देखलहुँ। मोहितक संगीक मोबाइल संख्यासँ सेहो मिसकाल। एकर अतिरिक्त किछु अज्ञात मोबाइल संख्यासभसँ सेहो फोन आएल देखाइत अछि। बेराबेरी सभक मिसकालक जबाब करबाक प्रयासमे लागल छी । सभसँ पहिने डाक्टरकेँ फोन करैत छी । ओकर मोबाइल संख्या लगातार व्यस्त आबि रहल अछि । डाक्टरक लिखल संवाद वाट्सएपपर देखाइत अछि। ओ लिखैत छथि-

"अहाँक पुत्रक स्थिति स्थिर नहि भए रहल छनि । मुदा खरापो नहि छनि । ठीक हेबामे अखन समय लागि सकैत छनि । लंग्समे निमोनिआक लक्षण छनि । हमसभ दिन-राति प्रयासमे लागल छी । आगू भगवानक इच्छा । हुनका अस्पतालमे कम सँ कम पनरह दिन लगतनि । तेँ भए सकैत अछि जे अहाँकेँ किछु आओर टाका जमा करए पड़ए। हमसभ अपना भरि बहुत यत्न करैत छी जे ओ बँचि जाथि ।"

हम ई संवाद पढ़ि निःशब्द भए गेल छी । किछु बाजल नहि होइत अछि । हमर श्रीमतीजी तँ स्वयं अस्वस्थ छथि । तेँ अपन चिंता हुनकासँ नहि बाँटि रहल छी । मुदा हुनका स्वयं उत्सुकता होइत छनि । ओ रहि-रहि कए पुछि रहल छथि -

"अस्पतालसँ किछु समाचार आएल अछि की?"

आखिर हम बजैत छी ।

"डाक्टर लिखैत छथि जे अखन बच्चाकेँ अस्पतालमे किछु दिन आओर राखए पड़तनि । ताहि लेल टाकाक जोगार करए पड़त ।"

"चिंता किएक करैत छी? प्रयास केलासँ ने समाधान हेतैक । चिंता केलासँ तँ किछु होअए बला नहि अछि ।

"सही कहलहुँ ।"

फ्रिजमे सँ निकालि एक गिलास ठंढा पानि पिबैत छी । कनीक सुस्ताइत छी । अखबारक पन्नासभ सोफापर पड़ले-पड़ल उलटबैत छी । मोनकेँ आश्वस्त कए फेर मोबाइल निकालैत छी । गोपीकेँ फोन करैत छी । ओकर फोन लागि जाइत अछि । मुदा

पाछूसँ गाना-बजानाक आबाज सुनाइत अछि । ढोल-झाइल-हरमुनिआक संग गबैआसभ भजन गबैत सुनाइत अछि । गजबक माहौल लागि रहल अछि । एहन समयमे एतेक मनमोहकक दृश्य पहिलबेर सुनाइत अछि। ओहि हल्लामे गोपी किछु-किछु जबाब देबाक प्रयास करैत अछि । मुदा हम किछु सुनि नहि पाबि रहल छी। हम ई बात ओकरा कहैत छिऐक । आखिर ओ उठि कए कनी फटकी चलि जाइत अछि ।

“कतए चलि गेल रहिऐक । हमतँ फोन करैत-करैत तबाह भए गेलहुँ ।”

“कतए जेबेक? अस्पतालक काजमे फँसि गेल रही ।” हम ओकरासभटा बात कहैत छी । ओ बहुत ध्यानसँ हमर बातसभ सुनैत अछि । फेर अपने कहए लागल-

“आइ बहुत दिनक बाद लागि रहल अछि जेना स्वर्गमे पहुँच गेल छी ।”

“से की?”

“से तँ फोनपर सुनाएले होएत ।’

“कनी-मनी सुनाएल तँ छल । मुदा किछु अंदाज नहि लगा सकलहुँ जे ई की भए रहल छल ।”

हमरासभकेँ कोनो सबारी नहि भेटल । तरवन पैरे-पैर चलैत-चलैत महन्थस्थानमे पहुँचलहुँ । ओहिठाम तँ गजबकेँ ओरिआन अछि । जे आबए सभक स्वागत पाहुन जकाँ कएल जाइत अछि। सभक रहबाक,भोजनक,आ दबाइक व्यवस्था कएल गेल अछि ।

जिनका कनिको मोन गड़बड़ लगैत छनि तिनकर सबसँ पहिने डाक्टरी जाँच कएल जाइत अछि । फेर जरूरी भेलापर अलग इसकुलमे राखि इलाज कएल जाइत अछि । ओहिठामसँ ठीक भेलाक बादे ओ सभ आगू बढ़ैत छथि । जेसभ ठीक छथि से अपन-अपन रूचिक अनुसार भोजन करैत छथि,विश्राम करैत छथि आ जेबा काल किछु कए दक्षिणा लए बिदा होइत छथि । हमहु दू दिनसँ एतहि छी। सभटा थकान समाप्त भए गेल । आइ सोचैत रही जे बिदा होइ । मुदा महन्थजी अपने आबि कए रोकि गेलाह । हुनकर बात काटब उचित नहि बुझाएल । तेँ रुकि गेलहुँ ।

21

महन्थजीक व्यवस्थासँ ओहि इलाकाक हजारों लोकक कल्याण भए रहल अछि । ओ भोरे पूजा-पाठसँ निपटि कए आगन्तुक लोकनिक सेवामे लागि जाइत अछि । हुनका कोनो सरकारी सहायताक दरकार नहि छनि । महन्थस्थानक स्वयं प्रचूर धन-संपत्ति अछि । पाँचसएसँ बेसिए गाय अछि । ओकरा हेतु विशाल गोशाला बनाओल गेल अछि । स्थानमे रहि रहल लोकसभकेँ भोरे-भोर शुद्ध गायक दुध देल जाइत छनि । भोजनमे पाएस तँ रहिते अछि । ओ पायस खेलाक बाद किछु आओर खेबाक मोने नहि होइत छैक । जकरा जतेक मोन होइत अछि से भरि पोख पाएस खाइत अछि । रातिमे अगबे खोआक पेड़ा आ पनतोआ अनिवार्यरूपसँ परसल जाइत अछि । मालभोग चाउर,राहरिक दालि,ओलक चटनी,आलू,कोबीक सदबद आ

तिलकोरक तरुआ खाइत-खाइत सभक मोन भरि जाइत अछि । तकरबाद निचेनसँ सुति रहू । एहिठाम रहलाक बाद एक-दू दिनमे केहनो थाकल,ठेहिआएल लोकसभ हरिआ जाइत अछि।

एहि तरहें गोपी पाँचदिन महन्थस्थानमे रहि जाइत अछि। जेबाक मोने नहि होइत छैक । नव-नव लोकसभसँ भेंट-घाँट होइत रहैत छैक । साँझमे भगवानक कीर्तनक आनंद लिअ। गोपीक मुँहे ओहिस्थानक वर्णन सुनि हमहु छगुन्तामे पड़ि जाइत छी । "सएह कहू,आइओ काल्हि एहन लोक होइत छैक ।"

"तैँ ने ई दुनिआ चलि रहल अछि ।"-हमर श्रीमतीजी कहैत छथि ।

गोपीक फोनसँ बहुत रास जानकारी भेटैत अछि । अंतमे ओ इहो कहलक जे बेरिआ उखरा धरि गाम दिस बिदा भए जाएत । कारण गामसँ बेर-बेर ओकर संगी फोन कए रहल छैक । ओकर हालत ठीक नहि छैक । आइ कैकदिनसँ बोखार धेने छैक । उकासी,देहमे दर्द,रहि-रहि कए उलटीक सिकाइत छैक । ई समाचार सुनि कए गोपी परेसान भए गेलs।

"सएह कहू । लगैत अछि कोरोना गामोमे पहुँचि गेल । आब की होएत?"

ओ महन्थजीकेँ सभबात कहलकनि । ओकरासँ गामक समाचार सुनि महन्थजी सेहो चिंतित भए गेलथि । कहलखिन-"ई तँ बहुत खराब भेल । गाममे के इलाज करत? ने डाक्टर छैक,ने दबाइ। ऊपरसँ लोकमे बिमारीसँ बँचबाक चेष्टा नहि छैक ।"

“गाम गेलाक बादे सही बात पता लागि सकत ,किछु कएलो जा सकत ।”

“ठीक छैक । गाम जाउ । जँ कोनो परेसानी होअए तँ हमरा फोन जरूर करब ।”

हुनकर आज्ञा लए चारि बजेक आसपास ओ गाम बिदा भेल। भोरे-भोर गोपी गामसँ पहिने इसकुल लग पहुँचल । ओ बहुत थाकि गेल छल । ओकर पत्नीक मोन कोना दनि कए रहल छलैक। महन्थस्थानसँ बिदा भेलाक बादेसँ ओ किछु अस्वस्थ बुझाइत छलि। ओहिठाम किछुदिन रहि जाइत तँ साइत ओकर हालत सुधरि जइतैक ।

22

गामसँ एक माइल फटकिए सड़ककेँ बंद कए देल गेल रहैक। चारिटा मुस्टंड दिन-राति ओहिठाम तैनात रहैत छल । बस,कार,रिक्सा आ पैदल सबारीसभकेँ ओहिठाम उतारि देल जाइत छल । अपन गाम अएनिहार केओ नहि सोचने होएत जे अपने गाम जेबामे एहन अवरोधक सामना करए पड़तैक । मुदा सएह भए रहल छल । कोरोनाक आक्रमणसँ भयाक्रांत समस्त इलाकाक लोककेँ किछु फुरा नहि रहल छलैक। सभ एहि चिंतामे छल जे कोना जान बाँचत? गाममे कोनो डाक्टरी सुविधा नहि रहैक। इसकुलोपर किछु इंतजाम नहि रहैक । ने जलखै,ने चाह । बस एकबेर साँझमे भोजन भेटैक,ओहि नापि कए । जकरो मोन ठीक रहैक सेहो दुखित होबए लागल। जकरा जोगार छलैक से सभ

रातिमे अपन घर चलि जाए आ भोर होअएसँ पहिने इसकुलपर वापस चलि आबए ।

ओहने परिस्थितिमे गोपी अपन पत्नीक संगे कौटिल्यनगरसँ गामक बहुत लगीच धरि पहुँचि गेल छल । संगमे एकटा दू वर्षक नेना सेहो रहैक । ओहिठामसँसँ ओकर गाम तीन माइल पश्चिम रहैक । कोनो सबारी भेटबाक प्रश्ने नहि रहैक । जेना-तेना गामसँ फटकी बनल सड़कपर बनल अवरोधक धरि पहुँचि गेल । ओतए पहुँचतहि ओकर भूख,पिआस जेना आओर तेज भए गेलैक । अपना भरि ओ इसारासँ किछु कहबाक प्रयास केलकैक । मुदा जाबे केओ किछु बूझितैक,किछु करितैक ताबे गोपीक पत्नी अपन टेल्हकेँ लेने धरामसँ खसि पड़लि आ ओतहि बेहोस भए गेलि । गोपी अपना भरि चिकरबाक प्रयास केलक । मुदा ओकर मुँहमे जेना सपटी लागि गेल रहैक । किछु बजले नहि होइक । ओ सुन्न भेल किछु काल धरि पत्नी दिस तकैत रहल । मुदा कनीके कालमे ओहो ओतहि बेहोस भए खसि पड़ल । गोपी ,ओकर पत्नी आ नान्हिटा बच्चा सड़कपर बेहोस पड़ल छल । रस्ताकेँ छेकने ठाढ़ भेल मुस्टंडसभक सामनेमे अचानक घटित एहि दृश्यपर ध्यान गेलैक । ओ सभ जोर-जोरसँ चिकरल-“दौड़ैत जाउ,दौड़ैत जाउ । अनर्थ भए गेल ।.....”

हल्ला सुनितहि गौंवासभ दौड़ल ।

“ई तँ गोपी थिक ।”-एकटा गौंवा बाजल ।

“संगमे पत्नी आ नान्हिटा टेल्हो छैक ।”-दोसर बाजल।

“मुदा ई सभ तँ बेहोस अछि ।” -तेसर बाजल ।

“एकरासभकेँ तँ तुरंत डाक्टरी इलाज चाही ।”- केओ आओर बाजल ।

ताबतेमे केओ टेकर लेने आएल आ तीनूकेँ ओहिमे बैसा दूगोटेकेँ संग कए सीतापुर अस्पताल बिदा भए गेल । रस्तामे कतहु केओ नहि ,सौंसे सड़क भम्ह पड़ल छल । थोड़बे कालमे टेकर हवाइ अड्डा लग आबि गेल । ओहिठाम सड़क जाम छलैक । ओतहु गौंवासभ सड़ककेँ घेरि लेने छल । केओ ने आबि सकैत छल,ने जा सकैत छल । जे केओ बहरिआ आएल तकर सोझे स्थानीय स्कूलमे लए जाइत छल । गौंवासभ एहू टेकरकेँ रोकि देलक। ओहिमे बैसल लोकसभ कतबो गोहरेलकैक,ओ सभ नहि मानलकैक ।

“बूझि नहि रहल छहक तूँ। सौंसे देशेमे तालाबंदी छैक। ककरो आएब-जाएब मना छैक । एनामे तोरा कोना आगू जाए देल जेतह? तूँही बाजह?”

“देखैत नहि छहक जे तीनूगोटे बेहोस पड़ल छैक । जँ कनीको देरी भेलैक तँ ठामहि रहि जाएत ।”

“जाए दही । एकर स्थिति बहुत गंभीर बुझा रहल छैक।”- ओहीमे सँ केओ बाजल ।

आखिर टेकर आगू बढ़ल । सीतापुर सरकारी अस्पताल धरि पहुँचल । अस्पतालक मुख्यद्वारिपर एकटा प्रहरी रोकलकैक ।

“की बात छैक? कतए जा रहल छह? ”

“से देखा नहि रहल छह? ”-टेकरमे बैसल गोपीक गौंवा बाजल ।

“अस्पताल जा कए की हेतह? ओहिठाम केओ नहि अछि। ने डाक्टर, ने नर्स ।”

“तखन कतए जाउ?”

“सेहो कहबाक काज । डाक्टर ओझाक ओहिठाम चलि जाह । बहुत बढ़िआँक इलाज करैत छथि । आओर कतहु नहि जाह । व्यर्थमे ठकेबह। टाको लए लेतह आ काजो खराब खए देतह।”

कतोबो प्रयास केलक प्रहरी अस्पतालक द्वारि नहि खोललक। अपन बातपर अड़ल रहल । आखिर ओ सभ डाक्टर ओझाक क्लिनिक दिस टेकर मोड़लक । जाबे-जाबे टेकर ओतए पहुँचैत टेल्ह निष्प्राण भए गेल छल । गोपी आ ओकर पत्नीक साँस चलि रहल छलैक । गोपीकेँ कनी-मनी होस आबि गेल रहैक । ओकर पत्नी सेहो करोट बदललक। मुदा दुनूमे सँ ककरो उठल नहि होइक । जेना-तेना ओकरासभकेँ उठा-पुठा कए डाक्टर साहेबक क्लीनिकमे आनल गेल।

ओकरासभकेँ देखितहि डाक्टरक आदमीसभ मुख्यद्वारि बंद कए देलक । ओ सभ कतबो नेहोरा केलकैक मुदा किछु सुनबाइ नहि भेलैक। फटकिएसँ इसारासँ कहलकैक जे सरकारी अस्पताल चलि जाए । ओ सभ सएह केलक । एहि बेर सरकारी अस्पतालक पाछू दिस गेल । पछिलका द्वारि खुजल छलैक । जेना-तेना ओ सभ अस्पतालक भीतर पहुँचल । ओहिठाम कोरोनाक रोगीक करमान लागल छल । गौंवासभ गोपी आ ओकर पत्नीकेँ ओतए

छोड़ि गाम वापस भए गेल । अस्पतालमे पड़ल- पड़ल साँझ धरि दुनूगोटेकेँ देहमे किछु जान अएलैक । डाक्टरसभ पानि चढ़ा देने रहैक । सुइआ आ किछु दबाइ सेहो देने रहैक। ओकर असर भेलैक। दुनूगोटे उठि बैसल । तखने ओकरासभकेँ टेल्हक अनुपस्थितिक अंदाज भेलैक । तकरबाद तँ ओतए भयानक दृश्य उत्पन्न भए गेल । ओकर पत्नी बफारि पारि रहल छल । गोपीक आँखिसँ अश्रुप्रवाह रुकबाक नामे नहि लैत छल । एहन दृश्य ओहिठाम चारूकात पसरल छल । के ककरा सम्हारैत ? आखिर,कनैत-कनैत ओकर पत्नीक आँखि लागि गेलैक।

साँझमे गोपी हमरा फोनसँ सभटा समाचार कहलक । समाचार सुनि हम बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ । मुदा कइए की सकैत छलहुँ? हमरा तँ अपने घरमे उरी-बिरी लागल अछि । पुत्रक हालत ठीक नहि अछि । पत्नीकेँ हृदयरोग भए गेलन अछि । कोरोनासँ ठीक भेलाक बाद ई नवका उकबा भए गेलनि । जखन की पहिने हुनका एहि तरहक कोनो सिकाइत नहि छलनि । पानि जकाँ टाका बहि रहल अछि ,मुदा हमर पुत्रक हालतमे कोनो सुधार नहि बुझा रहल अछि । कखनो किछु,कखनो किछु होइत रहैत छनि । भगवान जानथि,आगू कि होएत?

23

आइ भोरेसँ गाम मोन पड़ि रहल अछि । बितल-बितल बातसभ जेना आँखिक आगू नाचि रहल अछि । रातिमे सपनामे से पुरने बातसभ देखने रही । बाबा,नानी,माए,पढ़ुआ काकासभगोटे

स्वर्गक मुख्यद्वारिपर ठाढ़ हमर स्वागत कए रहल छथि । हमर पिता कहि रहल छथि-"आबह,आबह । तूँ बहुत थाकि गेल छह । लगैत अछि, कतेकोदिनसँ सुतलह नहि। आब बहुत भए गेलैक । छोड़ह मोह वंधन । मुक्त भए जाह ।"

"ई की सभ बकैत छी? हमरा अखन बहुत काज करबाक अछि । गामपर घर बनेबाक अछि । कौटिल्यनगरमे सेहो सभटा ओहिना ओझराएल पड़ल अछि । कारखानाक स्थिति से गड़बड़ा गेल अछि । जे ने करए कोरोना ।"

"हौ! तूँ सभदिन मूर्खे रहि गेलह । कोरोना तँ बहाना छैक । भगवान शिव संहार कए रहल छथिन । ई तँ हुनकर पुरान काज छनि । संहार भए रहल छैक तँ निर्माणो हेतैक । लोकक परेसानीक कारण माया थिकैक । ककरो अपन जमीनक चिंता छैक,ककरो मकानक । केओ अपन संतान लए चिंतित अछि । चेन केओ नहि अछि । राजा,रंक,फकीरसभ मायामे बौआ रहल अछि । जे जतेक बूढ़ भेल से ततेक मोहग्रस्त भेल जाइत अछि । केओ पोताक बिआह देखत,ककरो नातिनक चिंता छैक । केओ भैयारी झगड़ामे तेना ने ओझराएल अछि जे आगू-पाछू किछु नहि सुझि रहल छैक।

"तँ अहाँक विचारसँ बिमार पत्नी आ पुत्रकेँ छोड़ि हम अहाँ लग आबि जाउ ।"

"तूँ तँ एना बाजि रहल छह जेना यमराज तोरे आज्ञासँ चलताह । हौ! हुनका ब्रह्माजीक जे आदेश हेतनि सएह ने करताह।"

"मुदा हमरा अखन बकसि दिअ । हम बहुत ओझरमे पड़ल छी ।"

ओ सभ हमरापर हँसैत छथि आ क्रमशः फटकी भेल जा रहल छथि । हमर निन्न टुटि जाइत अछि । कतहु किछु नहि देखाइत अछि।

ईसभ हमर मोनक भ्रम छल,से सचि ओहि बातसभकेँ बिसरबाक प्रयास करैत छी । मुदा मोन शङ्काग्रस्त तँ भइए गेल अछि । भोर भेने रातुक सपनाक विचार कए चिंता होइत अछि । एहन सपनाकेँ शुभ नहि मानल जाइत अछि। जे आछि,से अछि । कइए की सकैत छी? जे संभव छैक से कएल जाए आ से कइए रहल छी ।

गोपीक मुँहे महन्थजीक चर्चा सुनि बच्चाक बातसभ मोन पड़ि जाइत अछि । ओ स्थान हमरा गामसँ सटले छैक । बच्चामे इसकुल अबैत-जाइत हमसभ ओहिठाम रुकि जाइत छलहुँ । चापाकलपर पुदिनाक पातकेँ डोलभरि पानिमे मिला कए पिबैत छलहुँ । गर्मीक मौसममे ओकर आनंदे अलग छल। जौँ महन्थजी देखि लितथि तँ कोनो बच्चाकेँ खाली हाथ नहि जाए दितथि । सभक हाथमे मिसरी,छहारा,किसमिस भरि-भरि मुठ्ठी भरि दैत छलखिन । हमसभ से सभ खाइत-पिबैत इसकुल चलि जाइत छलहुँ । कौटिल्यनगर अएलाक बाद सुनलिऐक जे बूढ़ा महन्थजी गुजरि गेलाह। हुनका स्थानपर हुनकर चेला आब वर्तमानमे महन्थ छथि । ई तँ आओर यशस्वी निकललाह ।

हम इएहसभ सोचि रहल छलहुँ की अचानक डाक्टरक फोन आएल । तत्काल सपनाक दुनिआसँ निकलि कए हम यथार्थमे

पहुँचि गेलहुँ । फोनमे डाक्टरक चिंतित स्वर सुनि हमरा जेना मुरछा मारि दैत अछि । तकरबाद तँ ओ की-की बजैत गेलाह से किछु ध्यानमे नहि रहल । हमरा गुम्मी लदने देखि डाक्टरकेँ चिंता भेलैक। ओ हमर मन:स्थिति बुझलक । फेरसँ कहलक-

"अहाँक पुत्रक हालत ठीक नहि छनि । जल्दी अस्पताल आबि जाउ ।"

हम जेना-तेना पत्नीकेँ संगे कए अस्पताल पहुँचि जाइत छी। रस्ता कोना बितलैक से किछु नहि बूझि सकलिऐक । अस्पतालक मुख्यद्वारिएपर सिस्टर भेटि गेलि। ओ हमरे पुत्रक हेतु कोनो दबाइ आनि रहल छलि । हमरासभकेँ देखि ओ बाजलि-

"अहींक पुत्रक दबाइ आनि रहल छी ।"

"की हाल छैक ओकर?"

"बहुत खराब । ओकर लंग्स खराब भए गेल छैक । कहुना कए साँस चलाओल जा रहल छैक ।"

"तखन?"

"से तँ डाक्टरे कहताह ।"

हम धरफराए डाक्टरकेँ तकैत ओकर कक्षमे पहुँचि जाइत छी । हमर पत्नी सेहो संगे जेबाक हेतु जोर मारि रहल छलीह । मुदा एक समयमे एकेगोटे जा सकैत छलहुँ । तेँ हम हुनका बारे बेंचपर बैसा देलिअनि आ अपने आगू बढ़ि गेलहुँ। डाक्टरक चेंबर खाली छलैक । ओतहि खाली कुर्सीपर बैसि गेलहुँ । थोड़े कालक बाद

डाक्टर साहेब अबैत छथि । हमरा देखितहि उदास भए जाइत छथि। हम किछु पुछितिअनि ताहिसँ पहिने ओ अपने कहैत छथि-

“हुनकर हालत ठीक नहि छनि । लंग्स साफे बैसि गेलनि अछि । फिलहाल मसीन लगा देने छिअनि । मुदा एकर खर्चा बहुत छैक ।”

“कतेक?”

“प्रतिदिन दूलाख ।”

हम किछु जबाब नहि दए सकलिअनि । डाक्टरक बात सुनिकए माथ काज केनाइ बंद कए देलक । डाक्टर ई बात बुझलक। कहैत अछि -

“देखिऔक । हम-अहाँ प्रयासे ने करबैक । मुदा जीवन तँ भगवानेक हाथ छनि । ई कोनो असगरे एहि हालमे नहि छथि । सौंसे अस्पतालमे इएह हाल छैक । केओ बँचि जाइत अछि, केओ चलि जाइत अछि । एहिमे ओकर भाग्ये काज करैत छैक । हमरा लोकनि तँ निमित्तमात्र छी ।”

“हम की करू?”

“असलमे एहि बिमारीक आब एकमात्र समाधान हिनकर लंग्सक प्रत्यारोपणे थिक ।”

“ओहिमे कतेक खर्चा लगतैक?”

“एक करोड़ । सेहो लंग्स भेटत तखन ने। फिलहाल अहाँ घर वापस जाउ । निचेनसँ आपसमे विचार कए लेब । हमहु ताबे जे पार लगैत अछि से कइए रहल छी ।”

24

हम अपन पुत्रक लंग्स प्रत्यारोपणक हेतु एक करोड़ टाकाक जोगारमे लागल छलहुँ । सोचलिऐक जे कारखानाकेँ बेचि देबैक, घर बेचि देबैक आ गामे चलि जाएब । शेष जीवन ओतहि बिता लेब । मुदा लंग्स कतएसँ आओत? ओकर जोगार होएब बहुत मोसकिल बूझा रहल छल । एमहर हमर श्रीमतीजीक हालत सेहो गड़बड़ाइते जा रहल छनि । जहिआसँ पुत्र अस्पताल गेलखिन,नीकसँ भोजन नहि केलीह अछि । राति भरि कछमछ करैत रहैत छथि । कखनो-कखनो सुतलेमे डरा जाइत छथि । एकराति तँ बुझाएल जेना सुतलेमे भगवानकेँ गोहरा रहल छथि-

“हे भगवान! हे भगवान! हमर पुत्रकेँ बकसि दिअ । ओहि बदलामे हमरे लए चलू । हम जेबाक हेतु तैयार छी ।” दूपहर रातिमे हुनका बड़बड़ाइत सुनि कए हमर निन्न टुटि गेल। ओहुना निन्न होइत कहाँ अछि । कनीके काल पहिने आँखि लागि गेल रहए । हुनका बड़बड़ाइत सुनि कए निन्न टुटि गेल छल ।

नित्यप्रति जकाँ आइओ भोर भेलैक । हम अपने चाह बनेलहुँ । हुनको चाह देलिअनि , अपनो लेलहुँ । चाह पिनाइ शुरु करैत छी की फोनक घंटी बजैत अछि।

“अहाँक पुत्र नहि रहलाह । जल्दी अस्पताल आबि जाउ ।”

हाथसँ चाह खसि पड़ैत अछि । ओ हमरा दिस देखैत छथि। हुनको चाहक कप हाथसँ छुटि जाइत छनि ।

"की भेलैक? की भेलैक?" -से कहि ओ सोफापर टगि जाइत छथि ।

"बौआ.."

हम एतबे बजलहुँ की ओ चिकरि उठलीह की भेलैक बौआकेँ..?

"बौआ..."

ओ धराम दए खसैत छथि । किछु बजबाक प्रयास करैत छथि आ सोफापर बामा दिस टगि जाइत छथि । हम हतप्रभ हुनका देखैत रहि जाइत छी । हमरा चिकरैत-भोकरैत सुनि कए केओ पुलिसकेँ फोन कए देलकैक । पुलिस अबितहि रोगीवाहन बजा लेलक । हमर श्रीमतीजीकेँ ओहिमे जेना-तेना पारि देल गेलनि । हमहु बगलमे बैसि गेलहुँ। रोगीवाहन अस्पतालक द्वारिपर रुकि जाइत अछि । आपत्तिकालीन विभागक डाक्टर ओतहि हुनका आला लगा कए देखैत छथि।

"ई तँ खतम छथि ।" -डाक्टर बाजल । हमर माथा काज केनाइ जेना बंद कए देने अछि । ओही अस्पतालक दोसर तलपर कोरोना रोगीक इलाज होइत छैक । मुदा हमर पुत्र तँ आब एकटा डिब्बामे राखि देल गेल रहथि । डाक्टरसभ हमरा चिन्हलक ।

हम बहुत आग्रह केलिऐक जे हमरा ओकर मुँह एकबेर देखा देल जाए । मुदा ओ सभ हमर बात नहि मानलक । डाक्टर,नर्स सभकेँ खुसामद केलिऐक । मुदा केओ सुनबाक हेतु तैयार नहि । सभ एतबे बाजए-

"कोरोनासँ मृत रोगीक लास खोलल नहि जाइत छैक । ओ पैक भए गेल छैक आ ओहिनाक ओहिना जरा देल जेतैक।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि । अहाँसभ मनुक्ख छी की जानबर? हम अपन संतानक मुँहो नहि देखि सकब आ ओ जरा देल जाएत।"

केओ किछु नहि बाजल । सभ एमहर-ओमहर पसरि गेल । हम ओहिना चिकरैत-भोकरैत रहि गेलहुँ । थोड़बे कालमे हमरा लगपासमे बहुत रास लोक जमा भए गेल । डाक्टर,नर्स,अस्पतालक कर्मचारीसभ हमरा ठोह पारैत देखि दुखी छल ,कानि रहल छल। मुदा केओ की कए लैत? कहि नहि कोरोना कतेक घर उजाड़लक आ उजाड़त?अपना भरि डाक्टर साहेब हमरा बौसबाक बहुत प्रयास केलक । मुदा हमरा तँ किछु ने सुना रहल छल,ने देखा रहल छल । लगपासमे ठाढ़ अस्पतालक कर्मचारीसभ हमरा पकड़ि लेलक। हम कातमे बैसा देल गेलहुँ । ओ बक्सा आगू चलि गेल- अंतिम यात्रापर। हम किछु नहि बाजि सकलहुँ,किछु नहि कए सकलहुँ । कोरोनासँ संक्रमित रोगीक लहासक दुर्दशा देखबाक हेतु हम ओहिठाम नहि रहि सकलहुँ ।

पुलिस हमरा श्रीमतीजीक लहासक संगे रोगीवाहनसँ अंतिमनिवास पहुँचा देलक । थोड़े कालक बाद हमर पुत्रक बक्सामे राखल लहास सेहो आबि गेल । दुनू लहासकेँ एकहि संगे पुलिस स्वाहा कए देलक । हम देखैत रहि गेलहुँ। केओ परिचित,मित्र,संबंधी ओहिठाम नहि आबि सकलाह । एहन बिकट स्थितिमे हम केना ठाढ़ रहि गेलहुँ से स्वयं नहि बुझाइत छल ।

हम अपन घर वापस भेलहुँ । नितांत असगर । लगैत छल जेना चारूकातसँ एकहि आबाज आबि रहल अछि । "अगुताह नहि। शिवजीक संहार चलि रहल अछि । जल्दीए एकरो अंत होएत। फेर नवसृजन होएत । धैर्य राखह।"

हम किछु बाजि नहि पबैत छी । नीकसँ सुनिओ नहि पाबि रहल छी । केओ कतहु अछिओ नहि । तखन ई आबाज कतएसँ आबि रहल अछि? ताबतेमे केबारमे केओ ठकठकबैत अछि । हम मोहितकेँ देखि आश्चर्यमे पड़ि जाइत छी। ओ हमरा प्रणाम करैत अछि । हम किछु जबाब नहि दए पबैत छी। मोहितक पाछा-पाछा ओकर पत्नी सेहो छलि। ओकरा आइ कैकदिनक बाद एकांतवाससँ मुक्ति भेटल छलैक। पत्नीकेँ लेबाक हेतु मोहित वापस आएल छल। सोचलक जे अखन एतेक दूर आबिए गेल छी तँ हमरोसँ भेंट कए ली । मुदा हमर घरक ई हाल होएत से ओ सपनोमे नहि सोचने रहल होएत । मोहित दुनू बेकती हमरा लग बैसि जाइत अछि । ओ बेरि-बेरि हमर हाल-चाल पुछैत अछि ।

"की भेलैक? की भेलैक?"

मुदा हम ओकर प्रश्नक जबाब देबाक स्थितिमे नहि छी। हम चुपचाप ओकरासभकेँ देखैत रहि जाइत छी ।

25

एहन संकटक समयमे मोहित सपत्नीक आबि कए हमर जान बँचा लेलक । जँ ओ नहि अबैत तँ कहि नहि आइ हमर की गति

रहैत? कोरोनाक बादसँ देहमे बहुत कमजोरी लगैत रहैत अछि । चारिओ डेग चलबामे आलस्य होइत रहैत अछि। करवनहु ठेहुन,करवनहु जांघ,करवनहु माथ दुखाइत रहैत अछि । भोजनमे रुचि तँ लगिते नहि अछि । रहैत अछि,रहैत अछि पेटमे दर्द होबए लगैत अछि । ई सिकाइतसभ कोरोना भेलाक बादे भेल अछि । पहिने तँ केहन बढ़िआँ रही । खूब भूख लगैत छल । घरक सभटा काज अपने करैत छलहुँ । लिखैत-पढ़ैत छलहुँ । बेसक कोरोनासँ हम बाँचि गेलहुँ ,मुदा ई बिमारी हमरा अधमरु कए देलक । ऊपरसँ घातपर-घात । केना सहि सकब? जीबाक इच्छा समाप्त भए गेल अछि । तखन तँ मनुक्ख होइते अछि पाथर। असलमे केओ ने अपने जीबि सकैत अछि,ने मरि सकैत अछि। सभ लिखलाहा होइत छैक ।

भोरे उठि कए सोफापर पड़ल छलहुँ । मोहित हमरा लग बैसल छल । ओकर पत्नी चाह बना कए अनलक । हमरा चाह पिबाक कनीको मोन नहि होइत छल । मुदा मोहित दुराग्रह कए देलक , नहि मानलक । हारि कए चाह पिबहि पड़ल । मोसकिलसँ चाहक दू घूंट लेने छलहुँ कि घरक घंटी बाजल । देखैत छी हमर पुत्र ठाढ़ छथि । अस्पतालक अधीक्षक स्वयं किछु आओर डाक्टरसभक संगे ओकरा संगे आएल छथि । हम ई दृश्यपर विश्वास नहि कए पाबि रहल छलहुँ । होअए जे कहीं भूत तँ नहि आबि गेल । हम जोरसँ चिकरलहुँ-

“भूत-भूत...”

मोहित हमरा पकड़ि लैत अछि । केबारसँ बाहर देखैत अछि। ओ हमर पुत्रसँ पूर्वपरिचित छल । ओहीठाम ठाढ़ अस्पतालक अधीक्षक बजैत छथि-

"ओ अपने कहाँ छथि?"

"की बात?

"कनी बजा दिअ । हुनकेसँ गप्प करबाक अछि ।"

मोहित हमरा घरसँ बाहर अनैत अछि । हमरा देखितहि हमर पुत्र प्रणाम करैत छथि । हम आश्चर्यचकित छी।

"ई की देखि रहल छी?"

"सही देखि रहल छी ।"-डाक्टर बाजल ।

"हमसभ अपनेसँ माफी मांगि रहल छी । असलमे ओ लहास दोसर रोगीक रहैक। दुनूक बएस एकहि छलैक । शायिका सेहो लगे-पासमे रहैक । देखितो एकहि रंग छल । ओहुना रोगीसभक सौंसे देह तँ झाँपल रहैत छैक । तेँ सिस्टरकेँ गलती भए गेलैक । अपनेकेँ गलत सूचना देल गेल । अपनेक पुत्र सुरक्षित छथि । हुनका तँ बेसी समस्या नहि रहनि ।"

"मुदा हमरा तँ कहल गेल जे हुनकर लंग्स खराब भए गेल छनि ।

"ओ गलत सूचना रहैक । ओ स्थिति बगलक दोसर रोगीक रहैक । कागजक अदला-बदली भए गेलैक । डाक्टरसभ कागज देखि कए अहाँकेँ सूचित कए देलक । केओ रोगी लग नहि गेल ।

"मुदा ई तँ बड़का अनर्थ भेल ।"

"हमसभ घटी मांगि रहल छी ।"

"मुदा ताहिसँ की हमर पत्नी वापस आबि जेतीह?"

डाक्टर आ ओकरा संगे आएल ओकर संगीसभ मुड़ी नीचाँ कए लेलक । किछु जबाब नहि दए सकल । अस्पतालक अधीक्षक हमरा एकटा चेक देलक आ बाजल- "अहाँक जे टाका अस्पताल लेने छल से सभ वापस कएल जाइत अछि ।" हम ओकरा दिस बकर-बकर तकैत रहि जाइत छी । मोहित परिस्थितिकेँ बुझैत माहौलकेँ हल्लुक करबाक प्रयास करैत अछि ।

"भेलैक तँ बहुत जुलुम डाक्टर साहेब । मुदा जाए दिअ। बच्चाक जान बाँचल छैक सएह बड़का बात ।" -मोहित बाजल । डाक्टरसभ फेरसँ गलती मानलक आ बिदा भए गेल। हम अपन पुत्रकेँ घरमे बैसल देखि फेरसँ जीबि गेल छी। मोहितक पत्नी फेरसँ सभगोटेक लेल चाह बनबैत अछि । सभगोटे चाह पिबैत छी । माहौल एकदमसँ एना बदलि जाएत आ ओ वापस आबि जेताह से हमर कल्पनोमे नहि छल । से सद्यः देखि रहल छी ।

हमसभ आपसमे गप्प-सप्प करैत रही । अस्पतालसँ प्राप्त चेककेँ जमा करबाक हेतु मोहितकेँ पठा देलिऐक । हम अपने अपन पुत्रक संगे गप्प-सप्पमे लागि जाइत छी । समय कोना बितल से नहि बूझा रहल छल । एतबहिमे मकानक द्वारिपर हल्ला सुनाइत अछि । नाना प्रकारक मोटरगाड़ीक हमरा घरक आगूमे पाँति लागि गेल अछि । मेडिआ,अखबार,रेडिओ सभठामक पत्रकारसभ हमरा ताकि रहल छथि । सभकेँ एहि घटनाक खबरि कतहुसँ भेटि गेलैक

अछि । ओ सभ हमरा मुँहे सभटा बात सुनए चाहैत अछि । हम केबार नहि खोलि रहल छी । मुदा ओ सभ केबारसँ सटले जा रहल अछि । केओ ककरो बात नहि सुनि पाबि रहल अछि । हल्ला सुनि कए पुलिस से पहुँचि गेल अछि । विपक्षी नेतासभ सेहो आबि रहल छथि । ओमहर एकर जानकारी सरकारकेँ सेहो होइत छैक । मंत्रीसभ हमरा फोनपर फोन करैत छथि। जखन हम ककरो फोन नहि सुनलिऐक तँ मुख्यमंत्री स्वयं फोन करैत छथि ।

हम मुख्यमंत्रीजीक फोन सुनि रहल छी । ताबे मेडिआक हुजुम जबरदस्ती हमरा घरमे पैसि जाइत अछि । चारूकातसँ हमरा घेरि लैत अछि । ककरो हाथमे कैमरा,ककरो हाथमे माइक,केओ मोबाइलेकेँ लेने हमरा मुखातिब अछि । हम ककरा की कहिऔक? ओमहर मुख्यमंत्रीजी हमरा दू करोड़क राहत देबाक आश्वासन दैत छथि । संगे कहैत छथि-"अहाँ एकरासभक बातमे नहि आएब। चेनसँ अराम करू । सभटा समस्या हम ठीक कए देब। अपनोक इलाजक ओरिआन हम करबा रहल छी ।"

हम किछु नहि बजैत छी । बाजिओ नहि सकैत छी । चारूकात तँ मेडिआक भीड़ लागल अछि । एहनमे की ककरा कहल जाए? लगैत अछि जे ओ सभ हमरा मुँहमे माइक घुसिआ देत ।

"मुख्यमंत्रीजी की कहलाह?"

"ओ जरूर किछु लालच देने हेताह ।"

"अहाँ हुनकर बातमे नहि आउ । हमरासभकेँ सत्यबात कहू। हमसभ अहाँक दुख-दर्द सौंसे देशक सामने लाएब जाहिसँ एहन जुलुम आओर ककरो संग नहि होइक ।"

ताबते विपक्षी नेता एकटा चेक लेने प्रकट होइत छथि। हमरा प्रणाम करैत छथि ।

"अहाँ ई चेक स्वीकार करू । ई जनताक तरफसँ अपनेक मदति देल जा रहल अछि । अहाँ सरकारक पमौजीमे नहि रहू। हमसभ मुख्यमंत्रीकेँ हटाइएक रहब । ओ बहुत जुलुम केने जा रहल अछि । अस्पतालसँ श्मशान धरि कोनो व्यवस्था नहि अछि । तैओ अपन गलती मानबाक हेतु तैयार नहि अछि । उल्टे अहाँक मुँह बंद करबाक फिराकमे अछि ।"

प्रतिपक्षी नेता बाजिए रहल छल कि मुख्यमंत्रीजी सदल-वल स्वयं पहुँचि गेलाह । हुनका संगे-संगे पुलिसक दूटा गाड़ी चलि रहल छल । हमर घरक चारूकात पुलिस छावनी बनि गेल छल । मुख्यमंत्रीक पहुँचतहि ओकर समर्थकसभ "मुख्यमंत्रजी जिंदाबाद"क नारा लगबए लागल । से सुनि विपक्षी नेता किएक पाछू रहैत । ओकर चेलासभ लाठी भाँजए लागल । हमरा तँ अकबक नहि फुरा रहल छल । बाहरक कोठरीमे लोकक मिस पड़ि रहल छल । ओहिठामसँ एको इंच ससरबाक जगह नहि छल ।

सौंसे देश हमरा देखि रहल छल । मुख्यमंत्री,विपक्षी नेता,जनता ,पत्रकार,सभ हमरे दिस ताकि रहल छल । हमर मोन छटपट कए रहल छल । होइत छल जे जोरसँ चिकरी । सभकेँ सही बात बूझा दिऐक । मुदा बाजलो नहि होअए । चारूकातसँ पुलिस तेना घेर लेने छल जेना हम कोनो खूनी मोकदमामे मुजरिम होइ । तकरबाद तँ जे भेल से की कहू। देहमे जतेक जान छल ततेक जोरसँ चिकरैत छी –

"भागै जाह एहिठामसँ । तूसभगोटे खूनी छैं । हमर पत्नीक हत्यारा छैं । अस्पतालमे लुटि भए रहल अछि । लोक अपन निकट संबंधीक जान बँचेबाक हेतु घर-घराड़ी बेचि रहल अछि । हमर जीवित पुत्रकेँ मरल घोषित कए देल गेल । से सुनि हमर पत्नीक जान चलि गेलनि । आब हमरा बुझेलासँ की होएत?"

कहि नहि हम कोना एतेक बाजि गेलहुँ । ततबे नहि, हम मुख्यमंत्रीजीक देल चेककेँ टुकड़ी-टुकड़ी कए दैत छी । पत्रकारसभ धराधर हमर बातकेँ टेलीवीजनपर प्रसारित कए देलक। सौंसे देश से देखलक । मुख्यमंत्रीजीक काफिला तुरंत ओहिठामसँ बिदा भए जाइत अछि । तकर तुरंतबाद पुलिस हमरा पछिला कोठरीमे बंद कए दैत अछि। पत्रकारसभक भीड़ जखन नहिए हटल तखन ओकरोसभपर लाठी बरसाओल गेल । प्रतिपक्षक नेताक लेल एहिसँ नीक अवसर की भए सकैत छलनि? ओ ठामहि आमरण अनसनपर बैसि गेलाह।

हम अपने घरमे बंद कए देल गेल छी । हमर घरक बाहर पुलिसक पहरा दए रहल अछि । ने केओ आबि सकैत अछि,ने केओ जा सकैत अछि । हमर पुत्र,मोहित आ ओकर पत्नी कहि नहि कतए पुलिस लेने चलि गेल । हमर आँखिसँ नोर झहरि रहल अछि। बुझाए नहि रहल अछि जे ई की भेल,किएक भेल? एहिमे हमर की गलती अछि? मुदा से सभ ककरा कहबै,के सुनत? एहिठाम तँ हम घरेमे जहलमे छी । विपक्षी नेताक अनसन चलि रहल अछि । मेडिआ पत्रकारक आबाजाही चलिए रहल अछि । लाख प्रयासक बादो पुलिस मेडिआकेँ नहि रोकि सकल । ओ सभ तरह-तरहक ब्योंत कए सौंसे देशकेँ समाचार सद्यः पहुँचा रहल

अछि । एकटा मामुली आदमीसँ जुड़ल ई घटना एहन रूप धए लेत से साइते केओ सोचने होएत ? मुदा से भए रहल अछि ।

हम एकसर ओहि कोठरीमे चौकीपर बैसल छी । ताबतेमे खिड़की बाटे एकटा पत्रकार किछु हमरा सामने चौकीपर फेकि दैत अछि । हम ओकरा उठा लैत छी । तरह-तरहक सबाल ओहिमे सुनाइत अछि । मुदा हम किछु जबाब नहि दए पबैत छी । मुदा ई बात तँ सद्यः देखाइत अछि जे हम अपने घरमे नजरबंद छी ।

26

भोरे जखन हमर निन्न टुटल तँ हम एकटा सरकारी अतिथिगृहमे पलंगपर पड़ल छलहुँ । कहि नहि सकैत छी जे करवन आ कोना हम अपन घरक एकांतबाससँ एतए पहुँचि गेल रही । हमरा एतए के अनलक? हम उठि कए बैसले रही कि दोसर कोठरीसँ हमर पुत्र,मोहित आ ओकर पत्नीक आपसी गप्प-सप्प करैत सुनाएल । ओकरासभकेँ नहि बूझल रहैक जे हमहु ओकरे लगीचमे आबि गेल छी । थोड़बे कालक बाद एकटा सरकारी आदमी हमरासभकेँ अतिथिगृहक भोजनालयमे लए गेल । ओतहि हमरा लोकनिक भेंट होइत अछि । हुनकासभसँ भेंट केलाक बाद हम बहुत आश्वस्त भेलहुँ । हमरासभक सामनेमे चाहकसंग जलखैक तरह-तरहक सामानसभ राखल छल । हमसभ चाह पिनाइ शुरुए केने रही की मुख्यमंत्रीजी स्वयं आबि गेलाह । बहुत

विनम्रतासँ हमरा हाथमे दू करोड़क चेक थम्हा देलाह । कहलाह- “जे भेलैक से बहुत गलत भेलैक । हमसभ प्रयासमे छी जे आगू एना नहि होइक । अहाँकेँ बहुत कष्ट भेल से हमसभ जनैत छी । ताहि हेतु हम सभगोटे क्षमाप्रार्थी छी ।”- से बाजि ओ चुप भय गेलाह । हमर पुत्र हमरा इसारा केलनि। कहक माने जे मुख्यमंत्रजीक बात मानि लेल जानि । हम की करितहुँ? हुनकर चेक राखि लेलहुँ । एहिसँ पहिने अस्पताल आ विपक्षीनेतासभक चेक हमरा सेहो भेटि गेल रहए । एतेक रास टाका एकमुस्त आबि गेल रहए । एकर की कएल जाए? हमरा चिंतित देखि हमर पुत्र पुछैत छथि-“आब की भेल?”

“किछु नहि । आब की होएत? जे हेबाक छल से तँ पहिने भए चुकल । मुदा एतेक टाका लए हम करब की?”

“सभटा बात अखने सोचि लेब? माहौल शांत हेतैक तकर बाद एहिपर बिचारि लेब ।”

मुख्यमंत्रीजी मुस्कुराइत हमरा लोकनिकेँ अभिवादन करैत ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेलाह ।

नेतासभ चारूकात अपन गोटी सरिआबएमे लागल रहल । सरकार हमरासभकेँ सभ सुविधाक संगे ओहिठाम रखने रहल । क्रमशः माहौल शांत भेल । एकर बाद एक सँ एक घटना घटैत रहल। कोरोनाक प्रहार बढ़िते गेल । अस्पतालमे रोगीसभ आक्सीजन बिना कुहरि रहल छल । अस्पतालक बाहरो भयानक दृश्य छल । कतेकोगोटे अपन वाहनेमे अस्पतालमे भर्ती हेबाक प्रतीक्षा करैत दम तोरि देने छलाह । गंगाक काते-काते बाउलमे लहाससभ गारल जा रहल छल । लोककेँ लास जरेबाक ब्योंत नहि

रहैक । लोके नहि रहैक,आओर बातक कोन कथा? मेडिआक ध्यान ओहिसभपर गेलैक । तकर फएदा हमरासभकेँ भेल । सरकार हमरा लोकनिकेँ घर पहुँचा देलक । हमरा लेल एहिसँ पैघ राहत किछु नहि भए सकैत छल ।

अतिथिगृहसँ लौटलाक बाद अजुका राति निचेनसँ सुतलहुँ। भोरे उठि हम कुर्सीपर बैसल रही । मोहित से ओतहि आबि गेल । कहए लागल-"हम आब गाम दिस जेबैक।"

"से किएक? अरवन कोन अगुताइ छैक? गामो जा कए तँ बैसले रहबह । किछुदिन हमरे संगे रहि जाह ।"

"से तँ बहुत नीक होइतैक । मुदा हमर पत्नी अगुताएल छैक। ओ गाम-गामक रट लगओने रहैत छैक । फेर गामोपर आओर लोकसभक हालचाल लेब जरूरी छैक । गोपीक हाल चेल लेला से बहुत दिन भए गेलैक । ओकरोसँ सेहो भेंट करबाक अछि।"

"ओ अरवन अछि कतए?"

"महन्थस्थानमे ।"

"हमरो ओतहि जेबाक मोन होइत अछि । दुनिआ-दारी आब बहुत भेलैक । आब जे समय बाँचल अछि से परोपकारमे लगाबक इच्छा अछि ।"

"ई तँ बहुत नीक बात अछि । मुदा एहिठामक राज-काजक की होएत?"

“से सभ पुत्रकेँ सुनझा देबनि । तेँ ने कहैत छिअह जे एकाध दिन रूकि जाह । हम एहिसभसँ निपटि लैत छी । तकरबाद तोरेसंगे महन्थस्थान चलब ।”

“कोनो बात नहि । हम ओकरा बूझा देबैक । अहाँ ताबे जरूरी काजसभ निपटा लिअ ।”

जहिआसँ कोरोनाक हवा बहल,हम तँ घरेमे बंद छी। तथापि कोना-ने-कोना परिवारमे सभगोटे कोरोनासँ संक्रमित भए गेलहुँ । हम आ हमर श्रीमतीजी तँ जल्दीए ठीक भए गेलहुँ । मुदा हमर पुत्र लए कए कतेको तरहक समस्या भेल । केहन-केहन समय बितल। की-की ने करए पड़ल । संयोग एहन भेल जे ओ मरिओक जीबि गेलाह । केहन व्यवस्था अछि जे एकटा स्वस्थ आदमीकेँ मृत घोषित कए देल गेल,ओकर लहासो देल गेल,तकरा श्मशानमे अंतिम संस्कारो भेल । तकर बाद ओएह व्यक्ति टहलैत घर वापस आबि गेल। ई केहन भेलैक? अजूबा घटना भेलैक ने । सामान्यतः एहन सोचलो नहि जा सकैत छल । तकरबाद जे भेल से तँ जनिते छी । बेसक हमर पुत्र लौटि गेलाह मुदा हमर पत्नी तँ हुनके शोकमे चलि गेलीह । तकर आब की निराकरण होएत?

जखन कखनहु घरमे असगर होइत छी,मोन हुनकर स्मृतिसँ भरि जाइत अछि । आँखिसँ नोर झर-झर खसैत रहैत अछि । लगैत रहैत अछि जे आब जीवन पहाड़ भए गेल । जँ कोरोना हटिओ गेल,तैओ हमर जीवनकेँ जे ग्रहण लागि गेल अछि,तकर उग्रास नहि भए सकत । हुनका बिना हमर जीवन व्यर्थ भए गेल । दूपहर रातिमे ओ कैकबेर सपनामे आबि जाइत छथि । कैकबेर हमर सिरमा लग ठाढ़ि भेल हमर माथ हँसोथि दैत छथि । लगैत रहैत अछि जेना ओ

हमरा किछु कहि रहल छथि,किछु बुझा रहल छथि । मुदा ततबेमे सपना टुटि जाइत अछि । सभकिछु अपूर्ण रहि जाइत अछि । स्वप्नमे भेल हमरासभक भेंट-घांट क्षणिक साबित होइत अछि । हमर निन्न टुटि जाइत अछि । हम ओछाओनपर करोट बदलैत रहि जाइत छी,असीम पीड़ाक संग ।

यद्यपि हमर पुत्र वापस आबि गेलथि,सरकार और अन्य-अन्य श्रोतसभसँ हमरा बहुत टाका सेहो भेटल,हम स्वयं स्थिर नहि भए पाबि रहल छी । हमरा लगैत अछि जेना सौंसे घर काटए दौरि रहल अछि । सबसँ दुखक बात जे हुनकर नीकसँ श्राद्धो नहि भए सकलनि । चारूकात कोरोनाक ताण्डव चलि रहल छल । ओहिमे के पिंडदान करबैत,के दान ग्रहण करैत ,ब्राह्मण भोजनक तँ सबाले नहि छल । एहनो होएत से केओ सपनोमे नहि सोचने होएत। मुदा सएहसभ भए रहल अछि । मोनमे महाभारतक समयमे युद्धक दृश्य हरिआ जाइत अछि । कए बेरि सोचैत छी जे मोनकेँ एहि बातसभसँ हटाबी। बिसरि जाइ ओहि प्रसंगसभकेँ जे हमर हृदयकेँ विदीर्ण कए देलक । मुदा से संभव नहि भए पाबि रहल अछि । जतेक मोनकेँ ओमहरसँ हटेबाक प्रयास करैत छी,मोन ततेक जोरसँ ओमहरे चलि जाइत अछि। इएह थिक मोह । संसारमे मृत्यु तँ होइते रहैत अछि,मुदा अपन लोकक मृत्यु बिसरने नहि बिसराइत अछि । ओ अनंत काल धरि पीड़ादायक बनि जाइत अछि । एहने मनःस्थितिमे हम निश्चय करैत छी-“आब एहि घरकेँ छोड़ि देब । देश और संपूर्ण समाज बहुत संकटसँ गुजरि रहल अछि । हम अपन शेष जीवन

आब मनुक्खक सेवामे लगा देब । हुनका प्रतिए हमर इएह श्रद्धांजलि होएत । एहीसँ हमरा शांति भेटि सकैत अछि ।”

हम अपन कौटिल्यनगरक कारबार पुत्रकेँ सुनझा दैत छिअनि । जे हिसाब-किताबसभ छल सेहो निपटा लैत छी । तकरबाद मोहित आ ओकर पत्नीक संगे महन्थस्थानक हेतु बिदा होइत छी । जाइत काल हमर पुत्र बहुत भावुक भए जाइत छथि । किछु कहए चाहैत छथि । हम हुनका एकांतमे लए जाइत छी ।

“हम कोनो एहि दुनिआसँ थोड़े जा रहल छी । जखन कखनो अहाँकेँ परेसानी होअए महन्थस्थान चलि आएब, किंवा फोन कए लेब । हम ओतहि भेटि जाएब । मुदा हम आब ई जीवन समाजक हेतु अर्पित कए देने छी । जे समय-साल बिति रहल छैक ताहिमे सरकार असगरे किछु नहि कए सकैत अछि। एहि समस्यासँ पार पेबाक हेतु लोककेँ स्वयं आगू आबए पड़तैक । मानवताक हेतु ई बहुत विकट समय अछि। जँ हमसभ एकरा सही तरीकासँ नहि सम्हारब तँ भविष्य कहिओ हमरासभकेँ माफ नहि करत।” एहि तरहें हुनका बुझा-सुझा कए हमसभ कारसँ महन्थस्थान हेतु प्रस्थान करैत छी ।

कौटिल्यनगरसँ महन्थस्थान जेबाक रस्तामे कतेकोठाम सड़कपर लोकक हुजुम देखलहुँ । साइते केओ सही तरीकासँ मास्क लगओने रहए । किछुगोटेक मास्क तँ दाढ़ीसँ झुलि रहल छल । किछुगोटे ओकरा हाथमे लेने घुमि रहल छलाह । कैकठाम रोगी वाहनमे दुखित लोकसभ एमहर-ओमहर भागि रहल छल । ओहिमेसँ अधिकांश कौटिल्यनगरक छलाह । जाहि कौटिल्यनगरमे सौंसे देशक लोक इलाज करेबाक हेतु जाइत छल

से आइ जानलेबा भए गेल छलैक । कतहु कोनो अस्पतालमे जगह नहि रहैक । आम आदमीक बात छोड़ू,कैकटा नामी लोकसभ सेहो उचित सुविधाक बिना नहि बँचाओल जा सकलाह । लोककेँ होइक जे गामे नीक । बेसक ओतए इलाज नहि छैक,मुदा कोरोनाक एहन भयानक प्रकोपो नहि छैक । गाममे अखनहु लोक निचेन अछि । से सोचि कैकगोटे गामक रस्ता पकड़लाह ।

सड़क खाली छल । आसमानकेँ एहन स्वच्छ तँ नेनेमे देखिऐक । तालाबंदीसँ मनुक्ख छोड़ि समस्त जीवजन्तु निचेन रहए। जकरा जतए मोन होइक टहलए । कैकबेर सड़कपर जंगली जानवरसभ टहलैत देखाइत छल । एहनो समयमे एकठाम तँ हजारों आदमी एकहिठाम जमा छलाह । एकटा चरबाह कातमे देखाएल । पुछलिऐक-

“एहिठाम की भए रहल छैक?”

“नेताजी अओथिन ।”

“किए?”

“सेहो नहि बूझल अछि । मुखिआक चुनाओ छैक । गामे-गाम लाउडस्पीकरसँ गाना-बजाना चलि रहल छैक । जहाँ-तहाँ लंगर लागल छैक । जे जतेक खाए, जे खाए, जे पिबए । केओ पुछनाहर नहि छैक । ऊपरसँ किछु कए टाका सेहो दैत छैक । कैकगोटे तँ नेताजी संगे भरिदिना काज करैत छैक ।”

“से की?”

“माने से ओकरा सभकेँ नेताजीक आगू-पाछू चलए पड़ैत छैक । रहि-रहि कए नारा लगबए पड़ैत छैक ।”

“ओ सभ एहि कोरोना कालमे सटल-सटल कोना रहैत छैक? केओ टोकनाहर नहि छैक? ”

“जाए दिअ । ई कोनो दिल्ली, मुम्बइ नहि छैक । एहिठामक हिसाब-किताब फराक छैक । सभ अपन मोनक मालिक छैक । जे जकरा फुराइ छैक, से करैत अछि । कोनो रोक-टोक नहि छैक।”

“सएह कहह । एहन समय-साल चलि रहल छैक । मुदा एकरासभक हेतु धनिसन ।”

“ई की देखि रहल छी। भीतर गाममे जा कए देखिऔक।”

“ई चुनाओ कतेक दिन चलतैक?”

“से हम की जाने गेलिऐक? हम तँ जे देखैत छी ततबे बुझैत छी । हमरा केओ किछु कहैत थोड़े अछि।”

“तोरा की बुझाइत छह, एहि चुनाओमे के जितत?”

“जकर लाठी तकर महीष बला बात छैक । जे बेसी खर्चा करतैक, भोटक रातिमे दारू, चिखना देतैक तकरे चलतैक।”

“एतेक भीड़मे जँ बिमारी पसरतैक तकर की समाधान हेतैक? ”

“एहिठाम से सभ किछु नहि होइत छैक । जहिना लोक पहिने मरैत छलैक, तहिना अखनहु मरैत अछि । तकर कोन हिसाब छैक? के गिनती करैत छैक? ककरा बूझल छैक जे के कोन

बिमारीसँ के मरल । हँ जँ केओ सुखित लोक मरल तँ लोकमे एकटा हरिअरी जरूर आबि जाइत छैक।"

"से की? "

"पाँच गाम, सात गाम भोज-भात होइत छैक । लोक कैकसाँझ धरि भोजनसँ निश्चिंत रहैत अछि ।"

"कोरोनाक डर नहि होइत छैक?"

"एहिठाम कोरोना-फोरोना किछु नहि मानल जाइत छैक । सभकेँ काली माइ रक्षा करैत छथिन ।"

हमरा ओहि चरबाहाक संगे बकझक करैत देखि मोहितकेँ नहि रहल गेलैक ।

"जाए दिअ । ई बेचाराकेँ की कहैत छिऐक । ई तँ अपने कतिआएल महीषपर समय बिता रहल अछि ।"

"सही कहलह । हमरासभकेँ आगू बढ़बाक चाही ।"

कार गति धरैत अछि । हमसभ बड़ीकाल धरि एकटा जंगल बाटे जाइत छी । मोनमे डरो होइत छल जे कहीं किछु अनट ने भए जाए । खैर! आगू बढ़ैत गेलहुँ । वाहन चालक छल अपन काजमे निपुण । मौकाक हिसाबसँ कारकेँ आगू बढ़बैत रहल । दूघंटाक बाद कार संगमक लगपासमे पहुँचि गेल । औ बाबू! एहिठामक भीड़ देखि छगुंतामे पड़ि गेलहुँ । कहू कहाँ लोकसभ कोरोनासँ बँचबाक हेतु फटकी-फटकी रहबाक उपदेश देने फिरि रहल अछि आ कहाँ ई दृश्य देखि रहल छी । लाखों लोक एकठाम जमा अछि ।

केओ कोनो तरहक परहेजक जरूरी नहि बूझि रहल अछि । हमसभ कारकेँ रोकि दैत छी । सड़कपर नीचाँ उतरि संगम क्षेत्रक विहंगम दृश्य देखैत छी । आपसमे दूटा बाबाजीकेँ गप्प करैत सुनैत छी -

"कोरोना बिमारी कोनो चीज छैक । जे डराएल, से गेल। हमरा देखू, केहन फुकल-फाकल घुमि रहल छी । स्थानपर रही तँ केओ डाक्टर कहलक जे टीका लगबा लिअ तखन कुंभमे जाएब । ई कानून छैक । हम ओकरा जोरसँ दमसलहुँ। कानून-फानून बाबाजीपर नहि चलैत छैक । ई शरीर नश्वर छैक । जे एहि मृत्युभुवनमे आएल अछि से जाएत आ जेबे करत । आखिर यमराजोकेँ कोनो-ने-कोनो तरीका तँ धरक रहैत छनि ने । एतेक डाक्टर, दबाइ बनलैक मुदा लोक ओहिना मरैत अछि कि नहि? भए जाइत अमर ने? एकहुगोटे अमर भए जाइत सेहो कहाँ पार लगलैक। ई सभ ठकविद्या छैक । डाक्टर,अस्पताल,दबाइक दोकान चलैत रहतैक आ लोक ओहिना एहि दुनिआकेँ छोड़ैत रहतैक । एहिठाम सभ बस यात्री अछि,यात्री । आओर किछु नहि। से बात नीकसँ बूझि लिऔक ।"

"औ बाबू! एहन पक्का विचारक आदमीकेँ के बुझाओत?"

हमसभ कारकेँ आगू केलहुँ । मुदा चारूकात लोकक तेहन करमान लागल छल जे कारकेँ जे दूरी पनरह मिनटमे तय भए जइतैक से घंटो लागि गेलैक । जे-से। जेना-तेना हमसभ संगमक्षेत्रसँ आगू भेलहुँ । वहानचालक निधोख कारकेँ चला रहल छल । काशी विश्वनाथ आबहिबला छल कि कारक पछिला चक्कासँ फुस्सकेँ आबाज होबए लगलैक । चक्काक सभटा हवा निकलि गेलैक । संयोगसँ एकटा फाजिल चक्का कारमे रहैक। वाहन चालक

ओकरा कारमे लगाबए लागल । ताबे हमसभ सहटि कए सड़क काते-काते टहलि रहल छलहुँ। थोड़बे आगू देखलिऐक जे सैकड़ो बरिआती जा रहल अछि । गाजा-बाजा,धूम-धरक्कासँ माहौल अनुरंजित भए रहल छल। मुदा बर कारमे सुतल रहैक। ओकर कार हमरा लग आबि कए ठाढ़ भेलैक। हम पुछलिऐक-

"हिनका की भेलनि?"

"किछु नहि ।"

"तखन पड़ल किएक छथि?"

"कनी-मनी बोखार छनि। बिआहक दिन पहिनेसँ निश्चित रहैक । तेँ रोकनाइ संभव नहि भेलैक । सभक विचार भेलैक जे आगू बढ़ी । जहाँ गाम-घरक हवा लगतैक, एक-दू दिनमे बर अपने ठीक भए जेतैक ।

"मुदा ई तँ बहुत लस्त बुझाइत छथि ।"

"आब से की कएल जाए? सोचलाहा थोड़े होइत छैक। हिनकर हालत लगातार गड़बड़ा रहल छनि । काशी आबए बला छैक । ओतहि डाक्टरसँ देखेबाक विचार छैक ।"

ओहीठाम लगपासमे ठाढ़ लोकसभकेँ आपसमे चर्चा करैत सुनलिऐक-"बर मुंबईमे रहैत छैक । ओहीठाम कोरोना भेलाक बाद अस्पतालमे भर्ती रहैक । मुदा बिआहक दिन लगीच अएलाक बाद ओकर परिवारक लोक जोगार लगा कए ओकरा अस्पतालसँ आनि लेलकैक । आनि तँ लेलकैक मुदा ओकरा बिमारी ठीक नहि भेल रहैक । ताहि बातकेँ ओ सभ दबा देलकैक । कन्यागतकेँ

एहिबातसभक कोनो जानकारी नहि रहैक । बरक हालत लगातार खराब होइत गेलैक । तकर बाद तँ सभक कान ठाढ़ भेलैक । मुदा ताबे बहुत देरी भए गेल छल । अचानक ओकर हालत बिगड़ि गेलैक ।

बरिआतीसभ सौंसे सड़ककेँ छेकने छलैक । हमहुसभ कार रोकि देलिऐक । कारसँ उतरि बर लग ससरि कए पहुँचलहुँ। ताबे ओकर कारसँ केओ चिकरलैक-"दौरैत जाउ औ लोकसभ! हिनकर हालत बहुत खराब भेल जाइत छनि ।" बरक पिता पछिला कारमे बैसल रहथि । हुनका संगे तीन-चारिटा आओर निकट संबंधीसभ रहथि । सभ धरफरा कए कारसँ उतरि बर दिस बढ़लाह । ताबे तँ ओ आँखि उल्टा देने छल । औ बाबू! तकर बाद जे कन्ना-रोहटि शुरु भेल से की कहू? एहन दुखद दृश्य जीवनमे नहि देखने रही । मोन होअए जे कहुना कए ओतएसँ भागी । मुदा सड़कपर चुट्टी ससरबाक जगह नहि रहैक । जे केओ सुनलक,से सभ बरक कार लग पहुँचि गेल । घंटा भरि एहिना सड़क जाम रहल । संयोगसँ एकटा नेताजीक काफिला चुनाओ कार्यक्रममे जाइत रहए । ओकरा देरी कोना होबए दितैक? तँ पुलिस जेना-तेना प्रयास कए सड़क खाली करओलक । तकरबादे हमहुसभ कारसँ आगू बढ़ि सकलहुँ ।

कार आगू बढ़ल । सड़कक काते-काते दूबगली पक्का घर सभ छल । कारकेँ देखी घरसभसँ बच्चासभ हुलकि रहल छल । केओ कहैक जे हम कार लग जाएब । केओ कहैक हम कारमे बैसब। केओ कारक पाछू-पाछू दौड़ए चाहैत छल । बच्चासभक एहन हालत देखि बहुत दया अबैत छल । मोनमे कष्टो होइत छल।

ई केहन समय आबि गेल? बच्चासभ एखन इसकुलमे रहैत । संगीसभक संगे खेलाइत-धुपाइत । मुदा सभ घरे-घर बंद अछि । इसकुल-कालेजसभ शुरुएसँ बंद अछि । पार्क गेनाइ से मनाही छैक । नान्हिटा बच्चासभ खेलक बिना तड़पि रहल अछि । कहि नहि कहिआ धरि एहन हालत रहत?

27

साँझमे थाकल-ठेहिाएल हम,मोहित आ ओकर पत्नी महन्थस्थान पहुँचलहुँ । साँझमे ओहिठाम भजन-कीर्तन होइत रहए। तकर बाद रात्रि भोजनक कार्यक्रम होइत छल । हमसभ जखन ओतए पहुँचल रही तँ भजनक कार्यक्रम शुरुए भेल रहए । महन्थजी सभसँ आगू अपन चेला-चपाटीक संगे विराजमान छलाह। हमसभ अगिलके द्वारिसँ ओतए प्रवेश करैत छी । महन्थजीक नजरि हमरापर पड़ैत छनि । हमरा लोकनिक आगमनक सूचना महन्थजीकेँ नहि रहनि । ओ नित्यप्रतिक अपन दिनचर्यामे लागल रहथि । हमरासभकेँ देखि कए ओ आश्चर्यचकित रहथि । ओ दौरल हमरा लग अबैत छथि । समस्त भक्तलोकनिक सामने हमरा गला मिलैत छथि । लोकसभ एहि दृश्य देखि कए छगुन्तामे पड़ि जाइत अछि ।

“जरुर ई केओ भीआइपी हेताह ।”-एकगोटे बाजल ।

"भए सकैत अछि जे महन्थजीक संगी होथि।"-दोसर बाजल।

"मुदा हिनकर पाछामे केसभ छथि?"-तेसर बाजल । एहि तरहे तरह-तरहक शङ्का लोकसभक मोनमे उठैत रहलैक ताधरि जाबे कि महन्थजी स्वयं हमरा मंचपर लए जा कए सभसँ परिचय करओलथि-

"ई छथि हर्षित बाबू-हमर इसकुलिआ संगी । ई तँ कमे बएसमे सहर धए लेलनि आ हम बाबाजीक लाइन पकड़ि लेलहुँ । मुदा नेनोमे हमरा लोकनि बहुत नीक दोस्त रही। बड़का महन्थजी जाबे रहथि ताबे नित्य इसकुल जाइत ई सभ महन्थस्थान दिस जरूर आबथि । महन्थजी एहिबातसँ बहुत प्रसन्न होइत छलाह । सभकेँ किछु-ने-किछु प्रसाद दितथि । तकरबाद हमसभ संगे इसकुल जाइ। तकरबाद तँ कतेक समय बिति गेलैक । मुदा एतेक दिनक बादो भेंट भेलापर लगैत अछि जेना ओ बातसभ एकदम नूतन अछि । स्मृतिमे जोगाएल, चौपेतल धएल ।

हमसभ थोड़ेकाल महन्थजीक आग्रहपर ओहिठाम भजनक आनंद लैत छी । ओतहि हमरासभकेँ चाह,पान,सेहो होइत अछि। तकर बाद हमसभ महन्थजीक संगे हुनकर कक्षमे चलि जाइत छी।

महन्थजी गप्प-सप्पमे बहुत रमनगर छलाह । बड़ीकाल धरि हँसी-ठठ्ठा होइत रहल । लोकसभ भोजनक बिझो करबैत रहल । एमहर गप्प-सप्प चलैत रहल । अंतमे हमही कहलिअनि- "हमरासभकेँ भूख जोर मारि रहल अछि । अहाँक चेलासभ कैकबेर बिझो करा चुकल छथि । ओ सभ अपनेक आज्ञाक प्रतीक्षा कए रहल अछि ।"

"जरूर । सभकाज छोड़ि कए पहिने भोजन कएल जाए।"

महन्थजीक संगे हमसभ लंगर भवनमे जाइत छी । ओहिठाम एकहि पाँतिमे कम सँ कम पाँच सए लोक भोजन करबाक हेतु बैसल छथि । सभगोटे हमरेसभक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । हमरोसभक हेतु आसन लागल अछि । भोजनक सामग्री सेहो परसल अछि । महन्थजी हमरे बगलमे बैसैत छथि । तकरबाद नानाप्रकारक मंत्रोच्चार होइत अछि । फेर महन्थजी कौर उठबैत छथि । तकरबादसभ बड़ीजोरसँ किछु मंत्र दोहरबैत छी आ भोज शुरु भए जाइत अछि । तरह-तरहक पकबान परसल जा रहल अछि । अंतमे तरह-तरहक मिठाइसभ परसल गेल । हमरा बूझले नहि छल जे अंतमे मिठाइक आक्रमण होएत? पेट भरि चुकल छल। तथापि पातपर राखल सभटा मिठाइ खा जाइत छी । जखन सभ किछु भए गेल तखन महन्थजी फेर एकटा मंत्र बजलाह । सभ केओ ओहि मंत्रकेँ दोहरेलक आ पातपरसँ उठि गेल ।

28

हम जाबे कौटिल्यनगरमे रही,दिन-राति एकहि तरहक वातावरण,एकहि सोच,एकहि तरहक दिनचर्यामे साल भरिसँ बेसीसँ बान्हल रही । लगबे नहि करए जे बाहरो कोनो दुनिआ छैक। ओ सड़कसभ जतए हम नित्यप्रति अबैत-जाइत रहैत छलहुँ,जाहि दोकानसभपर भोर-साँझ चाह पिबैत

छलहुँ,दोस्तसभसँ गप्पसप्प करैत रहैत छलहुँ,ओ सभ जगह बिसरा गेल । लागए जेना कतेक फटकी आबि गेल छी । जखन कखनहु घरक आसपास केओ देखाइत छल तखन डरसँ दस हाथ पाछू चलि जाइ । होअए जे कहीं कोरोना ने पटि जाए । सामानसभ आनलाइन किनैत छलहुँ। मुदा जखन ओसभ सामान लए कए अबैत छल तँ हम बानर जकाँ कुदए-फानए लगैत छलहुँ । तरह-तरहसँ ओकरा बुझबैत छलहुँ जे ओ की सभ करए । अपन हाथ धो लिअए। फेर मास्क ठीकसँ लगाबए । तकर बादे सामानसभ निकालि कए घरक बाहरी देबालपर राखि दैक । ओकरा कतबो बुझबिऐक जे बिल नहि चाही । हम भूगतान आनलाइन कए देने छी । मुदा ओ सामान संगे बिल जरूर राखि जाइत छल । आब हमरा पराभव भए जाइत छल । ओ बिल नहि,हमरा लेखे बम जकाँ काज करैत छल । की पता कतए-कतए भाइरस घुसिआएल होइक?जँ केओ घरक कुंडी छुबि देलक तँ ओकरा कैकबेर कए प्रक्षालित करैत छलहुँ । दिन भरि ई सभ चलिते रहैत छल । बोतल के बोतल प्रक्षालक खतम भए जाइत छल । घर-बाहर चारूकात ओकरा छिटैत रहैत छलहुँ।

हाथ धोइत-धोइत चमरीमे फाँक भए गेल छल । ओकरा ठीक करबाक हेतु कोल्डक्रीम लगबैत छलहुँ । भोरमे टहलि कए वापस अबितहि सभटा कपड़ाकेँ गरम पानिमे डुबा दैत छलिऐक । फेर ओकरासभकेँ खिचैत छलहुँ । घरमे झाड़ू-पोछा सेहो अपने करैत छलहुँ । जलखै-भोजनक बाद थारी-बाटी अपने धोइत छलहुँ। हमर कोठरीमे ककरो अएबाक अनुमति नहि छलैक । मुदा एहि तरहें हम लोकसभसँ कटैत गेलहुँ । दिनभरि घरमे असगर

रहैत-रहैत मोन विचित्र अवस्थामे पहुँचि गेल छल । होअए जे केओ भेटितए जे भरिमोन गप्प करितहु ।

कोरोनासँ बँचबाक हेतु हम घरक लोकसभकेँ नियमसँ रहबाक हेतु कहिऐक । से नहि केलापर करवनो काल टोकबो करिऐक । से सभ हम करिऐक तँ नीक लेल । मुदा ओकरासभक हेतु हम बड़का दुश्मन भए गेल रही । होइक जे हमही सभटा परेसानीक जड़ि थिकहुँ । हमरा एहिबातसभसँ बहुत आघात लागल। होअए जे घर छोड़ि दी,कतहु चलि जाइ । मुदा एहि कोरोना कालमे कतए जइतहुँ? जिनगी कोनो एक-दू दिनक बात तँ अछि नहि । फेर एहि समयमे कतहु गेनाइओ उचित नहि थिक। सभ अपन जान बँचएमे लागल अछि । तेहन हालतमे जँ हम ककरो ओहिठाम जेबैक तँ केहन हेतैक? केहनो नीक लोक परेसानीमे पड़ि सकैत अछि । सएहसभ सोचि चुप रहि जाइत छलहुँ ।

यथासंभव, ककरो घर नहि आबए दिऐक । मुदा घरमे किछु-ने-किछु खराब होइते रहैत छलैक । करवनहु एसी खराब,करवनहु पंखा खराब तँ करवनहु गैसक चुल्हा खराब । मिस्त्रीक बजेनाइ अनिवार्य भए जाइत छल। गैस,पानि,बिजलीक मीटर रीडरसभ तँ अबिते रहैत छल । घरमे काजबालीकेँ बहुतदिन धरि हटा देने रहिऐक । मुदा ओकरासभक बिना जीनाइ बहुत कठिन भए गेल छल । कतबो कहिऐक,घरक लोकसभ मानबाक हेतु तैयारे नहि होअए । काजबालीसभ काजपर वापस आबि गेल । कहीं ओकरेसभक माध्यमसँ कोरोना घरमे ने पटि जाइक,हमरा से सोचि-सोचि राति-राति भरि निन्न नहि होइत छल । क्रमशः हम

एकटा भयभीत व्यक्ति भए गेल रही । आब तँ कोनो मनुक्खकेँ देखितहि भय होबए लगैत छल । मुदा जहिआसँ महन्थजीक संगति भेल हमर तँ जेना कायाकल्प भए गेल । हमर सभटा भय काल्पनिक छल । अपने मोनक निर्माण छल। हम आब एकबेर फेरसँ सशक्त भए गेल रही । ओहिना जेना दू साल पूर्वमे छलहुँ ।

29

नेनामे हमसभ महन्थस्थानक लग बाटे जाइत चलहुँ । ओहू समयमे ओतए बहुत किछु रहैक । मुदा ओतए एतेक धन-संपदा छैक तकर अनुमान नहि रहए । भोर भेने जखन महन्थजी स्वयं हमरा स्थानमे टहलाबए लगलाह तखन आँखि खुजल । नाना प्रकारक महलसभ समस्त सुख-सुविधासँ परिपूर्ण देखलहुँ। आश्चर्यक बात जे महन्थजी स्वयं बहुत साधारण कोठरीमे रहैत छथि। मुदा बाहर तँ बहुमंजिला मकानसभक पाँति लागल अछि । परिसरक भीतरेमे अस्पताल,इसकुल,कालेज,अनाथालय सभ अछि । कोरोनाक आक्रमण भेलाक बाद परिसरेमे एक भागमे समस्त सुविधा संपन्न कोरोना निवारण केन्द्र बनाओल गेल अछि । जाहिठाम कोरोना रोगीसभकेँ ओकर स्थिति आ परिस्थितिक अनुसार अलग-अलग भागमे राखल जाइत अछि । पश्चिम-दच्छिन कोनमे डाक्टर,नर्स आ अस्पतालक अन्य सहायक लोकनिक हेतु आवास बनाओल गेल अछि । कैकटा डाक्टर तँ सालभरिसँ अपन घर नहि गेलाह । एतहि दिन-राति रोगीसभक सेवामे लागल रहैत अछि ।

सभसँ आश्चर्यक बात जे एहिठाम इलाजक हेतु पूर्णतः भारतीय पद्धतिकेँ अपनाओल जाइत अछि । बिमारी हेबे नहि करए ताहिपर बहुत जोर अछि । अस्पताल परिसरमे रहि रहल कैकटा डाक्टरकेँ जड़ी-बुटीक बहुत ज्ञान छनि । हुनकर ज्ञानक भरिपोख उपयोग एहिठाम कएल जाइत अछि । असलमे ओ एहि स्थानेमे एकटा आयुर्वेद कालेज सेहो चलबैत छथि । ओहिठामक विद्यार्थीसभ दिन-राति रोगीसभक सेवा करैत छथि । एहिठाम सभटा सुविधा,इलाज,दबाइ,भोजन स्थानक दिससँ देल जाइत अछि । ककरोसँ एकटा पाइ नहि लेल जाइत अछि ।

हम महन्थजीक संगे स्थानमे चारूकात घुमैत-घुमैत थाकि जाइत छी । मुदा स्थानमे अखनहु बहुत रास चीजसभ देखब बाँकिए अछि । महन्थजी हमर बात बूझि हमरा एकटा गाछतरमे बनल विश्रामस्थलपर लए जाइत छथि । ओ एकटा चेलाकेँ इसारासँ किछु कहैत छथि । थोड़बे कालमे ओ एकटा डोलमे किछु लेने अबैत अछि । महन्थजी कहैत छथि-"एकरा पिबि कए देखिऔक ।" हम हुनकर बात मानि दू गिलास रस डोलमेसँ निकालि कए पिबैत छी । औ बाबू! ओ पिबितहि हमरसभटा थकान बिला जाइत अछि । हम एकदम खनहन भए जाइत छी । महन्थजी ई बात बुझलनि । ओ हमर फुरती देखि कए हँसए लगलाह ।

सुनलिऐक जे सरकार हिनकर काजसँ प्रसन्न भए किछु मदति देबाक इच्छा केने रहए । मुदा ई साफे मना कए देलखिन ।

“ककरोसँ कोनो अपेक्षा करब ठीक नहि । भगवान स्थानमे बहुत देने छथि । एकरे सदुपयोग भए जाए सएह बहुत भाग्यक बात ।”

-महन्थजी कहने रहथिन । महन्थजी हमरा बहुत अचंभित देखि कहए लगलाह-

“अहाँ बहुत परेसान बुझाइत छी । की बात?”

“हम नहि सोचि पाबि रहल छी जे एहिठाम एतेक संपदा कतएसँ आएल?”

“असलमे बूढ़ा महन्थजी बहुत मितव्ययी रहथि । ओएह अपन जीवन कालमे स्थानकैं देल गेल दानकैं जमा करैत गेलाह जे बादमे बहुत भए गेलैक । फेर एकदिन एकटा व्यवसायी आएल । ओकरा अकूत संपत्ति छलैक । मुदा संतान नहि रहैक । ओ अपन सभटा संपत्ति स्थानमे दान दए देलक आ स्वयं महन्थजीक चेला भए एतहि रहि जनसेवामे लागि गेल । ओकर बाद तँ एहिठाम ततेक संपत्ति भए गेल जकर हिसाब रखनाइ मोसकिल भए गेल । मुदा महन्थजी अपन जीवनकालेमे सभटा ओरिआन केने गेलाह । हुनका कोनो लोभ-लालच तँ रहनि नहि । तैं सभटा संपत्ति जन-कल्याणमे लगा देलाह । एहि कोरोना कालमे ई सुविधासभ समाजक हेतु वरदान साबित भए रहल अछि। एहि इलाकाक लोक एहनो समयमे सुरक्षित अछि । ने ककरो नौकरी जेबाक चिंता छैक ने ककरो इलाजक खर्चाक । एक हिसाबे एहिठाम राम राज्य स्थापित भए गेल अछि ।

हम महन्थजीक संगे घुमैत-घुमैत एकटा पैघ पोखरि लग पहुँचि गेलहुँ । पोखरिक महारपर नाना प्रकारक फूलसभ लागल

छल । चारूकोनपर चारिटा धर्मशाला बनल छल जाहिमे संत-महात्मासभ पूजा-पाठ आ ध्यान करैत छलाह। एकटा धर्मशालासँ निरंतर कीर्तनक ध्वनि आबि रहल छल । महन्थजी हमरा ओमहरे लेने गेलाह । हमसभ कीर्तन भवन पहुँचलहुँ । थोड़ेकाल कीर्तनक आनंद लेलहुँ । तकरबाद प्रसाद ग्रहण कए महन्थजीक संगे बिदा भए गेलहुँ ।

30

नित्य भोरे उठि-सुठि पूजा-पाठ कए हमरा संग लए महन्थजी स्थानमे रहि रहल कोरोना रोगीसभसँ भेंट करैत छलाह। ओकरसभक भारतीय चिकित्सा पद्धतिसँ इलाज करैत छलाह । रोगीसभ आश्चर्यजनक ढंगसँ ठीक होइत गेल। मुदा किछुगोटेक हालत खरापो होइत गेलैक । तकरासभकेँ आधुनिक चिकित्साक व्यवस्था कएल गेल छल । महन्थजीमे प्राचीन एवम् आधुनिक विज्ञानक प्रति समान भाव छल । ओ कोनो पूर्वाग्रहमे नहि जीबैत छलाह । हुनकर एकमात्र उद्येश्य दुखी,रोगी ,लोकसभक कल्याण करब छल । जखन मोनमे एहन निःस्वार्थ भाव रहत तखन समस्या हेतैक किएक? देशक नामी डाक्टरसभ स्थानक अस्पतालसँ जुड़ैत चलि गेलाह ,सेहो बिना कोनो लोभ-लालचकेँ । जकरा जे शक्तिमे रहैक,से करए। तथापि कोरोनाक विभीषिका ककरो नहि बकसलक । समस्त प्रयासक बाबजूद एकाएक रोगीसभक हालत

खराब होबए लगलैक । जाबे कोनो बड़का डाक्टरकेँ बजाओल जाइत ताबे तँ रोगी एहि दुनिआसँ बिदा भए जाइत छल ।

"आब की कएल जाए?"-महन्थजी हमरा पुछलनि ।

"की करबैक? जे अपनासँ पार लगैत अछि से करिते छी। मुदा हम-अहाँ भगवान तँ छी नहि। आगू जे हुनकर इच्छा।"

"सही कहि रहल छी । जीवन-मृत्युपर ककर वश चललैक अछि? भगवान राम सन प्रतापी सरयू नदीमे जल समाधि लए लेलनि । भगवान कृष्ण एकटा मामुली व्याधाक तीरक सिकार भए गेलाह । समय प्रवल होइत छैक । ओकरा आगू केओ किछु नहि।"

महन्थजीक संगे टहलनाइक माने छल जे ज्ञानक समुद्र संगे चलि रहल छी । कोनो बातकेँ तेनाक बुझबितथि जे लागति जेना मोनमे बैसि गेल । दुबिधा नामक चीज तँ हुनकामे छले नहि ।

एकदिन एहिना टहलैत ओ पुछलनि-

"की हाल-चाल अछि?"

"हाल-चाल तँ नीके अछि । मुदा सालसँ बेसिए भेल ,घरमे बंद छलहुँ । ई तँ एहिठाम अएलहुँ तँ कनी उसास भेल अछि । तथापि बेसी काल तँ घरेमे बंद रहैत छी । लगैत रहैत अछि जेना कि जहल मे छी ।"

"देखिऔक । ई सभटा मोनक बनाओल छैक । जँ मोन मुक्त अछि तँ जहलोमे अहाँ स्वतंत्र रहि सकैत छी । जँ से नहि अछि तँ महलोमे अहाँ जहले जकाँ रहब । प्रसन्न तँ रहिए नहि सकैत छी ।"

"बात एकदम सही कहलिऐक । मुदा मोन तँ बहुत चंचल अछि । एकरा कोना बुझाएल जाए ।"

से सुनि महन्थजी हँसि देलाह । कहैत छथि-"इएह तँ छैक रहस्य । एकर समाधान तँ मोने कए सकैत अछि ।"

महन्थजीक ज्ञानक बात सुनि हमर मोन किछु शांत भेल। हमरासभक संगे मोहित सेहो चलि रहल छल । महन्थजीक बात सुनि कए ओ हुनकर पैरपर खसि पड़ल । कहए लागल-"हम आब कतहु नहि जाएब । आब जे जीवन बाँकी अछि से एतहि सेवामे लगा देब।"

"बहुत नीक विचार छह । हमरा तँ तोरे सन-सन लोक चाही। दुखी प्राणीक सेवासँ बढ़ि कए किछु नहि थिक । तूँ काल्हिसँ कोरोना अस्पतालक स्वागत कक्षक काज सम्हारह।"

मोहित स्वागत कक्षमे काज शुरु कए देलक । एहिसँ ओकर मोन हल्लुक भेलैक । दिन-राति तरह-तरहक लोकसभसँ भेँट-घाँट होइ रहैत छलैक । काजमे व्यस्त रहलासँ समय कोना बितैक से किछु पता नहि चलैक । आब ओकर स्वास्थो ठीक भेल जा रहल छलैक । मोनसँ कष्ट बिसरा रहल छलैक । दिन-राति लोकक सेवामे लागल रहलासँ अपन दुख हरा गेलैक । ओ स्थानक काजमे रमि गेल । कखन भोर होइक,कखन साँझ होइक किछु पता नहि चलैक।

मोहित एकदिन एहिना स्वागत कक्षमे नवागंतुक लोकनिक नाम-पता लिखि रहल छल कि गोपीक एकटा गौंवा भेटलैक । ओ

सभकाज छोड़ि ओकरा सोफापर लए गेल आ गोपीक बारेमे पुछए लगलैक ।

“से अहाँ हुनका कोना जनैत छिअनि?”

“हमसभ एकहि कारखानामे काज करैत छलहुँ । हमरसभक डेरा सेहो एकहिठाम छल । ओना तँ कारखानामे बहुत लोक काज करैत छल,मुदा गोपी हमर लंगोटिआ दोस्त छल ।”

हमरा मुँहे गोपीक बारेमे एतेक बात सुनि ओ गुम्म पड़ि गेल। मुँहपर उदासी साफे देखा रहल छलैक ।

हम पुछलिऐक-“किछु विशेष बात? गोपीक चर्चा सुनि कए अहाँ एतेक उदास किएक भए गेलहुँ?”

“बाते तेहने छैक?”

“से की?”

“गोपी आ ओकर पत्नी इलाज करबए सीतापुर सरकारी अस्पताल गेल छल । ओहिठाम बहुत मोसकिलसँ ओकरसभक जान बवचलैक ।”

“तकर बाद?”

“तकर बाद ओ गाम आएल । गाममे ओकर पितिऔतक कान ठाढ़ भेलैक । असलमे ओ एक युगक बात गाम वापस भेल छल । ओकर सभटा जमीन-जथा घरारीपर्यंत ओकर पितिऔत हरपि गेल रहैक । गोपीकेँ वापस देखि ओ तँ पागल भए गेलैक । रातिमे ओकरा गोपीसँ बहुत झगड़ा भेलैक । ओ गोपीकेँ एकहुटा कोठरी देबए नहि चाहैक। गोपी रहितए कतए? ओहिना बहुत कमजोर भए गेल छल । ओकर पितिऔत सोचने रहए जे ईसभ

अस्पतालसँ वापस नहि आबि सकत । मुदा जखन देखलकैक जे ओ सामने ठाढ़ अछि आ घरक कुंजी मांगि रहल अछि तँ ओकर माथा खराब भए गेलैक। तकर बाद की भेलैक की नहि? भोरे सौंसे गाममे गर्द पड़ि गेल-गोपी आ ओकर पत्नीकेँ केओ खून कए देलक। ओकरसभक लहास ओसारापर पड़ल छल । एहि घटनाक बाद ओकर पितिऔत निपत्ता भए गेल छल ।"

31

नित्यप्रति रोगीसभक सेवा करैत-करैत महन्थजीक स्वास्थ्य सेहो गड़बड़ा रहल छलनि । हम ई बात शुरुएमे बूझलिऐक आ हुनका चेतेबो केलिअनि । मुदा ओ अपन जीद्दपर अड़ल रहलाह । कहथि-

"जँ हमही पाछू भए जेबैक, तखन एहन समयमे रोगीसभक देख- भाल के करत?"

हम की कहतिअनि । हम तँ दुनू टीका लए लेने रही । तेँ हमरा संक्रमणक बेसी खतरा नहि रहए । मुदा महन्थजी तँ देशी इलाजक प्रवल समर्थक छलाह । ओ कोनो टीकाक विरोध करथि से बात नहि रहैक । मुदा स्वयं नहि लगओलथि। तकर एकटा प्रमुख कारण तरह-तरहक दुःप्रचार छल । कोनो नेता कहैक जे टीकामे तेजाब मिलल छैक । केओ कहैक जे ई लगओलासँ लोक नपुंसक भए जाइत अछि । किछुगोटेक धारणा भए गेल रहैक जे टीका

लेलाक बाद खून जमि जाइत छैक । केओ इहो सुनने रहए जे एहिमे तरह-तरहक जानबरक मांस मिलाओल गेल अछि । जतेक आदमी ततेक तरहक बात होइत रहल । परिणाम भेल जे लोकसभ टीका लए कए संशयमे पड़ि गेल।

एहि तरहें हम दुनूगोटे पाँच दिन रोगीसभक सेवामे लागल रहलहुँ । छठम दिन भोरे जखन हम महन्थजीकेँ कतहु नहि देखलिअनि तँ चिंता भेल । हम हुनकर आवासपर गेलहुँ। बाहर कतहु केओ नहि छल । चारूकातसँ बंद । ताबतेमे एकटा डाक्टर देखाएल । ओ हमरा जनैत छल। कहए लागल-“महन्थजीकेँ बहुत तेज बोखार छनि । कहैत छिअनि जे कोरोनाक जाँच करबा लिअ तँ मानिते नहि छथि । कहैत छथि जे हुनका मामुली बोखार छनि। दू सँ तीन दिनमे अपने ठीक भए जेतनि । मुदा से भेलनि नहि । हुनकर हालत खरापे होइत गेलनि । दिन-राति उकासी करैत-करैत लागनि जेना जान चलि जेतनि । आखिर हुनकर कोरोना जाँच कराओल गेल । रिपोट कोरोनासँ संक्रमित अएलनि । सीटीस्कैनमे लंग्समे निमोनिआ सेहो पकड़ेलनि । डाक्टरसभ तुरंत कालीपुरमक नामी सरकारी अस्पतालमे भर्ती हेबाक जोगार कए देलखिन । मुदा महन्थजी अड़ि गेलाह । हम स्थान छोड़ि कए कतहु नहि जाएब। हारि कए हुनकर इलाज ओहीठामक अस्पतालमे होइत रहलनि । मुदा सातम दिन भेने भोर होइत-होइत हुनका भयंकर हृदयाघात भेलनि । जाबे डाक्टरसभ बूझितथि ताबे ओ ऊपर जा चुकल छलाह ।

32

महन्थजीक आकस्मिक देहावसानसँ स्थानक एक-एक प्राणी दुखी छल । ककरो विश्वास नहि होइक जे एहनो भए सकैत अछि। सदिखन हँसैत-बजैत, लोकसभक सेवामे लीन महापुरुष एकाएक सभदिनक हेतु मौन भए जाएत से केओ सपनोमे नहि सोचने होऐत। मुदा जे सामनेमे छल,से लोक कतेक काल धरि नकारि सकैत छल। मृत्यु एकटा शाश्वत सत्य थिक,से सभ जनैत अछि । स्थानक आध्यात्मिक वातावरणमे तँ नित्य एहि बातक अभ्यास कएल जाइत छल । मुदा लोककेँ जखन यथार्थसँ सामना होइत छैक तँ सभटा बिसरा जाइत छैक । एहि बातक पूरा प्रयास कएल गेल जे स्थानमे भर्ती रोगी लोकनि धरि ई सूचना नहि पहुँचए। मुदा ई तँ ओहिना होइत जेना सूर्यसँ ओकर प्रकाशकेँ नुका देब। थोड़बे कालमे ई समाचार सौंसे पसरि गेल । जे जतहि सुनलक ओतहिसँ महन्थजीक बासा दिस बिदा होइत गेल । रोगीसभ अपन-अपन ओछाओन छोड़ि देलक । बहुत मोसकिलसँ डाक्टर,नर्स आ आन कर्मचारीसभ हुनकासभकेँ बुझा-सुझा कए रोकि सकलाह । ओ सभ रूकि तँ गेल मुदा जे जतहि छल,ओतहि ठोहि पारि कए कानए लागल । एक तँ दुखित, ऊपरसँ एहन आघात । रोगीसभ छटपटा गेल । आब हमरासभकेँ के देखत? के दबाइक ओरिआन करत? ककराबले हमसभ जीवन चलाएब? तरह-तरहक सबाल ओकरासभक मोनमे अबैत-जाइत रहलैक । जे-से । ओ सभ

फिलहाल जतहि छल ओतहिसँ महन्थजीकेँ श्रद्धांजलि देबए लागल। भजन-कीर्तन करए लागल ।

ओमहर महन्थजीक बासा लग तँ लोकक करमान लागि गेल छल । महन्थजी जीबितेमे अपन सभटा बात कहि गेल रहथिन जे हुनका कतए आ कोना संस्कार कएल जेतनि । मुदा हुनकर बाद एहि स्थानक महन्थ के होएताह से केओ नहि जनैत छल । मुदा ई स्थानक प्रमुख आदमीसभकेँ बूझल रहैक जे महन्थजी सभटा महत्वपूर्ण बात अपन डायरीमे लिखैत छथि। डायरी ताकल गेल । ओ हुनकर बैसारबला कोठरीमे सामनेक आलमीरामे राखल छल ।

महन्थजीक एकटा प्रमुख चेला ओहि डायरीमे सँ एकटा पन्ना निकाललाह । ओहिमे महन्थजी लिखने रहथि-

"किछुदिनसँ हमर मोन गड़बड़ लागि रहल अछि । समयक कोन ठेकान? पता नहि कखन की भए जाए? के रहत,के जाएत से आइ-काल्हिक समयमे किछु नहि कहल जा सकैत अछि । तेँ हम चाहैत छी जे हमरा बाद स्थानक कार्यभार एकटा उपयुक्त व्यक्तिकेँ देल जानि । हमरा दृष्टिमे एहि लेल सभसँ सही आदमी हर्षित बाबू हेताह । बेसक ओ स्थानमे हालेमे अएलाह अछि ,मुदा हुनकर निष्ठा आ सेवाक प्रति समर्पणक भावना अद्वितीय अछि । हमर हार्दिक इच्छा अछि जे हमरा बाद ओएह एहि स्थानकक महन्थ बनथि जाहिसँ स्थानमे चलि रहल कल्याण योजनासभ ठीकसँ चलैत रहत। कोरोना कालमे स्थानक सभटा शक्ति दुखित लोकक सेवामे लागि सकए इएह हमर अंतिम इच्छा अछि ।"

महन्थजीक अंतिम इच्छा सुनि ओतए उपस्थित जन-समुदाय एकस्वरसँ चिकरि रहल छल-

“महन्थजीक जय! महन्थजी अमर रहथि!”

हमर नामक घोषणासँ सामान्य स्थानबासीसभ खुस रहए । मुदा ओहिठामक किछु महत्मासभ उदास रहथि । किछुगोटेक तामस तँ साफे झलकि रहल छलैक । ओ सभ आपसमे बतिआइत छल-

“सएह कहू। ई आदमी काल्हि आएल, से भए जाएत महन्थ। हमसभ सालक-साल हुनकर सेवा केलहुँ, स्थानकमे अपन सर्वस्व लगा देलहुँ तकर कोनो मोजर नहि?”

सभसँ बेसी आघात तँ अपनाकेँ महन्थजीक प्रमुख शिष्य बुझनिहारकेँ लगलनि । ओ एहि बातकेँ बरदास नहि कए सकलाह। हुनका बड़ी जोरक हृदयाघात भेलनि आ ठामहि खसलाह । जाबे लोक किछु बुझैत ताबे तँ ओ एहि दुनिआकेँ छोड़ि चुकल छलाह ।

33

महन्थजीक गेलाक बाद हम कैकदिन तँ सन्न रहि गेलहुँ । हम तँ एतए विश्राम हेतु आएल रही,स्वास्थ लाभ करबाक हेतु आएल रही,जे किछु हमरा छल से सभ त्याग करबाक हेतु आएल रही । एहि लेल नहि आएल रही जे हम किछु प्राप्त करी,महन्थ बनि जाएब तँ दूर-दुर धरि नहि सोचाएल रहए । महन्थजीक आश्रय भेटलाक बाद हमर मोनमे एकटा निश्चिंतता आएल रहए । हम ओहिना अनुभव करैत रही जेना कोनो चिड़इ साँझमे अपन खोतामे वापस आबि कए करैत होएत । मुदा एतए अयाचित महंथी भेटि गेल । कैकगोटे ताहि हेतु सालक-साल चेष्टाशील छलाह । मुदा से नहि भेलनि । हम अखनहु ई सभ नहि चाहैत छी । नहि चाही हमरा एहिठामक एश्वर्य । मुदा महन्थजीक अंतिम इच्छाक सम्मान करब जरूरी छल। हुनका प्रति हमर इएह श्रद्धांजलि होएत । से सोचि हम स्थानक कार्यभार ग्रहण कएल ।

साइत हम पहिल गृहस्थ रही जे महन्थ बनल रही । नहि तँ आइ धरि ई स्थान महात्मा लोकनिक हेतु रहैत छलनि । हम तँ महात्मा के कहए एकटा मामुली आदमी छी । तैँ हम ई निर्णय कएल जे हम महन्थक सभटा काज तँ करब मुदा स्वयं महन्थ नहि बनब। ओ स्थान रिक्ते रहत । हम एहि बातक सार्वजनिक घोषणा सामुहिक बैसारमे केलहुँ। एहि बातसँ महात्मा लोकनिकैँ संतोष भेलनि । "चलू आइ ने काल्हि ई गद्दी हमरे लोकनिक होएत।" -से सोचि ओ सभ सहर्ष हमर घोषणाक स्वागते नहि केलाह,अपितु

हमर प्रशंसा सेहो करए लगलाह । सामान्य जनता ई सभ नहि बूझि सकल । ओ तँ एतबे बूझलक जे हम महन्थजीक स्थानपर नव महन्थ भेलहुँ अछि ।

हमर घोषणाक अनुसार महन्थक हेतु आरक्षित कुर्सीपर महन्थजीक एकटा सुंदर मुर्ति राखल गेल। समस्त आगन्तुक लोकनि हुनकर मुर्तिकेँ पुष्पांजलि देलाह । बेरा-बेरी स्थानक महात्मासभ सेहो हुनका फूल,मालासँ लादि देलाह । तकरबाद ई घोषणा कएल गेल जे स्थानक समस्त काज पुरने महन्थजीक नामसँ होइत रहत । हम तँ मात्र सेवादार रहब। हुनकर आकांक्षा,अभिलाषाकेँ आगू बढ़ाएब । बस,एतबे । हमर अपन किछु महत्वाकांषा नहि,कोनो लोभ-लालच नहि ।

न त्वहं कामये राज्यं न मोक्षं न स्वर्गं नापुनर्भवम्

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्

दुखी,आर्त लोकनिक सेवा मात्र हमर उद्येश्य छल,अछि आ रहत । ई तँ संयोग कही ,जे कही,जे महन्थजीकेँ एतेक कम समयमे हमरापर अटूट विश्वास भए गेलनि । से बात ओ कैकबेर बजबो करथि । तखन केओ एकरा एतेक गंभीरतासँ नहि लेलक । मुदा हम बुझिऐक। हमरा लागए जेना भविष्य हमरासँ किछू आओर करबए जा रहल अछि। आखिरमे संत लोकनि आशीर्वचनसँ कार्यक्रमक समाप्ति भेल । एहि तरहें स्थानक भार हमरा ऊपर आबि गेल । हम सभ बात बिसरि ओहि काजमे लागि गेलहुँ ।

महन्थजीक अभिलाषाक अनुसार हम स्थानक आधुनिकीकरण करबाक योजना बनाओल । स्थानक संपदाक उपयोग कए कोरोनासँ पीड़ित परिवारक पनर्वास शुरु कएल गेल । कोरोनाक कारण कतेको बच्चासभक माता-पिताक देहावसान भए गेल छल । ओकरासभक हेतु विशेष ओरिआन कएल कएल गेल। अनाथ भेल एहन करीब एक सए बच्चाकेँ संस्थामे सभ तरहक सुविधा देल गेल । आगू ओकर सभक जीवन सही दिशामे बढ़ैक ताहि हेतु दीर्घकालीन योजना बनेबाक विचार सेहो कएल गेल । सभसँ नीक काज ई भेल जे स्थानीय लोकमे टीकाक प्रतिक दुराग्रहकेँ खतम करैत नित्य हजारों लोककेँ टीका लगाओल गेल । एहि तरहे कोरोनाक घात-प्रतिघात सहि रहल लोकसभक कल्याणक व्यापक प्रयास कएल गेल । तथापि ई प्रयास बहुत सीमित छल कारण कोरोनासँ प्रभावित लोकक संख्या दिन-राति बढ़िते जा रहल छल।

कोरोनाक दोसर प्रहार अएलाक बाद गामक-गाम सुडाह भए रहल छल । ग्रामीण क्षेत्रमे ने तँ जाँचक सुविधा रहैक ,ने इलाजक दरकार । सभ राम भरोसे छल । ककरो बोखार भेल,उकासी भेल तँ बरदास करैत रहल । सामान्य सर्दी,बोखार बुझि कए टारैत रहल। मुदा एहिबेरक कोरोना बेसी उग्र रूप धेने छल । एक सप्ताक भीतरमे लोक बेदम भए जाइत छल । नित्यप्रति बढ़ैत कोरोना रोगीक कारण स्थानक परिसरमे कतहु बैसबाक जोगार नहि छल । एहन हालतमे की कएल जाए?

कोरोनाक दोसर बेरक प्रहारमे मासे दिनमे छटपा-पिटबा भए गेल । गामक-गाम सुडाह भए गेल । मृत लोकनिक गिनती

करब मोसकिल भए गेल। गाममे बूढ़,बच्चा,जबानसभ हहरि गेल। जतहि जाउ,कौवासभ टाहि-टाहि करैत रहैत छल । सहरसभसँ लोक भागि-भागि गाम आएल । मुदा गाम तँ पहिने उजरि गेल छल। लगपासमे स्थाने एकटा आशाक केन्द्र छल। हम संस्थाक समस्त सदस्यलोकनिक संगे दिन-राति एक कए देल । बहुत लोककेँ बँचाओल जा सकल,बहुतकेँ जान चलिओ गेलैक। जेना एकटा प्रलय आएल होइक । सरकारो एकर आकस्मिकताक सही आकलन नहि कए सकल। यत्त-तत्र-सर्वत्र हाहाकार मचि रहल छल ।

जीवन आ मृत्युक एहिन द्वंद साइते केओ देखने होएत। कतेको घर उजड़ि गेल । कतेको बच्चा अनाथ भए गेल। कतेको लोकक आर्थिक स्थिति बहुत खराब भए गेलैक । अस्पतालक बिल भरैत-भरैत कतेकोगोटेक घर-घड़ारीसभ बिका गेलैक। तथापि रोगीकेँ नहि बँचाओल जा सकल । स्थान दुखी,शोक संतप्त लोकसभसँ भरि गेल ।

कोरोनासँ स्वस्थ भए गेल कैकटा बूढ़सभक दिमागी हालत खराब भए गेल छल । एकटा बृद्ध तँ निरंतर बड़बड़ाइत रहैत छल। सदिखन किछु कहबाक प्रयास करैत रहैत छल आ जखन ओकरा लग जाउ तँ ठोह पारि कए कानए लगैत छल । किछुगोटे तँ खेनाइ निठ्ठाहे छोड़ि देने छल । एहन विकट परिस्थिति देखि हम सुन्न भए गेल रही । बुझेबे नहि करए जे की करी? कोना एकरसभक कष्ट कम करी ।

एहिबेर रच्छ ई भेल जे जहिना तेजीसँ कोरोना बढ़ल छल, मास दिनक बाद तहिना कम होबए लागल । लोकसभ स्वस्थ होबए लगलाह । नव संक्रमणक संख्या घटैत गेल । वातावरण हल्लुक होबए लागल । गाम-घरमे बाँचल-खुचल लोकसभ अपन निकट संबंधीक श्राद्ध करबामे लागि गेलाह । असलमे कतेको लहास ओहिना गामक गाछीसभमे थकिआएल सड़ि रहल छल । वातावरण दुर्गंधमय भए गेल छल । स्थानीय लोकसभ जेना-तेना सभक सामुहिक संस्कार केलक। घरे-घर श्राद्ध भए रहल छल । अपन निकट संबंधीक आकस्मिक देहावसानसँ आहत लोकसभ कनैत-कनैत थाकि गेल छल । ओकरसभक नोर सुखा गेल छलैक। जे बाँचल छल तकरासभक लग किछु रहबे नहि करैक। की खाएत,की पहिरत? मानसिक स्थिति से ठीक नहि रहैक । एहन स्थितिमे गाम-गाम आदमी पठा-पठा कए ओकरासभकेँ स्थानमे आनल गेल । एहि बातक प्रयास शुरु कएल गेल जे ओ सभ सभ एक बेर फेरसँ अपन जीवन यापन शुरु कए सकए ।

अनवरत चलि रहल एहि प्रयाससँ सभ केओ थाकि गेल छल। एकमासक अवधिमे साइते केओ निचेन भए सुतल होऐत । दिन भरिक परिश्रम आ रातिक जगरनासँ स्वस्थो लोकसभ बिमार पड़ए लागल । हमर स्वयं की स्थिति छल से कहल नहि जा सकैत अछि । तथापि हम साहसपूर्वक लागल रहलहुँ । कार्यकर्तासभक मनोवल बढ़बैत रहलहुँ । नव-नव लोकसभ एहि काजसँ जुड़ैत रहल । काज आगू बढ़ैत रहल । संस्थाक यश चारूकात पसरैत रहल ।

34

"केओ छी यौ!"

"केओ छी यौ!"

ओ चिकरैत रहलाह। मुदा कतहुसँ कोनो उत्तर नहि भेटि रहल छलनि। कतहु कोनो आबाज नहि । कोनो क्रिया-प्रतिक्रिया नहि ।

चारूकात अन्हार गुज्ज- गुज्ज । बहुत फटकीसँ एकटा इजोत देखा रहल छल । ओ इजोतक बाट धेने-धेने आगू बढ़ैत गेलाह। बीच-बीचमे खाली पड़ल गामसभ देखाइत छलैक । ओ फेरसँ संपूर्ण शक्तिसँ हाक देलनि -"केओ छी यौ!" हुनकर इहो प्रयास खाली गेलनि । कतहुसँ कोनो जबाब नहि भेटलनि।

ओ इजोतक पाछू-पाछू मृत्युलोककेँ टपैत यमलोक पहुँचि गेलाह। आगूक दृश्य तँ आओर भयावह छल । गामक -गाम भम्ह पड़ल छल। चारूकात लगैत छल जेना प्रलयक परात होइक । ओहिठामक दृश्य देखि ओ छगुन्तामे रहथि। मृत्युलोकसँ अचानक लाखक-लाख लोकसभ यमलोक पहुँचि गेल छल। ओकरासभक रहबाक उचित व्यवस्था नहि भए पाबि रहल छलैक । युरोप,अमेरिका,आदि देशसँ पहिनहि बहुत लोक आबि कए सभटा जगह दफानि लेने छलैक । अपना देशक लोक तँ पाछू पहुँचल छल। ताबे यमलोकमे चुट्टी ससरबाक जगह नहि रहैक । यमराजकेँ

खतिआओन देखबाक समय नहि रहनि । लोकसभ प्रतिक्षाभवनमे पड़ल छल। ने भोजन ,ने पानि । आओर सुविधाक तँ बाते छोड़ू । असलमे यमलोकमे कोरोना पीड़ित मृतात्माकेँ भीतर प्रवेश वर्जित कए देल गेल छल । कहीं ई बिमारी एतहु ने पसरि जाए। तखन की होएत? एही डरे यमराजक सहायकसभ परेसान छलाह । मुदा किछु विकल्प नहि फुराइत छलनि ।

एहने समयमे महन्थजीक आत्मा सेहो ओतए पहुँचल रहए। चारूकात ठसमठस देखि ओ वापस मृत्युलोक आएल रहथि । गामक-गाम घुमि गेलथि । सौंसे चिचिआइत फिरथि-"केओ छी यौ! मुदा केओ जबाब देनिहार नहि छल । केओ हुनकर संग देनिहार नहि छल । तखन ओ वापस स्थानपर अएलाह । हमर पलंग लग ठाढ़ भेलाह । हमरा संग कए स्थानक मुख्य भवन धरि गेलाह। ओहिठामक मुख्य कुर्सीपर अपन मुर्तिकेँ राखल देखि ओ बहुत प्रसन्न भेलाह । हमरा आशिर्वाद देलाह –

"अहाँसन व्यक्तिकेँ एहिठाम देखि हम आब एकदम निश्चिन्त छी । हम जा रहल छी, निचेन आ संतुष्ट ।"

एतबहिमे हमर निन्न टुटि गेल । हम सोचैत रहि गेलहुँ । ई की देखलहुँ ? कतहु किछु नहि देखि चिंतामे पड़ि गेलहुँ । एतबेमे जेना केओ आबाज देलक-"ई समय चिंता करबाक नहि छैक । देखबे केलहक जे ऊपरोमे धमगिज्जर मचल छैक।"

हम खिड़कीसँ बाहर देखैत छी । कतहु लगीचेसँ घड़ी-घंटाक आबाज सुनाइत अछि । लोकसभ जगदम्बाक आरती कए रहल छल,हुनका गोहरा रहल छल -

"हे जगदम्बा! कृपा करू! आब भाभट समटू। आब बहुत भेल । जे छी, जेहन छी,धरि हमसभ छी तँ अहींक संतान । जे अपराध भेल से भेल । हमरासभकेँ क्षमा करू । एहि प्रलयकेँ रोकि लिअ। दुनिआकेँ बँचा लिअ हे माते!"

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।